देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
July 2023
Vol.-18, Issue-1(1)

Impact Factor
7.523

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Azadi Ka Amrit Mahotsav

साहित्य और साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में
आज़ादी का अमृत महोत्सव
(संगोष्ठी विशेषांक)

सम्पादक मण्डल :
डॉ. अशोक एमवी,
प्रो. स्नेहल शौकत,
प्रो. नाजिया अंजुम

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18 **ISSUE-1(1)** **(जुलाई 2023)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

जुलाई 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	स्नेहल शौकत	10–10
2.	तारसप्तक के कवियों की भाषा	बृजेश सिंह	11–15
3.	कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम	आपी लंकाम	16–19
4.	यशपाल की रचनाओं में राष्ट्रवाद और देशप्रेम की अभिव्यक्ति –'दादा कामरेड' और 'देशद्रोही' उपन्यासों के आधार पर	डॉ. जुबैदा अनवर	20–26
5.	मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में राष्ट्र प्रेम	रूचि कुमारी	27–31
6.	नीति साहित्य में राष्ट्र प्रेम	साहिल महाजन	32–36
7.	भारतीय भाषाएँ और अनुवाद	पूनम	37–42
8.	राष्ट्रकवि भारती और पत्रकारिता	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	43–46
9.	Role of Dalit Literature in understanding Double Discripination with Context to the Freedom Movement	Syed Mashud Hashmi, Martin Luther	47-52
10.	A literary analysis of Quit India by Ismat Chugtai	Nayaab Khan	53-56
11.	تحریک آزادی میں اردو شاعری و شعرا کا کردار	نازیہ انجم	57-60
12.	SLOGANS RAISED DURING THE INDIAN INDEPENDENCE MOVEMENT	Farhana Banu	61-63
13.	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में भारत-बोध	विशाल कुमार	64–70
14.	आधुनिक काव्य में राष्ट्र-प्रेम	पिंकी	71–76
15.	हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता	डॉ. चौत्रा एस.	77–79
16.	कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम	डॉ. सुनीता राठौर	80–85
17.	साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास साहित्य में राष्ट्रीय प्रेम विशेषतः 'आजादी के अमृत महोत्सव' के आलोक में	निर्मला पुरसवानी, प्रो. (डॉ.) आदित्य गुप्त	86–91
18.	ग्रामीण क्षेत्रों में नकद रहित लेन-देन के चलन का अध्ययन	सुनील कुमार	92–98
19.	प्रवासी साहित्य में राष्ट्रीय चिंतन	वि अमुधा	99–102
20.	नई शिक्षा नीति एवं शिक्षक शिक्षा	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	103–104

21.	गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में राष्ट्र प्रेम	डॉ. क्षितिजा	105–109
22.	भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्र प्रेम के विविध स्वर	कमलेश चौधरी	110–118
23.	हिंदी साहित्य में राष्ट्र प्रेम	डॉ. राजेश गुप्ता	119–120
24.	स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी उपन्यासकार कुशवाह कांत का योगदान	डॉ. तस्लीमा	121–122
25.	उषाकिरण खान के उपन्यासों में चित्रित समाज में परिवर्तन	अलिशा बेगम एन	123–127
26.	संस्कृत में काव्य शरीर और आत्मा – एक विवेचन	डॉ. प्रियंका खण्डेलवाल	128–130
27.	**Patriotism in English Literature**	**Dr. Vinita Pal**	**131-132**
28.	हरिशंकर परसाई के निबंधों का स्वरूप	विजय लक्ष्मी	133–138
29.	**The Revival of National Consciousness in Yukio Mishima's " Patriotism"**	**Dr. Gabriela Sabatini. F**	**139-142**
30.	भारत की आज़ादी में हिंदी साहित्य का योगदान	स्मिता शंकर	143–149
31.	आजादी का महोत्सव : मुंशी प्रेमचंद के संदर्भ में	SNEHAL SHOWKET	150-153

Principal's Message.....

On behalf of HKBK Degree College, I warmly thank all the delegates and participants who participated and presented papers for the National Conference on the Topic **"THE ROLE OF LITERATURE IN THE CONTEXT TO THE FREEDOM MOVEMENT"** has borne the mantle of excellence, committed to ensuring the faculty members their own space to learn, grow and broaden their horizon of knowledge by indulging into diverse spheres of learning.

The Conference aims to bring different ideologies under one roof and provide opportunities to exchange ideas face-to-face, establish research relations, and find global partners for future collaboration. The themes and sub-themes for this conference are indicative of relevant research areas to give the prospective authors innovative prepositions about the ambit of discussion.

The objective behind organizing this event is to excel in the research work and imply the importance of national consciousness among faculty members and gauge their knowledge and awareness of the Context of the freedom movement.We wish to thank our eminent keynote speakers: Dr. Mohammed Iqbal Javed, Dept of Urdu, Dr. Vijay Mahadev Gaiudwa, Dept of English, Dr. BR Badri, Dept of Hindi, and Naresh Sihag, Advocate.

I would like to thank Gugan Ram Educational and social welfare society for providing us with the platform for online publication, the International peer reviewed and referred Multi-Disciplinary and multiple languages research journal ISSN: 2395-7115.

Wishing you all the Best…!!!!

Dr. ASHOK MV

PRINCIPAL

सम्पादक की कलम से.....

आजादी का अमृत महोत्सव देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में पूरे भारत वर्ष में मनाया जा रहा है। 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पहले अर्थात 12 मार्च 2021 से इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई जो कि 15 अगस्त 2023 तक जारी रहेगी। इस महोत्सव के दौरान देशभर में देश के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान उनके बलिदान व देश के गौरवपूर्ण इतिहास एवं संस्कृति के विषय में देशवासियों को जागृत करना है। इस औचित्य को साधते हुए एच. के. बी. के. डिग्री कॉलेज, बेंगलुरु एवं गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसायटी के संयुक्त तत्वधान से 'साहित्य और साहित्यकारों के विशेष संदर्भ में आजादी का अमृत महोत्सव' नामक संगोष्ठी का 26 मई 2023 को आयोजन किया गया। इस बहुभाषी संगोष्ठी का उद्देश्य आजादी के दौर से जुड़े तमाम साहित्यकारों को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करना था।

हम स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय भाषाओं की भूमिका उत्कृष्ट रही है। जनमानस को जागृत करने के लिए आंदोलन में शामिल साहित्यकार, राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता आदि ने भाषाओं को ही माध्यम बनाया था। जैसे कि भारतवर्ष बहुभाषी देश है, और हर राज्य की अपनी भाषा है, और उस भाषा का अपना साहित्यिक योगदान है। और इसी भाषिक साहित्यिक योगदान को, उन साहित्यकारों को इस संगोष्ठी के माध्यम से अभिज्ञान करना है।

मैं देश के विभिन्न प्रांतों के विद्वान् लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं, जिनकी विचारधारा से विशेषांक को एक स्वरूप आकृति प्राप्त हुई। मैं आशा एवं उम्मीद करती हूं कि, यह विशेषांक शोध (शोधार्थियों) के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अंक सिद्ध हो।

–स्नेहल शौकत

विशेषांक सम्पादक

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 11-15

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

तारसप्तक के कवियों की भाषा

बृजेश सिंह

शोध छात्र–हिंदी विभाग, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

कविता में वस्तु और रूप या कथ्य और शिल्प का परस्पर द्वंद्वात्मक सम्बन्ध होता है। बहुधा दोनों एक–दूसरे पर प्रभावी रहते हैं। इस आधार पर वस्तु और रूप को अलग कर देखना उचित नहीं है। किसी भी कविता में शिल्प की नवीनता मायने नहीं रखती यदि कविता में आ रहे जीवनानुभावों में नवीनता न हो। किसी भी कविता को उसके द्वारा प्रक्षेपित नूतन अनुभव पुराने शिल्प में संभव नहीं रह जाता। तार सप्तक के कवियों के रूप का नयापन इसलिए संभव है कि उन्होंने अपने जीवनानुभव को नया आयाम दिया था। प्रस्तुत अध्याय में वस्तु और रूप को अलग–अलग विवेचित करने का प्रयास मात्र सुविधा की दृष्टि से किया गया है। यहाँ भाषा छंद, बिम्ब, प्रतीक एवं लय, अलंकार तथा अन्य काव्य रूपों सम्बन्धी दृष्टियों की चर्चा की जा रही है।

भाषा कवि के अनुभव और ज्ञान के स्रोत के साथ ही अभिव्यक्ति का अवलंब भी है। वह कवि के अनुभव से उसके लेन–देन को प्रकट करती है। किसी भी कवि की काव्य दृष्टि की परीक्षा के लिए भाषा की पड़ताल आवश्यक है। तारसप्तक के कवि भाषा के संकट से ग्रस्त है। उन्हें निरंतर बोध रहा कि पूर्ववर्ती भाषा निष्प्राण और गतिहीन दिख रही थी। तारसप्तक के कवि भाषा के संकट से ग्रस्त हैं। उन्हें निरंतर बोध रहा कि पूर्ववर्ती भाषा उनके कथ्य के लिए कतरन की तरह है। बदली हुई परिस्थितियों में छायावादोत्तर भाषा निष्प्राण और गतिहीन दिख रही थी। तारसप्तक में संग्रहित मुक्ति बोध की कविताओं की भाषा उनके पूर्ववर्ती कवियों की भाषा से बिल्कुल अलग है। यह जरूरी है कि वह बहुत सुघड़ और साँचे में ढली हुई नहीं है। मलयज ने कहा कि– ''मुक्ति बोध की भाषा उत्ताल तरंगो पर हिचकोले खाते हुए एक विशाल जहाज का परिचय देती है, जो स्नायविक ऊर्जा उस जहाज को पता चल जा रही होती है उसे इस बात का खतरा लगा रहता है कि किसी भी वक्त उस जहाज को भयानक चट्टान ले जाकर भिड़ा देगी। मुक्ति बोध की शक्ति इस बात में है कि वे भाषा के उठान और गिरान के अन्तिम बिन्दु तक भाषा का अपनी–अपनी अटूट संवेदना के साथ देते हैं। ..... वाह्य जगत के समस्त कार्य व्यापारों को भाषा एक ऐसे विशद् बिंबलोक में परिवर्तित कर देती है जिसकी प्रत्येक वस्तु रचनाकार की मानसिक उर्जा में खिंची गति का चित्र लिखित रूप प्रस्तुत करती है।''[1] मुक्ति बोध भाषा के प्रति अपनी चौतन्यता और तनाव को इन पंक्तियों में व्यक्त करते है :–

'अँधियाली गलियों में घूमता है
तड़के ही रोज
कोई मौत का पठान

माँगता है जिन्दगी जीने का ब्याज
अनजाना कर्ज
माँगता है चुकाने में प्राणों का माँस।'[2]

नेमिचन्द्र की भाषा तारसप्तक की कविताओं में बोलचाल की ही भाषा है या हम कह सकते है कि नेमिचन्द्र अपनी कविता की वस्तु के अनुसार भाषा में बदलाव करते हैं लेकिन कभी–कभी उनके शब्दों का प्रयोग छायावादी पदावली का बोध कराता है। ऐसा उनकी रोमांटिक बोध वाली कविताओं में अधिक दृष्टिगत होता है।

'कुछ अनमनी उदासी से तुम !
सहज भाव से
अपने विकल लोचनों के ऊपर से
वे लोचन जिनमें प्रतिपल में
छलक–छलक आती है बरबस
छनी हुई करुणार्द मधुरिमा
जिनसे होकर सुमुखी
तुम्हारे स्नेह का सब गीलापन
बिखर बिखर आता है।'[3]

भारतभूषण अग्रवाल यह मानते हैं कि उनके पूर्ववर्ती छायावादी कवि एक नई भाषा का निर्माण कर रहे थे। उन कवियों के सामने संस्कृत का अपार शब्द भंडार था और लोकभाषा का प्रयोग उनकी बाध्यता नहीं है, पर अपने युग की भाषा के बारे में वे मानते हैं कि 'कितनी संकुचित जीर्ण वृद्धा हो गई आजकल की भाषा' इस जीर्णता को त्यागकर भी वे संस्कृत के शब्द भंडार की तरफ न जाकर मिट्टी के पुतलों की जुबान में अपना व्यक्तित्व ढूंढते हैं :–

'यह सदा स्वर्गवासिनी रही
अप्सरा बनी
जाने दो इसको स्वर्ग,
खोजले आज नहीं
अपनी मिट्टी के पुतलों के शब्दों में ही
अपनी कवित्व
हमको न जरूरत आज देववाणी की
हम खुद ढालेगे जीवन की मिट्टी में भाषा
जी चाहा रूप बना लेंगे।''[4]

'अपने कवि 'कविता से' भाषा का आदर्शजन भाषा मानते हुए भी भारत भूषण अग्रवाल उसका समुचित निर्वाह नहीं कर पाते। 'पद्यहीन' कविता में इस बात को देखा जा सकता है।

''पर महाजन मार्ग गमनोचित न सम्बल है
न रथ है

अन्तर्रात्मा अनिश्चय संशय ग्रसित
क्रांति–गति अनुसरण योग्य है न पद सामर्थ्य।''[5]

भारतभूषण अग्रवाल की तरह प्रभाकर माचवे भी भाषा को भावानुकूल रखने की वकालत करते हैं। वे शब्दों की अभिभावना लक्षणा की अपेक्षा व्यंजना शक्ति को वरीयता देते हैं। उनकी भाषा का आदर्श छायावादी निराला और छायावादोत्तर नरेन्द्र और नवीन की भाषा है। तारसप्तक की कविताओं में आई उनकी भाषा युगीन विसंगतियों को उजागर कर सकी है। उन्होंने कहीं संस्कृत की तत्सम पदावली का प्रयोग किया है, कहीं उर्दू मराठी कहीं बोलचाल की भाषा के शब्दों में कविता के भीतर प्रयुक्त शब्दों के अन्तर्मय को बनाए रखने के लिए बहुत सारे शब्दों का संक्षिप्त रूप रखते हैं।

तारसप्तक के कवियों में शब्द चयन की दृष्टि से गिरिजा कुमार माथुर की सजगता भिन्न है। वस्तु के अनुरूप इनका शब्द संयोजन बदलता रहता है। यही नहीं वातावरण निर्माण में भी इनका शब्द चयन भिन्न होता है। 'पतला नभ' 'सिमटी किरण', 'आदिम छाहें', 'घूमते स्वर' इसी तरह के प्रयोग है। गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं की भाषा के बारे में भारत भूषण को ही छिपाने का प्रयत्न होती है। तारसप्तक की कविताओं में रामविलास विलास शर्मा की भाषा अपने कथ्य के अनुरूप जनोन्मुख सामान्य बोलचाल की भाषा है। जिस पृष्ठभूमि की उनकी कविताएँ है, उस पृष्ठभूमि को चित्रित करने के लिए वहाँ के शब्दों को रंग की तरह वे कविता में इस्लेमाल करते हैं। 'सिलहार', कटाई, राशि, बिगटी–बरहे, सीला, चमार, बीनना जैसी पदावली उनकी कविता को नया मुहावरा प्रदान करती हैं :–

'पूरी हुई कटाई, अब खलिहान में,
पीपल के नीचे है राशि सूची है
दोनों भरी पकी वाले बड़े
फूलों पर फूलों के लगे आरम्भ।'[6] 'सिलहार कविता से'

रामविलास शर्मा की कविताएँ अपनी काव्य भाषा लेकर आती है। कह सकते है कि रामविलास शर्मा जी के यहाँ गड़ी हुई भाषा के स्थान पर स्वअर्जित भाषा का प्रयोग है। काव्य भाषा के प्रश्न पर अज्ञेय कई महत्वपूर्ण प्रश्नों से जुड़ते हैं। वे मानते हैं– ''शब्दों के ज्ञान और शब्दों की अर्थवत्ता की सही पकड़ ही कृतिकार को कृतिकार बनाती है।" भाषा और शब्द के प्रति लगाव को हम रुपवादी नहीं कह सकते। अज्ञेय शब्द और भाषा पर नहीं बल्कि अर्थवान शब्द पर बल देते है– "शब्द की अर्थवत्ता की स्वोज में शब्द की ऐतिहासिक और अर्थ की सामाजिक परत दोनों निहित है।" अज्ञेय की तारसप्तक की कविताओं में भाषा बहुस्तरीय है। उनकी काव्य भाषा में तद्भव–तत्सम शब्द एक ही पंगत में उठते–बैठते हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक में पदावली, अपलक, अनथक गति, बद नियति जो पार किए जा रही नील–मरू प्रांगण–नभ का तो दूसरी तरफ रिरियाता कुत्ता, गोयठों के गंगामय अंबार तथा सिरहते से पंगु से टुंडे आदि सब हैं।

अज्ञेय और मुक्ति बोध तारसप्तक के कवियों में दो छोर पर हैं। भाव बोध और संवेदना का धरातल भी दोनों का अलग–अलग है। इन दोनों की भाषा की तुलना करते हुए मलयज लिखते हैं– ''मुक्तिबोध अपने वैयक्तिक अहम को लेकर बाह्य जगत में कूद पड़ते हैं और उस जगह को ही एक अद्भुत विश्व लोक में रूपांतरित कर देते हैं। इसके विपरीत अज्ञेय पहले अपने अनुभूत यंत्र से उस वाह्य जगत को अपने मन में, लोक

में अवतरित करते हैं फिर अपने चयनधर्मी काव्य दृष्टि से उसमें एक ऐसे वस्तु रूप का अन्वेषण करते हैं जो विशिष्ट संदर्भ जनित अनुभूत की तात्कालिक और तीव्र राग बोध को वहन करते हुए भी व्यापक भाव बोध के भीतर प्रत्येक स्तर पर अतिक्रमण हो जाता है। इसलिए अज्ञेय का भाषा प्रयोग उनके भावलोक की अंतरंग हलचल रचना क्रिया की अकुलाहट का पता नहीं चलने देता, एक मर्यादित एवं संश्लिष्ट अनुभव बंध का परिचय अवश्य देता है।''[7] अज्ञेय और मुक्तिबोध की काव्य भाषा का यह यह फाँक वस्तुतः दो भावाभिव्यक्ति की भंगिमा की फांक है, दो भाव बोध के प्रकटी करण का अंतर है। अज्ञेय की भाषा में जहाँ एक तरफ की तटस्थता मिलती है वहाँ मुक्तिबोध की भाषा में एक तरह से काव्य प्रभाव में कूद पड़ने और आर–पार जाने की अकुलाहट मिलती है।

हिंदी आलोचना में रामचन्द्र शुक्ल सम्भवतः ऐसे सर्व प्रथम आलोचक्र हैं जो कविता में बिंब प्रयोग की चर्चा करते है। किन्तु उन्होंने बिम्ब को जिस अर्थ में ग्रहण किया है, उस अर्थ में आज के कवि ग्रहण नहीं करते। आचार्य शुक्ल का मानना है कि "काव्य में अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, विम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है। यह विम्ब ग्रहण निर्दिष्ट गोचर और मूर्त विषय ही हो सकता है।''[8] आचार्य शुक्ल मानते है कि" विम्ब ग्रहण वहीं होता है जहाँ कवि है अपने सूक्ष्म निरीक्षण का परस्पर संश्त्रिष्ट विवरण देता है।"[9] तार सप्तक में सर्व प्रथम माच वे ने आधुनिक अर्थों में विम्ब की चर्चा की है। माचवे लिखते हैं कि "हमारी कविता में पाए जाने वाले अधिकांश कल्पना चित्र या विम्ब (इमेज) बच्चों से निरे शाब्दिक सहस्मृत या परम्परागत होते है। इन शाब्दिक साहचर्यात्मक और पारस्परिक विम्बों की बजाय हमें राग और ज्ञान से पूरित ऐन्द्रिया आवेगाश्रित और अभिजात विम्बों की सृष्टि करना है।"[10] माचवे अपने उपर्युक्त कथन में विम्ब के महत्व को रेखांकित करते है लेकिन विम्ब पर व्यवस्थित बातचीत केदारनाथ सिंह के तीसरे सप्तक के वक्तव्य से शुरू हुई।

केदारनाथ सिंह मानते हैं कि "विम्बविधान का सम्बन्ध जितना विषय वस्तु से होता है, उतना ही उसके रूप में भी। विषय को वह मूर्त और ग्राह्य बनाता है। रूप को संक्षिप्त और दीप्त बनाता है। एक आधुनिक कवि की श्रेष्ठता की परीक्षा उसके द्वारा अविष्कृत विम्बों के आधार पर ही की जा सकती है''[11] तारसप्तक की पूर्ववर्ती कविता में सौंदर्य भावना अमूर्त थी। उसके बाद राजनीति और साहित्य की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी भी हुई कि सारे बौद्धिक और सौन्दर्यात्मक मूल्य संदिग्ध हो उठे। यदि कुछ निश्चित था तो कवि का सौंदर्य बोध। यही कारण है कि तारसप्तक के सभी कवि विम्ब रचना में सफल हुए हैं।

उपर्युक्त विवेचन के बाद हम कह सकते हैं कि तारसप्तक के कवियों की काव्य भाषा सामान्य जनजीवन और बोलचाल की भाषा रही है। छायावादी काव्य भाषा से मुक्ति के लिए तारसप्तक के कवि संकल्पित दिखते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि उनकी कविताओं पर पूर्ववर्ती कवियों की भाषा का कोई प्रभाव नहीं है। अज्ञेय और नेमिचंद जैन पर आंशिक रूप से छाया वादी पदावली की छाया देखी जा सकती है। मुक्तिबोध की काव्य भाषा में एक कोमलता अथवा खुरदरी मुलायमियत निश्चित दिखती है। बावजूद इसके उनकी भाषा इकहरी और सपाट नहीं है। उसमें कई अर्न्तध्वनियाँ लिपटी रहती हैं। भारत भूषण अग्रवाल की भाषा सपाट और एक सीमा तक कृत्रिमता लिए हुए हैं। गिरिजाकुमार माथुर शब्द सजग कवि हैं। भाषा को लेकर उनमें एक सतर्क छटपटाहट है। यह सतर्क छटपटाहट कि कभी–कभी उनकी अभिव्यक्ति में आड़े आता है। माचवे की भाषा प्रयोग धर्मी है वह अपनी मराठी पृष्ठ भूमि को मुक्तिबोध की तरह संकुचित होकर नहीं बल्कि खुलकर इस्तेमाल करते हैं।

रामविलास शर्मा तार सप्तक के कवियों में ऐसे एकलौती कवि हैं जो काव्य भाषा को लोकोन्मुख बनाते हैं। यही नहीं वे कहीं ना कहीं केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं से कुछ ना कुछ दीक्षा ग्रहण करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ–

1. नेमिचंद जैन, वक्तव्य, तारसप्तक।
2. मलयज, कविता से साक्षात्कार सम्भावना प्रकाशन, हापुड़, पृष्ठ 150
3. मुक्तिबोध एक आत्मवक्तव्य, तारसप्तक।
4. नेमीचंद जैन अनजाने चुपचाप, तारसप्तक।
5. भारतभूषण अग्रवाल' अपने कवि से' तारसप्तक।
6. मलयज, कविता से साक्षात्कार सम्भावना प्रकाशन, हापुड़, पृष्ठ 150
7. वहीं।
8. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कविता क्या है, निबन्ध, चिंतामणि भाग–1, पृष्ठ–145
9. वही, पृष्ठ–148
10. प्रभाकर माचवे, वक्तव्य, तारसप्तक
11. केदारनाथ सिंह, तीसरा सप्तक वक्तव्य, संस्करण–84, पृष्ठ–128

पता :– **बृजेश सिंह**

ग्राम–गुलरिहापार, पोस्ट–सोथरापुर

जिला–फतेहपुर, पिन– 212656

मो0– 9026396877

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 16-19

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम

आपी लंकाम

सहायक प्रोफेसर, इंदिरा गाँधी शासकीय महाविद्यालय, तेजू, लोहित, अरुणाचल प्रदेश, पिन कोड–792001

शोध सार :–

कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम की भावना ने भारत को एक सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाने का काम किया है। इन कविताओं ने भारतवासियों को जागृत किया और स्वतंत्र दिलाने में सफलता प्रदान किया। भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ० नगेंद्र ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' नामक ग्रंथ में हिन्दी के कई सारे कवि और उनके कविता साहित्य का परिचय दिया है। इस आधार पर हमें प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के कवि और उनके कविताओं का परिचय प्राप्त हो जाता है। प्रामाणिक रूप से कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम का प्रारम्भ आधुनिक काल यानि भारतेन्दु युग से माना जाता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने' कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन किया था। यह कविता केन्द्रित पत्र था। 'कवि वचन सुधा' ने हिंदी कविता साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता को नया आयाम प्रदान किया। तत्पश्चात के कविताओं में मानो राष्ट्र प्रेम की लहर दौड़ गयी हो। द्विवेदी युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशारण गुप्त, छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ और छायावादोत्तर राष्ट्र कवियों ने कविता साहित्य के माध्यम से अपने देश के प्रति प्रेम भावना को दर्शाया है। अपने देश का गुणगान कर, अपना भारत माता की प्रशस्ति करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। इस प्रकार यह परंपरा आगे की ओर प्रसरित हुई लेकिन वर्तमान काल में सामाजिक शोषण, भेदभाव, सत्ता का स्वार्थ आदि ने इस राष्ट्र प्रेम को खंडित कर दिया। कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति से ही इस दूषित पर्यावरण में परिवर्तन लाया जा सकता है।

बीज शब्द :– राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति, आशा, श्रद्धा, विश्वास।

मूल आलेख :–

भारत एक महान देश हैं। इस देश में बहुतों महान् कवियों और प्रसिद्ध साहित्यकारों ने जन्म लिया। इनके रगों में भारत की महानता का खून दौड़ता है, इसलिए इनकी कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम कूट–कूट कर भरा हुआ है। "कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम" के तहत पहुँचने से पूर्व आवश्यकता है कि कविता और राष्ट्र प्रेम का अर्थ समझना।

सरल शब्दों में कविता कवि की हृदय की भावना और अनुभूति की अभिव्यक्ति है, जो किसी दूसरे व्यक्ति के मन को छू लेते है और उसे झकझोड़ देते हैं। भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है। इसका प्रारम्भ भरतमुनि से समझा जा सकता है।

राष्ट्र प्रेम को सरल शब्दों में हम इस तरह परिभाषित कर सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति या जनता अपने देश के प्रति प्रेम, सम्मान, वफादारी, अगाध श्रद्धा की भावना रखता है और निःस्वार्थ अपने देश का सेवा करने की भावना रखता हो उस प्रेम को राष्ट्र प्रेम कहते हैं।

भारत में ऐसे अनेक महान कवि उत्पन्न हुए हैं, जिनके काव्य में राष्ट्र प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति है। कविता की माध्यम से वे लोगों के हृदय में राष्ट्र प्रेम का बोध करा रहे हैं। इस प्रकार प्रामाणिक रूप से कविता में राष्ट्र प्रेम ने आधुनिक काल से लेकर आज तक लोगों के मन में राष्ट्रीय जागरूकता का और चेतना का प्रकाश फैला रहे है। सुप्रसिद्ध इतिहासकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ० नगेंद्र के साथ और भी कई अन्य प्रमुख इतिहासकार हैं जिन लोगों ने अपने इतिहास ग्रंथ में कवि और कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम का जिक्र किया है। इन ग्रन्थों में आदिकाल और मध्यकाल के कवि और उनके कविताओं का भी उल्लेख किया गया है। आदिकाल में राष्ट्रीयता का अभाव माना जाता है क्योंकि आदिकाल के समय में रहने वाले लोग समस्त भारत को अपना राष्ट्रीय समझने के स्थान पर अपने राज्य के क्षेत्र में बसे हुए बीस–पच्चीस गाँवों को ही अपना समस्त राष्ट्रीय समझते थे। आदिकालीन कवि चंदबरदाई ने अपने कृति 'पृथवुराज रासो' में अपने राज्य का प्रशस्ति करना नहीं छोड़ा। संकुचित राष्ट्रीयता कहलाने पर भी अपने राज्य (बीस–पच्चीस गाँवों) के प्रति प्रेम की झलक चंदबरदाई के कृति में समाहित है। मध्यकाल में कबीरदास, सूरदास, तुलसीदस और जायसी जैसे कवियों ने अपने कविताओं के माध्यम से लोगों को एक सूत्र में बांधने का काम किया अर्थात यह एक प्रकार से कविता में राष्ट्र प्रेम का संकेत है। इन संकेतों के आधार पर प्रमुख रूप से भक्तिकालीन कविताओं में राष्ट्र प्रेम का झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है अर्थात कविताओं में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति का प्रारम्भ एक तरफ से कहें तो भक्तिकाल का ही देन मान सकते हैं।

आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपनी पत्रिका 'कविवचन सुधा' का सम्पादन किया और इसके माध्यम से कविता में राष्ट्र प्रेम का लहर उत्पन्न कराया। कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम ने भारतवासियों को जागरूक किया और चेतना प्रदान किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है :–

अंग्रेज़ राजसुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चली जात यहै अति ख्बारी।।

उन्होंने अतीत का गौरवगान करके उसके उन्नयन की चेष्टा की और देश की मार्मिक सिंकहावलोकन का भी चित्रण किया है :–

भीतर सभ रस चूसे, बाहर से तन मन धन मूसे।
जाहिर बातन में अति तेज। क्यों सखि! साजन, नहिं अंग्रेज़।

द्विवेदी युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित 'सरस्वती पत्रिका' हिन्दी नव जागरण और राष्ट्र प्रेम की प्रमुख पत्र थी। इस प्रकार द्विवेदी युग के कविता साहित्य में भी राष्ट्र प्रेम की धारा बह रही थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी के काव्य में राष्ट्र प्रेम की पंक्तियों का रूप देख सकते हैं :–

प्यारे वतन हमारे प्यारे,
आजा, आजा पास हमारे।
या तू अपने पास बुलाकर,

रख छाती से हमें लगाकर।

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में राष्ट्र प्रेम कूट–कूट कर भरा हुआ है। उन्होने अपने प्रसिद्ध काव्यकृति "भारत–भारती" में अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन किया है। 'भारत –भारती' में राष्ट्र प्रेम की महत्ता ने उन्हें राष्ट्र कवि बना दिया। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्र कवि का नाम महात्मा गांधी ने दिया। इस प्रकार उनके काव्य में देशभक्ति, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय एकता, स्वदेश प्रेम की अधिकता ने लोगों को प्रोत्साहित किया। अतः लोग उनके कविता से प्रभावित हुए। मैथिलीशरण गुप्त के राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति निम्नलिखित है :–

मस्तक ऊँचा हुआ महि का,
धन्य हिमालय का उत्कर्ष।
हरि का क्रीड़ा–क्षेत्र हमारा,
भूमि–भाग्य–सा भारतवर्ष।।

छायावादी कविताओं में राष्ट्र प्रेम का दर्शन जयशंकर प्रसाद की इन पंक्तियों की माध्यम से दर्शाया जा सकता है :–

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अंजान क्षितिक्ष को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुमकुम सारा।।

छायावादोत्तर राष्ट्रीय कवियों ने कविता साहित्य के माध्यम से अपने देश के प्रति प्रेम भावना को दर्शाया है। अपना देश का गुणगान कर, अपना भारत माता की प्रशस्ति करने में कोई कसर नहीं छोड़ा है। समकालीन महाकवि धूमिल ने "मेरे लिए" नामक कविता में देश प्रेम की भावना प्रकट किया है। उनकी कविता की एक झलक इस प्रकार है :–

दिन भर के बाद, भोजन कर लेने पर।
देश–प्रेम से मस्त एक गीत, गुंगुनाता हूँ।।

जिसे अमीर खुसरों ने लिखा है :

अन्य लोगों की तरह,
मैं इतना कृतघ्न नहीं कि उस जमीन को धिक्कार दूँ।

जिस पर मेरा जन्म खड़ा है, मेरे लिए मेरा देश :–

जितना बड़ा है : उतना बड़ा है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि भारतीय कवियों के भीतर अपने देश के प्रति लगाव है, प्रेम है, अगाध श्रद्धा है, देशभक्ति की भावना है, विश्वास है, आशा है, निःस्वार्थ अपने देश के प्रति अपनी जीवन समर्पित कर देने की भावना समाया हुआ है। इस प्रकार कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति ने लोगों के मन में राष्ट्रीय एकता उत्पन्न कराया और जागरूकता दिलाने में सम्पन्न हुए। यह परंपरा आगे की ओर प्रसारित

हुई। कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम समाहित होने के कारण ही आज हम स्वतन्त्र है और वर्तमान में आजादी का अमृत महोत्सव का आनंद ले रहे हैं। लेकिन वर्तमान काल में एक प्रकार का नकारात्मक रूप भी सामने आ जाते हैं। वह नकारात्मक रूप इस प्रकार है, कि इसमें सामाजिक शोषण, भेदभाव, सत्ता का स्वार्थ आदि ने कई वर्षों से चले आ रहे राष्ट्र प्रेम की भावना को खंडित कर दिया है। इसलिए आवश्यकता है कि इस दूषित पर्यावरण को स्वच्छ करने का। कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति के माध्यम से ही इस दूषित पर्यावरण में परिवर्तन लाया जा सकता है और नये रूप से पर्यावरण का निर्माण किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, आईएसबीएन : 978–81–7124–956–5
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ० नगेंद्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, आईएसबीएन : 978–81–7124–956–5
3. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ० शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ० सुधाकर हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा।
5. प्राचीन काव्य माला, पूर्वायण प्रकाशन, गुवाहाटी, असम, आईएसबीएन : 978–93–90919–34–5
6. प्राचीन काव्य संग्रह, असम एंटरप्राइज़, तिनसुकिया।
7. आधुनिक काव्यमाला, पूर्वायण प्रकाशन, गुवाहाटी, असम, आईएसबीएन : 978–93–92699–58–0
8. भारत–भारती, हरीश प्रकाशन मंदिर, जयपुर हाउस, आगरा, आईएसबीएन : 9–788195–626045

Email : apilangkam1986@gmail.com

मोबाइल नंबर : 9862857587

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 20-26

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

यशपाल की रचनाओं में राष्ट्रवाद और देशप्रेम की अभिव्यक्ति –'दादा कामरेड' और 'देशद्रोही' उपन्यासों के आधार पर

डॉ. जुबैदा अनवर
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मोंटफोर्ट महाविद्यालय, बेंगलोर।

संक्षिप्त परिचय :–

यशपाल (३ दिसम्बर १९०३–२६ दिसम्बर १९७६) हिन्दी साहित्य के प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार हैं। वे विद्यार्थी जीवन से ही क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े थे। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् १९७० में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।उनका का जन्म 3 दिसम्बर 1903 को पंजाब में, फ़ीरोज़पुर छावनी में एक साधारण खत्री परिवार में हुआ था। उनकी माँ श्रीमती प्रेमदेवी वहाँ अनाथालय के एक स्कूल में अध्यापिका थीं। यशपाल के पिता हीरालाल एक साधारण कारोबारी व्यक्ति थे। यशपाल के विकास में ग़रीबी के प्रति तीखी घृणा आर्य समाज और स्वाधीनता आंदोलन के प्रति उपजे आकर्षण के मूल में उनकी माँ और इस परिवेश की एक निर्णायक भूमिका रही है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं; उपन्यास : दिव्या, देशद्रोही, झूठा सच, दादा कामरेड, अमिता, मनुष्य के रूप, मेरी तेरी उसकी बात : कहानी संग्रह : पिंजड़े की उड़ान, फूलो का कुर्ता, भस्मावृत चिंगारी, धर्मयुद्ध, सच बोलने की भूल, उत्तनी की मां, चित्र का शीर्षक, तुमने क्यों कहा था मै सुंदर हूं, ज्ञान दान, वो दुनिया; व्यंग्य संग्रह : चक्कर क्लब, कुत्ते की पूंछ।

यशपाल और राष्ट्रप्रेम :–

अपने बचपन में यशपाल ने अंग्रेज़ों के आतंक और विचित्र व्यवहार की अनेक कहानियाँ सुनी थीं। बरसात या धूप से बचने के लिए कोई हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ों के सामने छाता लगाए नहीं गुज़र सकता था। बड़े शहरों और पहाड़ों पर मुख्य सड़कें उन्हीं के लिए थीं, हिन्दुस्तानी इन सड़कों के नीचे बनी कच्ची सड़क पर चलते थे। यशपाल ने अपने होश में इन बातों को सिर्फ़ सुना, देखा नहीं, क्योंकि तब तक अंग्रेज़ों की प्रभुता को अस्वीकार करनेवाले क्रांतिकारी आंदोलन की चिंगारियाँ जगह–जगह फूटने लगी थीं। लेकिन फिर भी अपने बचपन में यशपाल ने जो भी कुछ देखा, वह अंग्रेज़ों के प्रति घृणा भर देने को काफ़ी था। वे लिखते हैं, ''मैंने अंग्रेज़ों को सड़क पर सर्व साधारण जनता से सलामी लेते देखा है। हिन्दुस्तानियों को उनके सामने गिड़गिड़ाते देखा है, इससे अपना अपमान अनुमान किया है और उसके प्रति विरोध अनुभव किया।

अंग्रेज़ों और प्रकारांतर से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी घृणा के संदर्भ में यशपाल अपने बचपन की दो घटनाओं का उल्लेख विशेष रूप से करते हैं। इनमें से पहली घटना उनके चार–पाँच वर्ष की आयु की है। तब उनके एक संबंधी युक्त प्रांत के किसी क़स्बे में कपास ओटने के कारख़ाने में मैनेजर थे। कारख़ाना स्टेशन

के पास ही काम करने वाले अंग्रेज़ों के दो–चार बँगले थे। आस–पास ही इन लोगों का खूब आतंक था। इनमें से एक बँगले में मुर्ग़ियाँ पली थीं, जो आस–पास की सड़क पर घूमती–फिरती थीं। एक शाम यशपाल उन मुर्ग़ियों से छेड़खानी करने लगे। बँगले में रहने वाली मेम साहिबा ने इस हरक़त पर बच्चों के फटकार दिया। शायद 'गधा' या 'उल्लू' जैसी कोई गाली भी दी। चार–पाँच वर्ष के बालक यशपाल ने भी उसकी गाली का प्रत्युत्तर गाली से ही दिया। जब उस स्त्री ने उन्हें मारने की धमकी दी, तो उन्होंने भी उसे वैसे ही धमकाते हुए जवाब दिया और फिर भागकर कारख़ाने में छिप गए। लेकिन घटना यूँ ही टाल दी जानेवाली नहीं थी। इसकी शिकायत उनके संबंधी से की गई। उन्होंने यशपाल की माँ से शिकायत की और अनेक आशंकाओं और आतंक के बीच यह भी बताया कि इससे पूरे कारख़ाने के लोगों पर कैसा संकट आ सकता है। फिर इसके परिणाम का उल्लेख करते हुए यशपाल लिखते हैं, 'मेरी माँ ने एक छड़ी लेकर मुझे खूब पीटा मैं ज़मीन पर लोट–पोट गया परंतु पिटाई जारी रही। इस घटना के परिणाम से मेरे मन में अंग्रेज़ों के प्रति कैसी भावना उत्पन्न हुई होगी, यह भाँप लेना कठिन नहीं है।...'

दूसरी घटना कुछ इसके बाद की है। तब यशपाल की माँ युक्तप्रांत में ही नैनीताल ज़िले में तिराई के क़स्बे काशीपुर में आर्य कन्या पाठशाला में मुख्याध्यापिका थीं। शहर से काफ़ी दूर, कारख़ाने से ही संबंधी को बड़ा–सा आवास मिला था और यशपाल की माँ भी वहीं रहती थी। घर के पास ही 'द्रोण सागर' नामक एक तालाब था। घर की स्त्रियाँ प्रायः ही वहाँ दोपहर में घूमने चली जाती थीं। एक दिन वे स्त्रियाँ वहाँ नहा रही थीं कि उसके दूसरी ओर दो अंग्रेज़ शायद फ़ौजी गोरे, अचानक दिखाई दिए। स्त्रियाँ उन्हें देखकर भय से चीख़ने लगीं और आत्मरक्षा में एक–दूसरे से लिपटते हुए, भयभीत होकर उसी अवस्था में अपने कपड़ेउठाकर भागने लगीं। यशपाल भी उनके साथ भागे। घटित कुछ विशेष नहीं हुआ लेकिन अंग्रेज़ों से इस तरह डरकर भागने का दृश्य स्थायी रूप से उनकी बाल–स्मृति में टँक गया।..'अंग्रेज़ से वह भय ऐसा ही था जैसे बकरियों के झुंड को बाघ देख लेने से भय लगता होगा अर्थात् अंग्रेज़ कुछ भी कर सकता था। उससे डरकर रोने और चीख़ने के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं था।..'

यशपाल और क्रांतिकारी संगठन :–

आर्य समाज और कांग्रेस वे पड़ाव थे जिन्हें पार करके यशपाल अंततः क्रांतिकारी संगठन की ओर आए। उनकी माँ उन्हें स्वामी दयानंद के आदर्शों का एक तेजस्वी प्रचारक बनाना चाहती थीं। इसी उद्देश्य से उनकी आरंभिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। आर्य समाजी दमन के विरुद्ध उग्र प्रतिक्रिया के बीज उनके मन की धरती पर यहीं पड़े। यहीं उन्हें पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों को भी निकट से देखने–समझने का अवसर मिला। अपनी निर्धनता का कचोट–भरा अनुभव भी उन्हें यहीं हुआ। अपने बचपन में भी ग़रीब होने के अपराध के प्रति वे अपने को किसी प्रकार उत्तरदायी नहीं समझ पाते। इन्हीं संस्कारों के कारण वे ग़रीब के अपमान के प्रति कभी उदासीन नहीं हो सके।

कांग्रेस यशपाल का दूसरा पड़ाव थी। अपने दौर के अनेक दूसरे लोगों की तरह वे भी कांग्रेस के माध्यम से ही राजनीति में आए। राजनैतिक दृष्टि से फ़िरोज़पुर छावनी एक शांत जगह थी। छावनी से तीन मील दूर शहर के लेक्चर और जलसे होते रहते थे। खद्दर का प्रचार भी होता था। 1921 में, असहयोग आंदोलन के समय यशपाल अठारह वर्ष के नवयुवक थेकृदेश–सेवा और राष्ट्रभक्ति के उत्साह से भरपूर, विदेशी कपड़ों की होली

के साथ वे कांग्रेस के प्रचार–अभियान में भी भाग लेते थे। घर के ही लुग्गड़ से बने खद्दर के कुर्त्ता–पायजामा और गांधी टोपी पहनते थे। इसी खद्दर का एक कोट भी उन्होंने बनवाया था। बार–बार मैला हो जाने से ऊबकर उन्होंने उसे लाल रँगवा लिया था। इस काल में अपने भाषणों में, ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी आँकड़ों के स्रोत के रूप में, वे देश–दर्शन नामक जिस पुस्तक का उल्लेख करते हैं वह संभवतः 1904 में प्रकाशित सखाराम गणेश देउस्कर की बांला पुस्तक देशेरकथा है, भारतीय जन–मानस पर जिसकी छाप व्यापक प्रतिक्रिया और लोकप्रियता के कारण ब्रिटिश सरकार ने जिस पर पाबंदी लगा दी थी।

महात्मा गाँधी और गाँधीवाद से यशपाल के तात्कालिक मोहभंग का कारण भले ही 12 फ़रवरी सन् 22 को, चौरा–चौरी काण्ड के बाद महात्मा गाँधी द्वारा आंदोलन के स्थगन की घोषणा रहा हो, लेकिन इसकी शुरुआत और पहले हो चुकी थी। यशपाल और उनके क्रांतिकारी साथियों का सशस्त्र क्रांति का जो एजेंडा था, गाँधी का अहिंसा का सिद्धांत उसके विरोध में जाता था। महात्मा गाँधी द्वारा धर्म और राजनीति का घाल–मेल उन्हें कहीं बुनियादी रूप से ग़लत लगता था। मैट्रिक के बाद लाहौर आने पर यशपाल नेशनल कॉलेज में भगतसिंह, सुखदेव और भगवतीचरण बोहरा के संपर्क में आए। नौजवान भारत सभा की गतिविधियों में उनकी व्यापक और सक्रिय हिस्सेदारी वस्तुतः गाँधी और गाँधीवाद से उनके मोहभंग की एक अनिवार्य परिणाम थी। नौजवान भारत सभा के मुख्य सूत्राधार भगवतीचरण और भगत सिंह थे।

सके लक्ष्यों पर टप्पणी करते हुए यशपाल लिखते हैं, 'नौजवान भारत सभा का कार्यक्रम गाँधीवादी कांग्रेस की समझौतावादी नीति की आलोचना करके जनता को उस राजनैतिक कार्यक्रम की प्रेरणा देना और जनता में क्रांतिकारियों और महात्मा गाँधी तथा गाँधीवादियों के बीच एक बुनियादी अंतर की ओर संकेत करना उपयोगी होगा। लाला लाजपतराय की हिन्दूवादी नीतियों से घोर विरोध के बावजूद उनपर हुए लाठी चार्ज के कारण, जिससे ही अंततः उनकी मृत्यु हुई, भगतसिंह और उनके साथियों ने सांडर्स की हत्या की। इस घटना को उन्होंने एक राष्ट्रीय अपमान के रूप में देखा जिसके प्रतिरोध के लिए आपसी मतभेदों को भुला देना जरूरी था। भगतसिंह द्वारा असेम्बली में बम–कांड इसी सोच की एक तार्किक परिणति थी।

अपने क्रांतिकारी जीवन के जो संस्मरण यशपाल ने सिंहावलोकन में लिखे, उनमें अपनी दृष्टि से उन्होंने उस आंदोलन और अपने साथियों का मूल्यांकन किया। तार्किकता, वास्तविकता और विश्वसनीयता पर उन्होंने हमेशा ज़ोर दिया है। यह संभव है कि उस मूल्यांकन से बहुतों को असहमति हो या यशपाल पर तथ्यों को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत करने का आरोप हो। आज भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो यशपाल को बहुत अच्छा क्रांतिकारी नहीं मानते। उनके क्रांतिकारी जीवन के प्रसंग में उनके चरित्रहनन की दुरभसंधियों को ही वे पूरी तरह सच मानकर चलते हैं और शायद इसीलिए यशपाल की ओर मेरी निरंतर और बार–बार वापसी को वे 'रेत की मूर्ति' गढ़ने–जैसा कुछ मानते हैं।

यशपाल और क्रांतिकारी राष्ट्र भक्ति :–

'क्रांति' को भी वे बम–पिस्तौल वाली राजनीति क्रांति तक ही सीमित करके देखते हैं। राजनीतिक क्रांति यशपाल के लिए सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन का ही एक हिस्सा थी। साम्राज्यवाद को वे एक शोषणकारी व्यवस्था के रूप में देखते थे, जो भगतसिंह के शब्दों में, 'मनुष्य के हाथों मनुष्य के और राष्ट्र के हाथों राष्ट्र के शोषण का चरम रूप है'..(भगतसिंह और उनके साथियों के दस्तावेज (सं.) जगमोहन और चमनलाल,

संस्करण '19, पृ. 321) इस व्यवस्था के आधार स्तंभ–जागीरदारी और ज़मींदारी व्यवस्था भी उसी तरह उनके विरोध के मुख्य एजेंडे के अंतर्गत आते थे। देश में जिस रूप में स्वाधीनता आई और बहुतों की तरह, वे भी संतुष्ट नहीं थे। स्वाधीनता से अधिक वे इसे सत्ता का हस्तांतरण मानते थे। और यह लगभग वैसा ही था जिसे कभी प्रेमचंद ने जॉन की जगह गोविंद को गद्दी पर बैठ जाने के रूप में अपनी आशंका व्यक्त की थी।

क्रांतिकारी राष्ट्र भक्ति और बलिदान की भावना से प्रेरित–संचालित युवक थे। अवसर आने पर उन्होंने हमेशा बलिदान से इसे प्रमाणित भी किया। लेकिन यशपाल अपने साथियों को ईर्ष्या–द्वेष, स्पर्धा–आकांक्षा वाले साधारण मनुष्यों के रूप में देखे जाने पर बल देते हैं। अपने संस्मरणों में आज राजेन्द्र यादव जिसे आदर्श घोषित करते हैं – 'वे देवता नहीं हैं'– उसकी शुरुआत हिन्दी में वस्तुतः यशपाल के इन्हीं संस्मरणों से होती है। ये क्रांतिकारी सामान्य मनुष्यों से कुछ अलग, विशिष्ठ और अपने लक्ष्यों के लिए एकांतिक रूप से समर्पित होने पर भी सामान्य मानवीय अनुभूतियों से अछूते नहीं थे। हो भी सकते थे। शरतचंद्र ने पथेरदावी में क्रांतिकारियों का जो आदर्श रूप प्रस्तुत किया, यशपाल उसे आवास्तविक मानते थे, जिससे राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिलती हो, उसे क्रांतिकारी आंदोलन और उस जीवन को वास्तविकता का एक प्रतिनिधि और प्रामाणिक चित्र नहीं माना जा सकता। सुबोधचंद्र सेन गुप्त पथेरदावी में बिजली पानीवाली झंझावाती रात में सव्यसाची के निषक्रमण को भावी महानायक सुभाषचंद्र बोस के पलायन के एक रूपक के तौर पर देखते हैं, जबकि यशपाल सव्यसाची के अतिमानवीय से लगने वाले कार्य–कलापों और खोह–खंडहरों में बिताए जानेवाले जीवन को वास्तविक और प्रामाणिक नहीं मानते। क्रांतिकारी जीवन के अपने लंबे अनुभवों को ही वे अपनी इस आलोचना के मुख्य आधार के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

"दादा कामरेड" की कथावस्तु :–

'दादा कामरेड– यशपाल का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में यशपाल ने क्रान्तिकारी जीवन का चित्रण करते हुए मज़दूरों के संगठन को राष्ट्रोद्धार का अधिक संगत उपाय बतलाया है। यह उपन्यास लेखक की पहली रचना थी जिसने हिन्दी में रोमान्स और राजनीति के मिश्रण का आरम्भ किया।

'दादा कामरेड' यशपाल का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में यशपाल ने क्रान्तिकारी जीवन का चित्रण करते हुए मज़दूरों के संगठन को राष्ट्रोद्धार का अधिक संगत उपाय बतलाया है। यह उपन्यास लेखक की पहली रचना थी जिसने हिन्दी में रोमान्स और राजनीति के मिश्रण का आरम्भ किया। यह उपन्यास बंगला उपन्यास सम्राट शरत बाबू के प्रमुख राजनीतिक उपन्यास 'पथेरदावी' के द्वारा क्रान्तिकारियों के जीवन और आदर्श के सम्बन्ध में उत्पन्न हुई भ्रामक धारणाओं का निराकरण करने के लिए लिखा गया था परन्तु इतना ही नहीं यह 'श्री जैनेन्द्र' की आदर्श नारी पुरुष की खिलौना 'सुनीता' का भी उत्तर है।

दादा कामरेड की कथावस्तु ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सक्रीय एक गुप्त क्रांतिकारी दल और उसके अंतर्विरोध है जिसमें अपने यदार्थ अनुभवों के आधार पर कुछ अत्यंत ही विश्वसनीय और सजीव चित्रों का विधान किया है इसके अलावा इस उपन्यास में उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों को मार्क्सवादी नज़रिए से देखने का प्रयास किया है।

दादा कामरेड में रोबर्ट के विचार और शैल का आचरण समाज में मौजूद संकट का समाधान न होकर एक कोशिश मात्र रह जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य है समाज की वर्त्तमान आचार और नैतिक धारणाओं में वैषम्य

और विरोध की भावना उपज करें।

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी साहित्य क्षेत्र में जनवायी कला लेखक के रूप में श्री यशपाल महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने प्रेमचन्द की कथा–परम्परा को अपने ढ़ंग से विकसित करने का प्रयास भी किया। वे अपने समय के एक प्रखर जनवादी और प्रखर यथार्थवादी कथाकार माने जाते हैं। यशपाल ने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यास, निबन्ध, यात्रा–विवरण, आदि विभिन्न साहित्य–विधाओं के साहित्य का सृजन किया है। हिन्दी साहित्य के मूर्घन्य उपन्यासकारों में उनका उल्लेखनीय स्थान है। उनकी साहित्य–संबन्धी चेतना ही उनकी औपन्यासिक चेतना है। उनके अधिकांश उपन्यास साहित्य सम्बन्धी धारणाओं की कसौटी पर खरा उतरते हैं। यशपाल के उपन्यासों ने मार्क्सवाद को लोकप्रिय बनाया है। अपना पहला उपन्यास दादा कॉमरेड (1941) से लेकर अन्तिम उपन्यास 'मेरी–तेरी–उसकी बात' (1974) तक यशपाल एक ही समतल भूमि पर न चले, न विषयवस्तु की दृष्टि से, न कलात्मक चित्रण की दृष्टि से।

'दादा कॉमरेड' का यशपाल अराजकतावादी और रोमानी है। तो 'दिव्या' में वे अराजकता से मार्क्सवाद तक की यात्रा करते हैं। झूठा–सच में वे रोमांस से यथार्थवाद तक की यात्रा करते हैं। यशपाल का अपना अनुभव निम्न धर्म वर्ग का है। उपन्यासों में व्यक्त होने वाला दृष्टिकोण यशपाल का अपना है, जो उनके निजी जीवन और अनुभवों से निर्मित हुआ है। 'यशपाल हिन्दी लेखकों में अकेले साहब थे।'[1] वे व्यक्तिगत जीवन को कथानक का आधार बना देने से उनके उपन्यासों की विषयवस्तु में एक प्रकार की जीवन्तता मिलती है। उनकी लोकप्रियता का मुख्य कारण भी यही है। यशपाल साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि सामाजिक यथार्थ है। मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं की अभिव्यक्ति के लिये उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कथावस्तु का चयन किया। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में जहाँ एक ओर सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण है तो दूसरी ओर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रचित उपन्यासों इतिहासकार की सूझ–बूझ और गहनता भी है। यशपाल के उपन्यासः– यशपाल ने हिन्दी साहित्य को अपनी अनोखी रचना धार्मिता से समृद्ध किया है। उनके बारह उपन्यास प्रकाशित हुए।

सन् 1968 12. मेरी-तेरी-उसकी बात :-

सन् 1974 इनमें दादा कॉमरेड देशद्रोही, पार्टी कॉमरेड, मनुष्य के रूप, झूठा–सच (दो भाग) और मेरी–तेरी उसकी बात राजनीतिक उपन्यास की कोटि में आते हैं। इन सभी उपन्यासों में मानवतावादी दृष्टिकोण दिखाई देते हैं।

दादा कॉमरेड :-

दादा कॉमरेड यशपाल का प्रथम उपन्यास है। इसमें यशपाल की बदलती राजनैतिक चेतना और प्रेम तथा यौन विषयक परिकल्पनायें परिलक्षित हुई है। उपन्यास का एक छोर यदि राजनीति से संबद्ध है तो दूसरा छोर प्रेम, काम, विवाह और नारी की सामाजिक स्थिति से। यह उपन्यास बारह छोटे–छोटे अध्यायों में विभक्त है। जिस रोचक ढंग से उपन्यास का ताना–बाना बुना गया है, वह यशपाल की रचनात्मक प्रतिभा का प्रमाण है। इस में गाँधीवाद, क्रान्तिकारियों का प्रभाव, कांग्रेसी संघर्ष, साम्यवाद का प्रभाव, सर्वत्र व्याप्त है। पूरे उपन्यास के मेरुदंड में अंग्रेजी सत्ता का शोषण, अफसरशाही तथा उनके सिपाहियों के आतंक की व्याप्ति दिखाई पडती है। राजनैतिक एवं सामाजिक शक्तियों की पहचान की दृष्टि से दादा कॉमरेड की अपनी एक विशिष्ट भूमिका रही है।

देश द्रोही :-

देश द्रोही यशपाल का दूसरा उपन्यास है। इसमें सन् 1930ई. से सन् 1942 ई. तक की राजनैतिक हलचलों को समेटा है। इस में साम्यवादी दल के प्रति जनता में व्याप्त भ्रान्तियों का निराकरण किया गया है। दादा कॉमरेड में प्रेम की नयी नैतिकता है तो देशद्रोही में रोमांस का रंग अधिक है। यशपाल ने इस उपन्यास में विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओं और उनकी नीतियों को उद्‌घाटित किया है। रोमानी प्रसंगों की अधिकता के कारण इस में राजनैतिक पक्ष कम है।

संसार में आज अनेक वादों–पूँजीवाद, नाजीवाद, गाँधीवाद, समाजवाद का संघर्ष चल रहा है। इस विचार संघर्ष की नींव में परिस्थितियों, व्यवस्था और धारणाओं में सामंजस्य बैठाने का प्रयत्न है। इन वादों के संघर्षों से उत्पन्न समन्वय ही मनुष्य की नयी सभ्यता का आधार होगा। मनुष्य होने के नाते हम इस संघर्ष की उपेक्षा नहीं कर सकते। इस संघर्ष के परिणाम के सम्बन्ध में हमारी चिन्ता की भावना नहीं, स्वयं अपने और समाज के जीवन की चिन्ता है। हमें यह सोचना ही पड़ेगा कि मनुष्य–समाज की आयु बढ़ने के परिणामस्वरूप जब समाज के बचपन के युग की झँगुलिया उसके बदन को दबाने लगे तब उसके लिये नये विचारों का विस्तृत कपड़ा बना लेना बेहतर होगा या शरीर को दबाकर पुरानी सीमाओं में ही रखना है ?'' 'दादा कामरेड' में इसी प्रश्न पर विचार करने का अनुरोध किया गया है।

गोदान के बाद देश के राजनैतिक और सामाजिक जीवन का इतना सफल चित्रण किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। इस उपन्यास से व्यक्ति को जागरूक रहने, संघर्षों से जुडे रहने और अपनी मंजिल की ओर बढ़ते जाने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

पार्टि कॉमरेड :-

इस उपन्यास की रचना सन् 1946 ई. में हुई। यह लघु उपन्यास है। इसमें राजनैतिक वातावरण का चित्रण है। सामाजिक समस्याओं का वर्णन उपन्यास में कम ही हुआ है। फिर भी यहाँ भी पुरुष सत्तात्मक समाज में नारी की निरीह स्थिति का चित्रण हुआ है। यह उपन्यास आकार में छोटा होते हुए भी पूर्ण रूपेण सक्षम है। स्वतंत्रता के लिये संघर्ष रत काँग्रेस, कम्यूनिस्ट के द्वन्द्व, अंग्रेजों के दमनचक्र, सैनिक–विद्रोह, पूंजीपतियों की स्वार्थपरक विचार धारा तथा प्रचार के साधनों के दुरूपयोग का सशक्त दस्तावेज है यह उपन्यास।

मनुष्य के रूप :-

सन् 1949 ई. में यह उपन्यास लिखा गया है। इस में वर्तमान स्त्री–प्रेम विवाह, समर्पण भावना आदि समस्याओं को गंभीर पूर्वक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

देशद्रोही और दादा कॉमरेड की तरह इसमें भी लेखक ने प्रेम–प्रसंगों को अधिक उभारा है।

झूठा-सच :-

'झूठा–सच' में भारत और पाकिस्तान के विभाजन के पूर्व हुए साम्प्रदायिक दंगों का व्यापक और यथार्थ चित्रण किया गया है। यह चित्रण इतना वास्तविक और हृदय विदारक है कि यह उपन्यास न केवल हिन्दी साहित्य, बल्कि संपूर्ण विश्वसाहित्य में अपनी अमिट छाप छोडता है। झूठा–सच् भाग–2 : 'झूठा–सच' के द्वितीय भाग में स्वतंत्रता के पश्चात् की स्थिति का सही चित्रण किया गया है। सत्तासीन नेताओँ की स्वार्थ सिद्धि को व्यंग्यात्मक शैली में व्यक्त किया गया है। साम्प्रदायिकता की आग को भडकाने में अंग्रेजों की किया गया है।

साम्राज्यवादी चालों के उल्लेख के साथ–साथ नेताओं की अधिकार लिप्सा और स्वार्थ परता का रेखांकन भी किया गया है।

यशपाल (3 दिसम्बर 1903 – 26 दिसम्बर 1976) का नाम आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथाकारों में प्रमुख है। ये एक साथ ही क्रांतिकारी एवं लेखक दोनों रूपों में जाने जाते है। प्रेमचंद के बाद हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रगतिशील कथाकारों में इनका नाम लिया जाता है। अपने विद्यार्थी जीवन से ही यशपाल क्रांतिकारी आन्दोलन से जुड़े, इसके परिणामस्वरुप लम्बी फरारी और जेल में व्यतीत करना पड़ा। इसके बाद इन्होने साहित्य को अपना जीवन बनाया, जो काम कभी इन्होने बंदूक के माध्यम से किया था, अब वही काम इन्होने बुलेटिन के माध्यम से जनजागरण का काम शुरु किया। यशपाल को साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1970 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। यशपाल के लेखन की प्रमुख विधा उपन्यास है, लेकिन अपने लेखन की शुरूआत उन्होने कहानियों से ही की। उनकी कहानियाँ अपने समय की राजनीति से उस रूप में आक्रांत नहीं हैं, जैसे उनके उपन्यास।

Dr. Zubaida Anwar
HOD, Dept of Hindi, Montfort College, Bangalore
Mail ID – zubaida/montfortcollege.edu.in
Mobile 9740151002

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 27-31

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में राष्ट्र प्रेम

रूचि कुमारी, शोधार्थी
हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना (बिहार), पिन कोड–800005

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है।
जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं, पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।"

गुप्त जी की ये पंक्तियाँ उनके हृदय में बसे राष्ट्रप्रेम, अपने राष्ट्र पर गर्व और अभिमान को प्रदर्शित करता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में भी राष्ट्र भावना को सर्वोपरि रखा है। सभी धर्मों, सभी जातियों से उपर उठकर उन्होंने राष्ट्रीयता की आराधना की है।

आधुनिक हिन्दी के लोकप्रिय कवि एवं रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई. अर्थात गुलाम भारत में हुआ तथा उनकी मृत्यु सन् 1964 ई. में आजाद भारत में हुई। गुलामी और आजादी के बीच का सफर गुप्त जी के जीवन का हिस्सा रहा। उनकी आत्मा आजाद भारत का स्वप्न लिये संघर्ष कर रही थी। गुलामी की टीस उन्हें काँटा की तरह चुभ रही थी। देश की वर्तमान दशा को देख कर कभी वो अतीत का गौरवगाना करते, तो कभी भविष्य की चिंता उन्हें सताने लगती। इसके लिये वो जनता को जागरूक होने के लिये प्रेरित करते हैं तथा सभी को देश पर तन–मन से ध्यान देने की बात करते हुए लिखते हैं,

"भजो भारत को तन–मन से।
बनो जड़ हाय! न चेतन से।।
करते हो किस इष्ट देव का ध्यान आँख मूंद कर?
तीस कोटि लोगों में देखो, तीस कोटि भगवन।।
मुक्ति होगी इस ध्यान से।
भजो भारत को तन–मन से।।
पद–पद पर जो तीर्थ भूमि है, देती है जो अन्न,
जिसमें तुम उत्पन्न हुए हो उसे करो संपन्न।
नहीं तो क्या होगा धन से?
भजो भारत को तन–मन से।"[2]

जनता में राष्ट्रप्रेम को जगाने के लिये गुप्त जी ने कविता में खड़ी बोली का प्रयोग किया तथा खड़ी बोली

को भी काव्यभाषा के रूप में स्थापित करने का अथक प्रयास किया। गुप्त जी भारतीय संस्कृति और इतिहास के गौरवगान के हितैषी थे, लेकिन अंधविश्वासों और झूठी आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। भारतीय संस्कृति के नवीनतम रूप की कामना उनकी रचनाओं में दिखाई देती है। अपनी प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय रचना 'भारत भारती' में उन्होंने देश के प्रति श्रद्धा भाव को प्रकट करते हुए लिखा हैं,

"भूगोल का गौरव, प्रकृति का पूज्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ?
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उनका की जो ऋषि भूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।"[3]

देश प्रेम के साथ–साथ गुप्त जी मानवतावाद के भी पोषक और समर्थक थे। अतः ये स्वर्ग जाने और मोक्ष प्राप्ति की बात नहीं करते बल्कि इस धरती को ही स्वर्ग बनाने वाले राम की कल्पना करते हैं,

"भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वर प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।"[4]

अतः गुप्त जी एक ऐसी राष्ट्र की कल्पना करते हैं, जहाँ मानव जाति का मूल्य हो, राष्ट्रप्रेम की भावना हो, मातृभूमि से प्रेम हो, यदि संसार में ऐसा होगा तो यह भूतल ही स्वर्ग बन जायेगा। राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता, गौरवमय अतीत का इतिहास, भारतीय संस्कृति की महत्ता, पारिवारिक जीवन की महता तथा नारी मात्र को विशेष महत्व गुप्त जी के रचनाओं की विशेषता है।

मैथिलीशरण गुप्त की सर्वप्रसिद्ध रचना 'भारत भारती' राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत है। भारत भारती की रचना उन्होंने अपने साहित्यिक गुरु महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से की। इस रचना में गुप्त जी ने अपने साहित्यिक शोध का परिचय देते हुए भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य का चित्र प्रस्तुत किया है। जिससे आमजन देश की वर्तमान दशा से अवगत हो सके। "1912 ई. में भारत भारती लिखकर कवि ने जिस जन–जागरण का शंखनाद किया था, उसकी प्रखरता क्रमशः बढ़ती गयी। इस राष्ट्रीयता में हिंदू और मुसलमानों का भेद–भाव नहीं है, राजा और रंक का पार्थक्य नहीं है।"[5] गुप्त जी ने सभी धर्मों, सभी जातियों, सभी आदर्शों तथा सभी संस्कृतियों से हटकर राष्ट्रधर्म तथा मातृभूमि की आराधना की है। कभी वे भारत के वर्तमान दशा पर दुखी होते हैं तो कभी उन्हें भविष्य की चिंता होने लगती है।

अतः वो अतीत के गौरवगाना करके जन–जन में राष्ट्रप्रेम भर देना चाहते हैं। जिसके हृदय में राष्ट्रप्रेम की भावना नहीं है, उन्हें वह पशु से भी कम समझते हैं, उन्हें वो मृतक समान मानते हैं। तथा वैसे लोगों को फटकार लगाने से भी पीछे नहीं हटते। उन्होंने भारत भारती की भूमिका में लिखा है, "मुझे दुःख है कि इस पुस्तक में कहीं–कहीं मुझे कुछ कड़ी बातें लिखनी पड़ी है। परन्तु मैंने किसी की निंदा करने के विचार से कोई बात नहीं लिखी। अपनी सामाजिक दुर्व्यवस्था ने वैसा लिखने के लिये मुझे विवश किया है। जिन दोषों ने हमारी यह दुर्गति की है, जिनके कारण दूसरे लोग हम पर हँस रहे हैं, क्या उनका वर्णन कड़े शब्दों में किया जाना अनुचित है?"[6]

भारत भारती देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य के गहराई से अध्ययन का प्रतिफल है। इससे लेखक

के शोधदृष्टि का परिचय मिलता है। देश की स्थिति के अध्ययन के फलस्वरूप उन्होंने पाया कि "भारत की पूर्व और वर्तमान दशा में बड़ा भारी अंतर है। अंतर न कहकर इसे वैपरीत्य कहनाचाहिए। एक वह समय था कि यह देश विद्या, कला–कौशल और सभ्यता में संसार का शिरोमणि था और एक यह समय है कि इन्हीं बातों का इसमें शोचनीय अभाव हो गया है। जो आर्य जाति कभी सारे संसार को शिक्षा देती थी वही आज पद–पद पर पराया मुँह ताक रही है! ठीक है, जिसका जैसा उत्थान, उसका वैसा ही पतन! परंतु क्या हमलोग सदा अवनति में ही पड़े रहेंगे? हमारे देखते–देखते जंगली जातियाँ तक उठ कर हमसे आगे बढ़ जाएं और हम वैसे ही पड़े रहेंगे? क्या हम लोग अपने मार्ग से यहाँ तक हट गये हैं कि अब उसे पा ही नहीं सकते? संसार में ऐसा कोई काम नहीं जो सचमुच उद्धोग से सिद्ध न हो सके। परंतु उद्धोग के लिये उत्साह की आवश्यकता होती है। इसी उत्साह को, इसी मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिये कविता एक उत्तम साधन है। परंतु बड़े खेद की बात है कि हम लोग के लिये हिन्दी में अभी तक इस ढंग की कोई कविता–पुस्तक नहीं लिखी गयी है, जिसमें हमारी प्राचीन उन्नति और अर्वाचीन अवनति का वर्णन भी हो और भविष्य के लिये प्रोत्साहन भी है।"[7]

इन्हीं विचारों ने गुप्त जी को भारत भारती लिखने के लिये प्रोत्साहित किया। देश के वर्तमान स्थिति पर क्षोभ प्रकट करते हुए वो लिखते हैं,

"भारत, कहो तो आज तुम क्या हो वही भारत अहो?
हे पुण्यभूमि, कहाँ गयी है वह तुम्हारी श्री कहो?
अब कमल क्या जल तक नहीं, सागर मध्य केवल पंक है,
वह राजराज कुबेर कहाँ! रंक का सा रंक है।"[8]

अपने देश के अस्तित्व को खोते हुए देख उनकी आत्मा उद्वेलित हो उठती है। अपने दुख को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं :–

"भारत! तुम्हारा आज यह कैसा भयंकर वेष है,
है सब और निःशेष केवल नाम ही अब शेष है।"[9]

देश की इस दशा से जनता को अवगत कराने का काम गुप्त जी ने किया तथा उन्हें जागरूक करने का प्रयत्न भी किया है। "हे भाइयों! सोये बहुत अब तो उठा, जागो अहो ;/देखो ज़रा अपनी दशा, आलस्य को त्यागो अहो!/कुछ पार है, क्या क्या समय के उलट फेर न हो चुके! /अब भी सजक होगे न क्या?/ सर्वस्व तो खो चुके।"

आमजन को जागरूक करने के लिए और उनमें उत्साह भरने के लिये तथा उन्हें आइना दिखाने के लिए वो देश की वर्तमान दुर्दशा के साथ ही अतीत का गौरवगाना करते हैं। यह सोचने पर लोगों को विवश करते हैं कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि जो देश कभी सोने की चिड़िया के नाम से जाने जाने वाले, जहाँ इतने विद्वानों, साहित्यकारों और वीरों ने जन्म लिया। आज वही देश इतना विवश, लाचार और गुलाम क्यों है। "अतीत का गौरवगाना उन्होंने किया है, किन्तु वर्तमान और भविष्य के निर्माण के लिए। अतीत की पीठ पर बैठकर उन्होंने वर्तमान की साधना की है। इस प्रकार जीवन और इतिहास के प्रति गुप्तजी का समस्त दृष्टिकोण सामयिक है। उन्होंने प्रागैतिहासिक पात्रों में आधुनिक चेतना भरकर उन्हें नयी भूमिकाओं में उपस्थित किया है और प्राचीन धारणाओं को आधुनिक प्रसंग में उपस्थित करके वर्तमान के लिए निष्कर्ष निकाला है।" देश की दशा और दुर्दशा

पर विचार करते हुए लिखते हैं, "हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी? आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।"

गुप्त जी की देशभक्ति उन्हें बार–बार अतीत में झांकने और उससे प्रेरणा लेने के लिये उत्साहित करते हैं। वो इतिहास से सवाल भी करते हैं, "अरे, ओ शब्दों का इतिहास! कह, तू किन शब्दों में देगा युग–युग का आभास?"[10] फिर स्वयं इन प्रश्नों का समाधान ढूंढते हैं। "आये नहीं थे स्वप्न में भी जो किसी के ध्यान में, प्रश्न पहले हल हुए थे एक हिंदुस्तान में। सिद्धांत मानव जाति के जो विश्व में वितरित हुआ, बस भारत तपीवनों में थे प्रथम निश्चित हुआ।"[4]

देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की भावना गुप्तजी के अंदर तो प्रबलथी। इस भावना को वो सब लोगों में भर देना चाहते थे। स्वराज के अभिलाषा मात्र से ही उनका मन पुलकित हो उठता है :–

"शत–शत सम्राटों के स्वामी!
हे अनंत हे अंतर्यामी!
सुख का स्वप्न है कि आशा है यह,
स्वराज की अभिलाषा।
किसने इसको उदित किया है,
मुरझे मन को मुदित किया है।"[5]

अपने देश और देश की विभूति पर गर्व करते हुए लिखते हैं, "बलिहारी तेरा वरवेश, मेरे भारत मेरे देश! बाहर मुकुट विभूषित भाल, भीतर जटा–जुट की बाल।उपर नभ नीचे पाताल और बीच में तू प्रणपाल। बंधन में भी मुक्ति निवेश, मेरे भारत! मेरे देश।"[6]

जो देश कभी प्राकृतिक रूप से इतना सुंदर, इतना आकर्षक हुआ करता था आज आधुनिकीकरण, औद्योगिकरण और बाजारवाद ने देश की दशा को बदल दिया है।"रौंदी हुई है सब हमारी भूमि इस संसार को, फैला दिया व्यापार, कर दी धूम–धर्म्म प्रचार की।"[7] देश को इस दशा से निकालने के लिये, इस क्लेश को मिटाने के लिये गुप्त जी ने शिक्षा को माध्यम और जरूरत पड़ने पर हथियार बनाने की बात की है। क्योंकि शिक्षा ही वह ताकत है जो समाज को बदलने और और देश को आगे बढ़ाने के लिये महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश के गुलामी के अन्य कारणों में से एक कारण अशिक्षा भी रही है।

अतः शिक्षा प्राप्ति को गुप्तजी प्रथम कर्तव्य मानते हैं, "सबसे प्रथम कर्तव्य है, शिक्षा बढ़ना देश में, शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं, आज हम सब क्लेश में। शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है, शिक्षा बिना कल्याण की आशा–दुराशा मात्र है।"[8] शिक्षा और भाषा के महत्व को समझते हुए गुप्तजी ने अपनी कविताओं में खड़ी बोली का सरलतम रूम में प्रयोग किया है। इससे वो सरल भाषा में अपनी बात को आम जन तक पहुंचाने में सफल भी हुए हैं।

देश और समाज के हित में गुप्तजी ने अपने कर्मों और अपनी रचनाओं के माध्यम से विशेष योगदान दिया है। उन्होंने अपनी कविताओं में जन–जागरूकता, देश की उन्नति, समाज कल्याण एवं नवीन समाज निर्माण के क्षेत्र में अनेक सराहनीय कदम उठाए हैं। तत्कालीन समाज में फैले रूढ़ियों, अंधविश्वासों, जातिवाद, सामंतवाद का उन्होंने डटकर विरोध किया है तथा मानव प्रेम और राष्ट्र प्रेम को को देश के उन्नति का मार्ग मानते हैं।

अतः गुप्तजी की रचनाओं में हमें राष्ट्र की उन्नति और राष्ट्र के प्रति उनका प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने लोगों में भी राष्ट्रप्रेम, देश के लिये समर्पण की भावना जगाने का काम किया है।

संदर्भ सूची :-

1. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन।
2. भजो भारत को तन–मन से, मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली –3, मैथिलीशरण गुप्त, संपादक : कृष्णदास पालीवाल, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 91.
3. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 5.
4. साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, अष्टम सर्ग, 1932.
5. आधुनिक हिन्दी काव्य, संपादक : दिनेश प्रसाद सिंह, दिलीप राम, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, 2009, पृष्ठ 8.
6. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 3–4.
7. वही, प्रस्तावना, पृष्ठ 1–2.
8. वही, पृष्ठ 85.
9. वही, पृष्ठ 152.
10. वही, पृष्ठ 155.
11. आधुनिक हिन्दी काव्य, संपादक : दिनेश प्रसाद सिंह, दिलीप राम, पृष्ठ 8.
12. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 5.
13. मगंल घट, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन,1991, पृष्ठ 43.
14. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 29.
15. मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली –3, संपादक : कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 108.
16. मंगल घट, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 26.
17. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन प्रकाशन, पृष्ठ 20.
18. वही, पृष्ठ 174.

संपर्क : 7703925369 संपर्क : 97715 37028

Mail: ruchii.jnu@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 32-36

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नीति साहित्य में राष्ट्र प्रेम

साहिल महाजन
गुरू नानक देव युनिवर्सिटी, अमृतसर।

संस्कृत साहित्य में नीति साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन के लक्ष्य की सिधी नीति के द्वारा ही संभव होती है। मानव यदि नीति वचनों के अनुसार व्यवहार करता है तो अपना अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त करता है और यदि नीति विरूद्ध आचरण करता है तो असफल हो जाता है।

विषय के अनुसार नीति को मुख्यतः दो वगोऊ में विभाजित किया गया है, एक राजनीति और दूसरी धर्मनीति। अर्थ एवं काम विषयक नीति को राजनीति तथा धर्म और मोक्ष विषयक नीति को धर्म नीति माना गया है। राजनीति के अन्तर्गत ही चटनीति तथा साम, दाम, दण्ड और भेदनीति एवं सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैषीभाव एवं समाश्रय रूप इन षडविश प्रयोगात्मक नीतियों का भी समावेश हुआ है। लोक नीति के कुछ भाग धर्म नीति में और कुछ भाग राजनीति में आ जाते हैं। अतः साधारणतः नीति के दो ही वर्ग माने जाते है।

प्रत्येक साहित्य में राष्ट्र के उत्थान और राष्ट्र के निमिष प्रेम परक सिद्धान्त प्राप्त होते हैं क्योंकि एक सुदृढ। राष्ट्र से ही मनुष्य का अस्तित्व स्थायी माना जाता है। संस्कृत नीति साहित्य में नीतिकारों ने राष्ट्र प्रेम को नैतिक मूल्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। राजनीति शास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें राज्य और शासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन होता है। मनुष्य का अपने राष्ट्र के प्रति कैसा कर्तव्य होना चाहिए और राष्ट्र में कैसा विधान या नियम हो जिससे मानव वर्ग में शान्ति रहे और उसका उत्थान हो सके। अतः एक दूसरे के उत्थान के लिए राष्ट्र और मनुष्यों का अन्योन्य संबंध है।

नीति साहित्य में राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करने वाले अनेक ग्रन्थ हैं। इनमें से शुक्रनीति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, विदुरनीति, पंचतंत्र, हितोपदेश, नीतिशतकम, नीतिवाक्याम! तम/चाणक्य नीति दर्पण, कामन्दकीय नीतिसार, नीतिकल्पतः, राजनीति, रत्नाकर, नीति मंजरी आदि प्रमुख ग्रन्थ हैं।

राष्ट्र की उन्नति के लिए मानव जाति में एकता का होना अनिवार्य है। राष्ट्र प्रेमी समाज में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए एकता का अनुसरण करते हैं। नीति शास्त्रों में कहा गया है।

अल्पानामपि वस्तूनां संहति। कार्य साधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्वध्यन्ते मधदन्तिनद्य।। (हितोपदेश. 36 पृ. 46)

अर्थात्, छोटी–छोटी वस्तु के भी एक साथ मिलने पर कार्य सिद्ध हो जाते हैं। देखो तृण भी जब एक सा होकर रस्सी बन जाते हैं तब बड़े–बड़े हाथियों को भी बांध सकते हैं। अतः राष्ट्र के हित के लिए एकत्र होकर कार्य करना चाहिए।

उधम राष्ट्र के निर्माण हेतु प्रत्येक वर्ण में जन्में व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नैतिकता के अनुसार अपना जीवन यापन करें। नीति साहित्य में राष्ट्र की उन्नति के लिए मानव जाति को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार विभागों में विभाजित किया गया है। आचार्य चाणक्य उत्तम राष्ट्र के निर्माण हेतु स्थायी की स्थापना करते हैं। चाणक्य कहते हैं :–

एष त्रयी धर्मश्चतुणाऊ वर्णानामाश्रमणां च।

स्वधर्मस्थापनादौपकारिकद्य।। (कौटिलीय अर्थशास्त्रम/1.2.2 पृ. 10)

अर्थात् त्रयी में निरूपित यह धर्म, चारों वर्गों और चारों आश्रमों को अपने–अपने कर्तव्य में स्थिर रखने के कारण लोक का बहुत ही उपकारक है। नीतिकार के अनुसार अच्छे कर्मों को करते हुए मनुष्य को समाज में रहना चाहिए। नीतिकार कहते हैं :–

सर्वेप्वांमहिंसा सत्यं शौचमनसूया न! शंस्यं क्षमा च (वही 1.2.3/पृ. 11)

अर्थात्, प्रत्येक वर्ण और प्रत्येक आश्रम का धर्म है कि वह किसी भी प्रकार की हिंसा न करे, किसी से ईष्या न करें, दयावान और क्षमाशील बना रहे।

नीति साहित्य में राष्ट्र की कार्यप्रणाली को उत्तम प्रकार से चलाने के लिए अनेक तथ्य उपलब्ध होते हैं। उत्तम राष्ट्र हेतु राजा का कर्तव्य, राजधानी की स्थापना, उत्तराधिकारी, राज्य अविभाजन, राज्य के सप्तौं, मन्त्रि परिषद/राष्ट्रीय सदस्यों का कार्य विभाजन, पदाधिकारियों की नियुक्ति, पदौन्नति, पदच्युति, स्थानान्तरण एवं पदमुक्ति, कोश सचिंय इत्यादि विषयों पर विचार–विमर्श नीति साहित्य में प्राप्त होता है। उत्तम राष्ट्र हेतु शुक्राचार्य राज्य को सात में विभाजित करते हैं।

स्वाम्यमात्यसुहत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि चब

सप्तर्षिमुच्यते राज्यं तत्र भूर्शा न! पद्य स्मृत।। (शुक्रनीति 1.61)

अर्थात् शुक्र के अनुसार राज्य को सप्तर्षि में विभाजित किया गया है। इनके अनुसार राजा, मंत्री, मित्र, कोष, राष्ट्र दुर्ग तथा बल ये राज्य के सात वर्षो से हैं।

राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए नीतिकारों ने मन्त्रिपरिषद पर विशेष बल दिया है। प्राचीन भारत में राष्ट्र संघटन की दृष्टि से मंत्रिपरिषद का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कौटिलीय ने मंत्रियों की सभा को मंत्रिपरिषद नाम संज्ञा दी है। सम्पूर्ण प्रजा, राज्य और यहां तक कि राजा भी मंत्रिपरिषद पर निर्भर होता है। शुक्रनीति के अनुसार एक स्वतंत्र राजा निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी हो सकता है। अनुचित कार्य करने में प्रवृत्त हो सकता है। अतः उस पर अंकुश लगाने के लिए उचित पथ पर उसे प्रेरित करने के लिए योग्य सहायकों का होना अनिवार्य हैं। मन्त्रि परिषद के गठन हेतु शुक्राचार्य कहते हैं।

सुहह्मिर्भ्रात! मिद्य सादृश सभायां पुत्रबान्धवैद्य।

राज्यइत्यं सेनपैश्च सभ्यौश्चिन्तयेत्सदा।। (शुक्रनीति 1.352, पृ. 133)

अर्थात् राजा राज्य और सभा में अपने मित्र, भाई, बेटे, बन्धु–बान्धवः सेनापति एवं सभासदों के साथ मिलकर राजकाज पर विचार–विमर्श करे। इस प्रकार एक सुदृढ। राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

शुक्राचार्य के अनुसार राष्ट्र शब्द से स्थावर अर्थात् वृक्ष पर्वतादि सहित भू–भाग तथा चैतन्य प्राणी का बोध होता है। शुक्र नीतिकार कहते हैं। स्थावरं जर्षिमचिंपि राष्ट्र शब्देन गीयते। (शुक्रनीति 4.3.1, पृ. 13)

एक राष्ट्र के जितने भी अधिकारी होते हैं उन्हें भ्रष्टाचार से मुक्त होकर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। यदि बड़े अधिकारी धन लुब्धता के कारण भ्रष्ट होकर कार्य करेंगे तो उन्हें देखकर छोटे अधिकारी भी वैसा ही वर्तन करेंगें। इस विषय में शुक्राचार्य कहते हैं।

यस्थाश्रितो भवेल्लोकस्द्वदाचरति प्रजा।

भुड्क्ते राष्ट्रगलं सम्यगतो राष्ट्रहितं त्वम्।। (शुक्रनीति 4.3.5/ पृ. 514)

अर्थात् एक राजा जैसा आचरण करता है। उसकी आश्रित प्रजा भी वैसा ही आचरण करती है। अतः राजा भी प्रजाहित पाप पुण्य का गल दुःख या सुख का भली–भांति अनुभव करता है। अतः राष्ट्र हित के लिए सोच विचार करके कार्य करना चाहिए। कौटिलीय ने राजा के चारित्रिक गुणों के संबंध में चाणक्य ने जो सीमाएं निर्धारित की हैं उन का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ नहीं है। मानव को समाज में रहते हुए गुणों को धारण करना चाहिए।

राष्ट्र की व्यवस्था के लिए नीति साहित्य में गुप्तचरों का स्थान बहुत ऊंचा है। गुप्तचरों की राजनीति के क्षेत्र में आवश्यकता इसलिए होती है कि वे शासक को प्रजा के दुःखों, कष्टों और क्लेशों के विषय में बता सके, राज्य की सुव्यवस्था, शासन का पूर्णतया पालन और प्रजा की सुख–शान्ति का बहुत कृछ दायित्व गुप्तचरों पर निर्भर रहता है। कौटिलीय कहते है।

उपधाभिः शुधमात्यवर्गो गूढपुरूषानुत्पादयेत।

कापटिकोदास्थित गृहपतिवैदेहकतापसव्यजिंनान।। सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकीश्च।।

(कौटिलीय अर्थशास्त्रम/ 6.10.1 पृ. 29)

अर्थात् धर्मोपक्ष आदि उपायों के द्वारा अमात्यवर्ग की परीक्षा कर लेने पर राजा को गुप्तचरों की नियुक्ति करनी चाहिए। कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस, सत्री, तीक्ष्ण, रसद और भिक्षुकी आदि अनेक प्रकार के गुप्तचर होते हैं। आचार्य सोमदेव सूरी के अनुसार गुप्तचर राजा के नेत्र होते हैं।

स्वपरमण्डलकार्याकार्यावलोकने चाराश्वक्षूंषि क्षितिपतिनामः।

(नीति वाक्यामृतम/ 14.1 पृ. 74)

अर्थात् अपने और शत्रु के मण्डल का भला और बुरा काम देखने के लिए राजाओं के गुप्तचर ही उनके नेत्र होते हैं।

राष्ट्र हित के लिए राजकुमारों को अपने पिता के प्रति सम्पूर्ण ई से समर्पित होना चाहिए अपितु पारिवारिक जीवन में भी मनुष्य को अपने माता–पिता की आज्ञा का पालन करना चाहिए। परिवार राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है जैसा परिवार होगा वैसे ही राष्ट्र का निर्माण होगा। शुक्राचार्य कहते है :–

पितुराज्ञोल्लत्र् घनेन प्राप्यापि पदमुतः/

तस्माद् भ्रष्टा भवन्तीह दासवद्राजपुत्रकाः।। (शुक्र नीति. 2.41 पृ. 161)

अर्थात् इस संसार में राजकुमार उत्कृष्ट पद पाकर भी पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके दास की तरह दुःखभागी बन जाते हैं। जैसे राजा ययाति के पुत्र यदु इत्यादि एवं विश्वामित्र के पुत्र माच्छन्दा प्रभृति पिता की आज्ञा का उल्लंघन करने से उनके शाप से कुते का मांस भोजन करने वाले हो गये थे। अतः पुत्र को सदैव शरीर, वाचा और मन से पिता की सेवा में तत्पर रहना चाहिए।

नीति साहित्य के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र के गौरव को अनुलक्षित करते हुए अपने कर्तव्य कर्म का पालन करना चाहिए। अपने नैतिक कर्म को करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि समाज में अशांति न फैले और किसी को कोई हानि न पहुंचे। शुक्राचार्य कहते है :–

यत्कार्र्ये यो नियुक्तः स भूयात/ तत्कार्यतत्पर।
नान्याधिकारमन्विच्छेन्नाभ्यसूर्येच्च केनचित्।। (शुक्रनीति 2.228, पृ. 226)

अर्थात् जो व्यक्ति जिस कार्य के लिए नियुक्त किया गया है उसे दशचित होकर उस कार्य को करना चाहिए किसी का अधिकार छीनने की न तो इच्छा करनी चाहिए और ना ही किसी को हानि पहुंचानी चाहिए। अनुचित क्रियाओं के माध्यम से आजीविका प्राप्त करना राष्ट्र के लिए कलंक की न्यायी होता है। मनुष्य को लालच का परित्याग करके आजीविका को प्राप्त करना चाहिए। अनुचित क्रियाओं के माध्यम से लोगों का शोषण करना अपराध कहलाता है जिससे मनुष्य के जीवन में और समाज में अशांति फैल जाती है। इस विषय में शुक्राचार्य कहते हैं।

अपि स्थाणुवदासीत शुष्यन ्परिगत। क्षुधा।
न त्वेवानर्थसम्पन्नां वृक्षिमीहेत पण्डितः।। (शुक्रनीति 2.227, पृ. 226)

अर्थात् बुद्विमान् व्यक्ति भले ही भूख से सूखकर ठूंठ की तरह शांत हो जाये परन्तु अनर्थ से भरी आजीविका का स्वीकार कभी भी ना करे। राष्ट्र हित के लिए मनुष्य को पाप रूप कर्मों का त्याग कर देना चाहिए। किसी संस्था या राष्ट्र के निर्माण के लिए सज्जन व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योग रहता है। सत्संगति समाज और राष्ट्र के लिए उत्तम भूमिका निभाती है। सत्संगति से युक्त सज्जन मनुष्य देवता के समान माने जाते हैं और जो अपने स्वार्थ के लिए कार्य करते हैं वह समाज में राक्षस की न्यायी होते हैं और राष्ट्र की उन्नति में बाधक होते हैं। नीतिकार भर्तृहरि कहते हैं :–

एके सत्पुरूषाः पराथघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुध्मभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
ते मी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये।
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के नं जानी महे। (नीति शतकम् 75, पृ. 69)

अर्थात् राजा भर्तृहरि कहते हैं कि ऐसे कुछ सज्जन होते हैं जो स्वार्थ को त्याग का दूसरों का कार्य पूरा करने वाले होते हैं। जो स्वार्थ के बिना बाधा पड़े दूसरों के लिए उत्तम करने वाले हैं, वे सामान्य हैं, जो स्वार्थ के लिए दूसरे के हित को नष्ट करने वाले हैं वे लोग मनुष्य रूपी राक्षस हैं परन्तु जो व्यर्थ में दूसरों के हित का नाश करते हैं, वे कौन हैं हम नहीं जानते हैं। उत्तम राष्ट्र के निर्माण हेतु नीतिकारों ने प्रेम वर्तन का महात्म्य बतलाया है। जिस राष्ट्र के लोग ईर्ष्या को त्याग कर प्रेम को धारण करके एक दूसरे की सहायता करते हैं वह राष्ट्र शीघ्र ही वृद्धि को प्राप्त कर लेता है। शुक्राचार्य कहते हैं :–

मातृपितृगुरूस्वामिभ्रातृपुत्रसखिष्वपि।
न विरूध्येन्नापद्यर्यान्मनसापि क्षणं क्वचित्।। (शुक्रनीति 3.5, पृ. 321)

अर्थात् मां, बाप, गुरू, मालिक, भाई, बेटा तथा मित्रों का मन से भी विरोध या उपकार नहीं करना चाहिए। इन सब का विरोध करने से परिवार में और राष्ट्र में अशांन्ति का निर्माण होगा।

नीति साहित्य में राष्ट्र की वृद्धि पर अधिक बल दिया गया है। राष्ट्र की वृद्धि के लिए प्रजा की रक्षा, मर्यादित मात्रा में कर, प्रजा के हित के लिए नियमों को लगाना, कोश संचय करना, राजा का नीतिकृशल और क्षमाशील होना, सैन्य बल में वृद्धि का होना जरूरी होता है। शुक्राचार्य कहते हैं :–

यज्ञार्थ द्रव्यमुत्पन्नं यज्ञः स्वर्गसुखायुषे।

अ़र्यभावो बलं कोशो राष्ट्र वृद्ध त्रयं त्विदम्।। (शुक्रनीति 4.2.16, पृ. 470)

अर्थात् यज्ञ के लिए धन उत्पन्न हुआ है और यज्ञ स्वर्ग सुख एवं आयु वृद्धि के लिए है तथा शत्रु का अभाव सेना एवं कोश, ये तीनों राष्ट्र की वृद्धि के लिए होते हैं।

प्रत्येक राष्ट्र में नशे के कारण युवा पीढी का नाश हो रहा है। प्रत्येक परिवार और राष्ट्र के लिए यह विकट समस्या है। इस विषय में शुक्र नीतिकार निर्देश करते हुए कहते हैं :–

गजिांगृहं पृथग ग्रामात तस्मिन् रक्षेतु मधपान।

न दिवा मद्यपान तु राष्ट्रे कृर्यादि कश्चन।। (शुक्रनीति 4.4, पृ. 568)

अर्थात् मदिरालय को गांव से बाहर बनाना चाहिए और उनमें शराबियों को रखना चाहिए। राज्य में किसी को भी दिन में शराब पीने की स्वीकृति नहीं देनी चाहिए। राष्ट्र के हित के लिए अधिकारियों के साथ–साथ नागरिकों को भी कार्य करना चाहिए। आचार्य चाणक्य कहते है :–

समाहर्तवन्नागरिको नगरं चिन्तयेत्। (कौटिलीय अर्थशास्त्रम् 55.36.1, पृ. 245)

अर्थात् सामहर्शा की तरह नागरिक अधिकारी भी नगर के प्रबन्ध की चिन्ता करे।

इस प्रकार नीति साहित्य में यत्र–तत्र राष्ट्र प्रेम दृष्टिगोचर होता है। नीति साहित्य राष्ट्र के अधिकार और नागरिकों के कर्तव्यों और दायित्वों की व्याख्या करता है। सार्वजनिक हित को लक्ष्य में रखकर व्यक्तियों के आचरण का नियमन करता है। नीति शास्त्र को आधार मानकर राष्ट्र की संस्थाओं का संगठन, नियमों और कानून का निर्माण किया जा सकता है। नीति शास्त्र का अध्ययन करके सामजोपयोगी कानून और नियमों को बनाकर उन्हें राज्य में प्रचलित करना चाहिए और बल प्रयोग के द्वारा उनका नागरिकों से पालन करवाने का प्रयास करना चाहिए। जो इन नियमों का उल्लंघन करे उन्हें शासन के द्वारा दण्ड प्रदान किया जाना चाहिए। नीति साहित्य का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र में व्यवस्था को स्थापित करना है। अतः प्रत्येक मनुष्य को नीति का अध्ययन करना चाहिए।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 37-42

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय भाषाएँ और अनुवाद

पूनम

शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, सी–82 मजलिस पार्क, दिल्ली।

भाषा समाज और इतर समाज से संवाद का सबसे सुगम और विश्वसनीय माध्यम हैं। भाषा मात्र संप्रेषण या संचार का माध्यम नहीं है। यह राष्ट्रीय पहचान एवं जातीय अभिजात्य की पहचान भी है। अतीत से लेकर वर्तमान समय तक प्रत्येक भाषा इसकी द्योतक रही है। प्राचीन भारत में संस्कृत मध्यकाल में फारसी और अब भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेज़ी भाषा संप्रेषण एवं संवाद की भाषा है।

भारत सदियों से गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। समस्त विश्व भारतीय चिंतन, परंपरा, साहित्य, दार्शनिकता, इतिहास के समक्ष नतमस्तक रहा है। भारत अनेक भाषाओं का विशाल देश है और भारतीय भाषाएँ प्राचीन काल से ही विकसित और पल्लवित होती रही है। भाषागत विविधता के बाद भी भाषाओं का सामाजिक–सांस्कृतिक ताना–बाना मिलता जुलता है। समाज की ऐतिहासिक परम्परा, सांस्कृतिक मूल्य और काव्य संवेदना समानधर्मी है। साहित्य की भाव–चेतना और शिल्पगत सौंदर्य में समानता है। भारतवर्ष की बहुजातीयता बहु सांस्कृतिकता और बहुभाषिकता ने साहित्यिक–सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों और संवेदनाओं का ह्रास नहीं किया बल्कि अनुभूति और विचारों के स्थल पर एक दूसरे को आंतरिक रूप से जोड़ने का कार्य किया है। सभी भारतीय भाषाओं का अपना स्वतंत्र अस्तित्व और समृद्ध साहित्य परंपरा है। जैसे तमिल का संगम साहित्य, मलयालम का संदेश काव्य, मराठी के पवाड़े, गुजराती के आख्यान, बंगला का मंगलकाव्य, असमिया के बड्डगीत, पंजाबी के वीरगीत, उर्दू की गज़ल और हिन्दी का रीतिकाव्य और छायावादी काव्य आदि दिखाई देती है।

संस्कृत महाकाव्य, मिथकेतिहास, रामायण, महाभारत, भागवत, पुराण, उपनिषद्, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, जैन–बौद्ध साहित्य, स्मृतियाँ प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र आदि सभी प्राचीन साहित्य की अमिट छाप सभी भारतीय भाषाओं पर दिखाई देती है, भारतीय भाषाओं की प्रारंभिक रचनाएँ अधिकतर अनूदित मिलती हैं जैसे तेलुगु में नन्नय का 'महाभारत', कन्नड़ में नृपतुंग का 'कविराज मार्ग' तथा मलयालम का 'रामचरितम्' (रामकर्मा) जो मूलतः अनुवाद हैं। तमिल में कम्ब रामायण, तेलुगु में रंगनाथ रामायण, कन्नड़ में पम्प रामायण, मलयालम में अध्यात्य रामायण, मराठी में मोरापंत की रामकथा, बंगाल में कृतिवास रामायण, असमिया में माधव कंदली की रामायण, ओड़िया में विलंका रामायण और हिन्दी में तुलसी रामायण आदि ये रचनाएँ रामकथा के ही वैविध्यपूर्ण भावानुवाद, कथांतरण, रूपांतरण हैं।

भारत एक बृहत् भाषायी क्षेत्र है। भारत में चार भाषा परिवारों की 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं। ये चार

भाषा परिवार है :–

(क) ऑस्ट्रिक भाषा परिवार

(ख) तिब्बती–चीनी भाषा परिवार

(ग) द्रविड़ भाषा परिवार

(घ) भारोपीय भाषा परिवार

भारोपीय परिवार संसार का सबसे महत्वपूर्ण भाषा परिवार है। इसका विस्तार भारतवर्ष से लेकर यूरोप तक है। इस परिवार की भाषाओं को दो वर्गों में विभक्त किया गया है– केतुम् और सतम्। इनमें से सतम् वर्ग के अंतर्गत भारत–ईरानी या आर्य शाखा है। इस भारत–ईरानी शाखा की उपशाखाएँ ईरानी, दरद और भारतीय आर्य भाषाएँ हैं। इनमें से दरद और भारतीय आर्यभाषा उपशाखाओं की भाषाएँ भारतवर्ष में बोली जाती हैं। तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम द्रविड़ भाषा परिवार की हैं। मिर्जा और मणिपुरी चीनी–तिब्बती परिवार की भाषाएँ है। कोल, मुंडा और संथाली भाषाएँ आस्ट्रिक परिवार की हैं।

भारत के अधिकांश भू–भाग में भारतीय आर्य उपशाखा की भाषाएँ बोली जाती हैं। भारतीय संविधान द्वारा अनुसूचित भाषाओं में प्रधान नौ भाषाएँ– असमिया, ओड़िया, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, सिंधी हिन्दी और उर्दू इसी उपशाखा की भाषाएँ हैं। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का मूल आर्यों की प्राचीन भाषा संस्कृत है। ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से भारतीय आर्यभाषा शाखा को तीन कालों में विभक्त किया गया है–

1. प्राचीन आर्य भाषा काल (2000 ई. पू. - 500 ई. पू.)

(क) वैदिक भाषा काल (2000 ई. पू. – 1500 ई. पू.)

(ख) ब्राह्मण काल (1500 ई. पू. – 1000 ई. पू.)

(ग) साहित्यिक संस्कृत काल (1000 ई. पू. – 500 ई. पू.)

2. मध्यकालीन आर्यभाषा काल (500 ई. पू. - 1000 ई. पू.)

(क) पाली भाषा काल (500 ई. पू. – 001 ई. पू.)

(ख) प्राकृत भाषा काल (001 – 500 ई. पू.)

(ग) अपभ्रंश भाषाकाल (500 ई. – 1000 ई. पू.)

3. आधुनिक आर्यभाषा काल (1000 ई. - 2010 ई.)

(क) प्राचीन अपभ्रंश से प्रभावित रूप (1000 ई. – 1500 ई. पू)

(ख) मध्ययुग (1500 ई. – अब तक)

भारत की अधिकांश भाषाएँ चाहे वे किसी भी भाषा परिवार से सम्बन्धित हो, उनमें अद्‌भुत समानता है। भारत की 22 प्रमुख भाषाएँ जिनकी गणना भारतीय संविधान की अष्टम् अनुसूची में हैं, वे तीन भाषा परिवारों, भारोपीय परिवार, द्रविड़ परिवार तथा तिब्बती–चीनी परिवार की भाषाएँ हैं चौथे भाषा परिवार मुण्डा परिवार की प्रधान भारतीय भाषा सन्थाली है। भारोपीय परिवार की भारतीय भाषाएँ अपने परिवार की अन्य भाषाओं की अपेक्षा भारत के दूसरे परिवार की भाषाओं से समानता रखती हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी, भारोपीय परिवार की आधुनिक भारतीय आर्यभाषा हैं। उसमें तथा द्रविड़ परिवार की भाषा तमिल में कई समानताएँ हैं। अपने परिवार की भाषाओं के अतिरिक्त विभिन्न भाषा परिवारों की भारतीय भाषाओं की यह समानता विभिन्नता में एकता के सिद्धांत को पुष्ट

करती है।

भारत में विभिन्न भाषाओं में विपुल साहित्यिक संसार की रचना हुई। इन रचनाओं के विभिन्न भाषाओं में पारस्परिक आदान–प्रदान के लिए एक भाषिक उपकरण की आवश्यकता होती है। 'अनुवाद' ही वह उपकरण, साधन और माध्यम है जिससे भारतीय साहित्य की विपुल धरोहर और समकालीन रचनाशीलता को एक दूसरे के सम्मुख रखा जा सकता है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य को एकभाषिक संप्रेषणीयता की स्थिति से द्विभाषी अथवा बहुभाषी संप्रेषणीयता की स्थिति में लाया जा सकता है।

अनुवाद का शब्दिक अर्थ होता है– 'पुनरूकथन' अथवा 'पुनरुक्ति'। इसमें एक ही भाषा में व्यक्त अर्थ की पुनरुक्ति दूसरी भाषा में होती है। अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाएँ आती हैं। पहली 'मूल भाषा' या 'स्रोत भाषा जिसका अनुवाद किया जाता है। दूसरा जिस भाषा में सामग्री अनूदित की जाती है उसे 'लक्ष्य भाषा' कहा जाता है। अनुवाद का जन्म मूल रूप से प्राचीन काल से ही अदान–प्रदान की आवश्यकता के कारण हुआ 'अनुवाद' शब्द संस्कृत के 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय एवं अनु उपसर्ग लगाने से बना है। 'अनु' उपसर्ग पीछे, बाद में आदि अर्थों का सूचक है। जबकि संस्कृत की 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने से निर्मित 'वाद' का अर्थ है– कथन, विचार–विमर्श, बोलना, भाषण आदि। इस प्रकार पूर्व कथित का अनुसरण करके अभिव्यक्त किए गए कथन को अनुवाद कहते हैं।

चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ 'प्राप्तस्य पुनः कथनें' या 'ज्ञातार्थस्य प्रति पादेने' अर्थात् 'पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना' दिया गया है। भारतीय दर्शन ग्रंथों में भी अनुवाद शब्द का प्रयोग मिलता है। 'न्याय और मीमांसा' दर्शन में – 'पहले से कही गई किसी बात के समर्थन में कहे गए दूसरे वचन अथवा एक ही बात को अधिक स्पष्ट रूप से पुनः व्याख्या करने को अनुवाद कहा जाता था।''

अंग्रेजी में ''अनुवाद'' का समतुल्य 'Translation' शब्द है। जो अंग्रेज़ी के Translate शब्द का संज्ञा रूप है। Translate शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द Translatum से हुई है जो Transtlatum से मिलकर बना है। इस प्रकार 'Trans' का अर्थ है– Through, Across अर्थात् उस पार या दूसरी ओर तथा 'Latum' का अर्थ है– To Carry अर्थात् दूसरी ओर ले जाना।

इस प्रकार अंग्रेज़ी के Translation शब्द के समतुल्य प्रयुक्त होने वाले 'अनुवाद' शब्द का अर्थ है किसी एक भाषा में निरुपित भावों, विचारों को अन्य भाषा में प्रस्तुत करना।

विभिन्न विद्वानों ने अपने मतानुसार 'अनुवाद' की अलग–अलग परिभाषाएँ दी है–

प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान यूजेन नाइडा के शब्दों में–

'Translation Consists in Producing in The Receptor language the closet natural equivaleat to message of the source language.'

अर्थात् – अनुवाद स्रोतपाठ का सन्देश पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम स्वाभाविक तथा तुलनात्मक अर्थ प्रकट करता है।

जे.सी. कैटफोड के शब्दों में – एक ही भाषा के पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री में प्रतिस्थापना करना ही अनुवाद है।

सैमुअल जॉनसन के शब्दों में – ''मूल भाषा की सामग्री को भावों की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा

में बदल देना ही अनुवाद है।''

मूलतः अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाओं की अनिवार्यता है। अनुवाद प्रक्रिया में अर्थ प्राण तत्व है। अनुवाद प्रक्रिया अनुद्य एवं अनूदित पाठ के अर्थ–सामीप्य को सार्थक बनाने की है। यदि अनूदित पाठ में स्रोत भाषा के पाठ का अर्थ अक्षुण्ण हो और यदि प्रभाव की दृष्टि से वह मूल के निकट तथा अनुरूप हो तो अनूदित पाठ भी मौलिक पाठ की ही तरह पाठ को आकर्षित करेगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उन्हीं के द्वारा बांग्ला से अंग्रेज़ी में अनूदित 'गीतांजलि' के पाठ के लिए 'नोबल पुरस्कार' (1913) प्राप्त हुआ था।

अनुवाद की शक्ति अपरिमेय और अजेय है। भारतीय साहित्य में कुछ कालजयी कृतियों के अनुवाद मूलकृति का विश्वास दिलाती है। जैसे शरतचंद्र 'देवदास', 'चरित्रहीन' और श्रीकांत, विराण बहू, बंकिम चन्द्र का आनंद मठ, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का 'गोरा' और महाश्वेता देवी कृत 'जंगल के दावेदार' आदि कृतियों के अनूदित पाठ प्रामाणिक अनुवाद के उदाहरण है।

मनुष्य एक बुद्धि जीवी प्राणी हैं वह अत्यधिक ज्ञान प्राप्त करने का जिज्ञासू है। इसलिए वह अपने परिचित समाज से निकलकर अपरिचित्त समाज में जाकर वहाँ के भाषा–बोली, रहन–सहन, आचार–विचार, रीति–रिवाज, खान–पान आदि कई चीज़ों को जानना, समझना और सीखना चाहता है। जिसके लिए भाषा और बोली की आवश्यकता है। कहा भी जाता है– ''चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर वाणी।''

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि दूसरे की भाषा और बोली को जानने के लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है।

विश्व के किसी भी देश की भाषा में उपलब्ध ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, शास्त्र संगीत कला आदि को दूसरे देश की भाषा में अनूदित करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

अनुवाद के भेद और प्रकार :–

अनुवाद के कई भेद और प्रकार है। डॉ. जी. गोपीनाथ जी ने 'विषय वस्तु' एवं 'प्रकृति की दृष्टि' के आधार पर अनुवाद का वर्गीकरण किया है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद के चार भेद किए है :– गद्यत्व–पदत्व, साहित्यिक विधा, विषय तथा अनुवाद के आधार पर।

विषयवस्तु के आधार पर :–

(क) साहित्यिक अनुवाद– इसके अंतर्गत काव्यानुवाद, कथा साहित्य का अनुवाद, नाटकीय अनुवाद तथा गद्य में जीवनी, आत्मकथा, निबंध आदि।

(ख) साहित्येतर अनुवाद– इसके अंतर्गत विज्ञान–तकनीकी अनुवाद, समाजशास्त्रीय अनुवाद, संचार, प्रशासनिक आदि अनुवाद आते हैं।

प्रकृति के दृष्टि से अनुवाद प्रकार – शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद रूपांतरण, आशुनुवाद।

भारतीय भाषाओं के संदर्भ में अनुवाद का महत्त्व :–

भारतीय भाषाएँ संस्कृति की वाहिका है। तो अनुवाद सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रक्रिया को सम्पन्न कर सांस्कृतिक एकता को बल प्रदान करती है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न राज्यों, समुदायों, प्रान्तों की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों के प्रति देश के अन्य क्षेत्रों के लोगों में विशेष संवेदना और भावनात्मक लगाव पैदा

होता है। अनुवाद साहित्य स्तर पर एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करता है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य में अंतनिर्हित मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों के प्रति जागरूकता पैदा कर मानवीय गुणों को संवर्धित किया जा सकता है। अनुवाद ही वह माध्यम है जो विभिन्न भाषा में रचित साहित्य का आस्वादन करा सकता है। संस्कृत में रचित वैदिक साहित्य और साथ ही नाना पुराण आदि ज्ञान के ग्रंथ अनुवाद के द्वारा ही जन सामान्य को उपलब्ध हो सके हैं। अनुवाद के बिना ज्ञान व प्रसार असंभव है। भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर का अनुवाद विदेशी भाषाओं में भी हुआ है और विदेशी समाज भी प्राचीन भारतीय भाषाओं के साहित्य के अनुवाद से लाभान्वित हो रहा है। मध्यकालीन भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य का प्रचार–प्रसार अनुवाद द्वारा ही जन मानस तक पहुँचा। भक्ति काल का अधिकांश साहित्य अलिखित और जनश्रुति के रूप में उपलब्ध था जो मौखिक रूप में विभिन्न स्थलों और जनमानस तक पहुँचा। उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के संतों एवं आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धांत और मतों का प्रचार–प्रसार अनुवाद द्वारा ही संभव हो पाया। मध्यकालीन साहित्य में वैचारिक समानता तो है लेकिन भाषिक समस्या के कारण राष्ट्रीय चेतना का विकास असंभव था। इस गतिरोध को अनुवाद प्रक्रिया के द्वारा दूर किया गया। संभवतः कहा जा सकता है कि अनुवाद परंपरा किसी न किसी रूप में प्राचीन काल से ही चली आ रही है। यह कोई नई विधा नहीं है। तभी कबीर जायसी, सूर, तुलसी, मीरा आदि के पद मूल भाषा में रचित तथा गेय होने के साथ–साथ भारत की अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हुए और उतने ही लोकप्रिय हैं जितने मूल भाषा में। दक्षिण के अन्वमाचार्य, त्यागराय, पोतना, वेमना, आन्डाल, अक्क मादन्न, मोल्ल अव्वैय्यार आदि के साथ आलवारों के संकीर्तन, तमिल संगम साहित्य आदि अनुवाद के माध्यम से अपनी गरिमा और महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं।

रामानुज, रामानन्द, वल्लभाचार्य, शंकराचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य आदि दार्शनिक आचार्यों के सैद्धांतिक विचार, उत्तर भारत के साधु–संत और महात्माओं के संदेश उपनिषद् के विचार उत्तर से दक्षिण और भक्ति अनुवाद के माध्यम से दक्षिण से उत्तर की ओर यात्रा करती है।

आधुनिक काल में भारतेन्दु ने अपने सहयोग और मंडल की सहायता से साहित्य को जनता से जोड़ने का प्रयत्न किया और बड़ी मात्रा में पाश्चात्य साहित्य का अनुवाद किया। आधुनिक काल में भारतीय साहित्य केवल भारतीय भाषाओं के अनुवाद से ही नहीं बल्कि पाश्चात्य साहित्य के अनुवादों से भी समृद्ध हुआ।

पद्य साहित्य का अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं में हुआ जैसे प्रिय प्रवास, कामायनी, साकेत, कुरूक्षेत्र आदि का। गद्य साहित्य के अंतर्गत कहानी उपन्यास, नाटक, एकांकी जीवनी आत्मकथा संस्मरण, निबंध आदि साहित्यिक विद्याओं का अंतरभाषिक अनुवाद सामाजिक परिवेश को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

तमिल भाषा के संदर्भ में महाकवि सुब्रह्ममण्य भारती कहते हैं कि ''जितनी भाषाओं को हम जानते हैं तमिल समान मीठी कोई भाषा नहीं है। अगर इतनी समृद्ध भाषा का साहित्य सिर्फ तमिलनाडु की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित रह जाता है तो लोग इस ज्ञान भंडार से वंचित रह जाते। जंगल में मोर नाचा किसने देखा की तरह, खान में पड़े हीरे की तरह, हरिद्वार तक पहाड़ों की घाटियों में बहने वाली गंगा की तरह अन्य भाषा–भाषियों की पहुँच के बाहर यह साहित्य रह गया होता। ताराशने पर चमकने वाले हीरे की तरह अनूदित होने पर ही किसी साहित्य का मान और सम्मान बढ़ता है। अनुवादों की परंपरा अगर नहीं होती तो हम मोपासां, टॉलस्टॉय, दोस्तोएव्स्की, होमर जैसे महानुभावों की रचनाओं से अनभिज्ञ रह गए होते।''

महाकवि सुब्रह्मण्य भारती, तमिल भाषा और अनुवाद के संदर्भ में जो भी कहते है वह केवल तमिल भाषा तक ही सीमित नहीं बल्कि भारत की सभी भाषाओं पर लागू होती है। भारतीय भाषाएँ प्राचीन काल से पल्लवित और विकसित हो रही है और नवीनता को ग्रहण करने की क्षमता रखती है।

इस प्रकार अनुवाद भारतीय भाषाओं के विकास और साहित्य के आदान–प्रदान के लिए आवश्यक कहा जा सकता है। अनुवाद के बिना मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास धीमा हो जाएगा।

मो. 7042130142

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 43-46

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राष्ट्रकवि भारती और पत्रकारिता

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
वेल्स विश्वविद्यालय, चेन्नै।

तमिल के सुप्रसिद्ध महाकवि भारतियार, मात्र कवि नहीं हैं, वे तमिल के प्रख्यात एवं सफल गद्यकार, निबंधकार तथा पत्रकार भी रहे। तमिल पत्रकारिता द्वारा राष्ट्रीय एकता के लिए उनके अभूतपूर्व योगदान के बारे में सामान्य परिचय यहां साझा करना चाहती हूं।

भारती का प्रथम प्रकाशन : सन 1904 जुलाई में 'विवेक भानु' नामक तमिल पत्रिका में भारती की कविता 'तनिमै इरक्कम' प्रथम बार प्रकाशित हुई।

भारती की पत्रकारिता :–

राष्ट्रकवि भारती ने, 'सुदेस मित्रन' नामक दक्षिण भारत की प्रथम पत्रिका में सन 1904 नवंबर से 1906 अगस्त तक, पुनः सन 1920 अगस्त से 1921 सितंबर तक, अपनी आखिरी सांस तक काम किया था। आम जनता में राष्ट्र भक्ति की भावना जगाने के लिए वे पत्रिकाओं में अधिकांशतः राजनीति तथा राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत कविता व लेख लिखते थे। साथ–साथ साहित्यिक कविता एवं लेख भी लिख रहे थे। 'चक्रवर्तीनी', 'इंडिया', 'विजया', 'सूर्योदयम', 'कर्मयोगी', 'धर्मम', नामक विभिन्न तमिल पत्रिकाओं में वे काम करते थे।

'बालभारती', 'यंग इंडिया' नामक अन्य अंग्रेजी पत्रिकाओं में भी उन्होंने काम किया था। राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति, स्वतंत्रता के प्रति जागरण, राजनीति, धर्म, स्त्री–प्रगति, आदि इन पत्रिकाओं के मूल उद्देश्य थे। 'सर्वजन मित्रन', 'दी हिंदू', 'ज्ञानभानु', 'कामन वील', 'आर्या', 'मद्रास स्टैंडर्ड', 'न्यू इंडिया', 'पेण कल्वि', 'कलैमगल', 'देशभक्तन', 'धन वैश्य ऊलियन', 'कथा रत्नाकरम', आदि पत्रिकाओं के लिए भी भारती लिखते थे।

भारती की पत्रिकारिता की भाषा शैली :–

'स्वतंत्रता प्राप्ति' ही भारती के समय में जन सामान्य का एकमात्र लक्ष्य रहा। इस कारण, अपनी प्रस्तुति में मानक भाषा प्रयोग की ओर किसी की ध्यान नहीं रही। नेता एवं साहित्यकार अपने लेख और कविताओं द्वारा अपनी भावनाओं को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए सामान्य बोलचाल की भाषा अपनाते थे। भारती ने भी इस सिद्धांत को अपनाया। अतः उनकी भाषा शैली, आम आदमी की सामान्य बोलचाल की भाषा ही रही।

इस दृष्टि में उनकी यही मान्यता है कि कथा, तर्क, शास्त्र, आदि, किसी भी क्षेत्र हो, अपने विचार, आम आदमी तक पहुंचने में सफलता हासिल करने के लिए यथासंभव, बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना ही उत्तम है। तुम्हारी भाषा अंग्रेजी भाषा न जानने वाले की समझ में भी आना चाहिए, तभी आपकी प्रस्तुति फायदेमंद रहेगी।

भारती के समय में तमिल भाषा के प्रयोग में अंग्रेजी व संस्कृत शब्दों की बहुलता रही है। फिर भी भारती ने यथासंभव मात्र शुद्ध तमिल शब्दों में अपने विचारों को व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। तमिल पत्रिका की भाषा शैली में अंग्रेजी शैली का प्रभाव भारती को मान्य नहीं है।

उनकी शैली में हास्य रस की प्रधानता रही है। इसी हास्य रस की शैली को अपनाकर सहित्यकार कल्कीने, 'विगडन' नामक पत्रिका में सफलता हासिल किया है।

समाचार की प्रस्तुति :-

पत्रकारिता पाश्चात्य साहित्य की देन है। स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने के लिए पत्रकारिता नामक नई विधा का सफल प्रयोग समग्र भारत में जोर शोर से हो रहा था। पत्रकारिता का विकास अत्यंत तेज गति में हो रहा था। अर्थात पत्रकारिता अपनी युवावस्था में थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किसी भी फायदेमंद समाचार की प्रस्तुति आम आदमी तक पहुंचाना स्वतंत्रता सेनानियों का मूल उद्देश्य रहा था। पत्रकारिता इस दृष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऐसी अवस्था में समाचार के साथ–साथ उस समाचार की अच्छाई और बुराई पर भी प्रकाश डालना संपादक व संवाददाता के परम कर्तव्य हैं। भारती ने इस कर्तव्य को बखूबी निभाया है। इसका उदाहरण हमें भारती की इस प्रस्तुति से स्पष्ट होता है। एक बार एक अंग्रेज कलेक्टर ने तमिलनाडु के तंजावुर शहर के 'मानम्बु चावड़ी' नामक जगह में हरिकथा प्रवचन पर बंदिश लगाया। आम आदमी को उनकी स्वतंत्रता की जानकारी पर प्रकाश डालने के लिए तथा अंग्रेज के विरुद्ध अपनी बुलंद आवाज सरल शब्दों से भारती ने इस भांति उठाया, कि जिस प्रकार अंग्रेज साहब को अपने बंगले में सोने का संपूर्ण अधिकार है, उसी प्रकार हमें अपने मंदिरों में हरिकथा कहने का संपूर्ण अधिकार है।

संपादक के नाम पत्र :-

भारती ने पाठकों को संपादक के नाम पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने अपनी पत्रिकाओं में अंग्रेज सरकार द्वारा जनता के प्रति अत्याचार व दुराचार, स्वतंत्रता के प्रति जन जागरण की भावना, आदि से जुड़ी पाठकों की चिट्ठियों का प्रकाशन किया और पाठकों की इच्छा के अनुसार उनके नाम को भी गोपनीय रखा है। भारती ने वा.वे.सु. अय्यर, टी.यस.यस. राजन, जैसे लंदन पाठकों के पत्रों का प्रकाशन 'लंदन कडिदम' के नाम से अलग से प्रकाशित किया है। भारती ने पाठकों द्वारा प्राप्त समाचार के लिए उन्हें भुगतान राशि देने की घोषणा भी किया है।

भारती, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्रपाल, आदि उग्रवाद नेताओं के अनन्य भक्त एवं अनुयाई हैं। अतः भारती ने अंग्रेजों के खिलाफ लिखते समय निर्भीक होकर तीखे शब्दों को अपनाया तथा पाठकों में स्वतंत्रता की भावना को जगाया है। 'इंडिया', 'विजया', 'सूर्योदयम', नामक पत्रिकाओं में इसकी झलक हमें मिलती है। भारती की इस लेखन शैली को तिरु.वी.का., भारतिदासन, संघ सुब्रमण्यम, सोक्कलिंगम, आदि विद्वानों ने भी अपनाया है।

तमिल पत्रिकाओं में अंग्रेजी शीर्षक का निष्कासन :-

उस जमाने में तमिल पत्रिकाओं में समाचार का शीर्षक लिखते समय, सर्वप्रथम अंग्रेजी में लिखकर उसके नीचे तमिल में लिखने की परंपरा रही। इस परंपरा को सर्वप्रथम तोड़ने का श्रेय भारती को ही है। 1905 से 07

तक, 'चक्रवर्तिनी', 'इंदिया' आदि पत्रिकाओं में अंग्रेजी में शीर्षक लिखने की पद्धति रही। उसके बाद भारती मात्र तमिल में शीर्षक देने लगे। तमिल पत्रिकाओं में सर्वप्रथम भारती ने ही तमिल संख्या, तमिल माह, आदि का प्रयोग किया है। भारती ने 'इंडिया' पत्रिका में अंग्रेजी दिनांक के साथ–साथ तमिल संख्या में भी दिनांक लिखने लगा। साथ ही पृष्ठ संख्या को तमिल संख्या में भी लिखने लगे। बाद में यही पद्धति तमिल पत्रिकावों में प्रचलित हुई।

पत्रिकाओं में भारती की कविता व साहित्य :–

भारती 'सुदेस मित्रन', 'चक्रवर्तिनी' आदि पत्रिकाओं में, देशभक्ति लेख व कविताओं के अलावा, साहित्यिक लेख व कविताओं को भी लिखते थे। विशेषतः इंडिया पत्रिका में साहित्यिक कविता, लेखव आलोचनाएं अधिक मात्रा में लिखते थे।

पत्रिकाओं के लिए भारती द्वारा प्रयुक्त उपनाम :–

देशवासियों में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने हेतु अंग्रेज के विरुद्ध लेख लिखते समय अपनी पहचान गुप्त रखने के लिए भारती ने कई उपनामों का प्रयोग किया है। उन्होंने 'इलसै सुब्रमण्यन, सी.सुब्रह्मण्य भारती, सी. सु.भारती, वेदांती, नित्य वीरर, उत्तम देसाभिमानी, शेल्ली दासन, रामदासन, कालिदासन, शक्तिदासन, सावित्री, आदि उपनाम में लिखने लगा। कभी अपनी पत्नी चेल्लम्माल के नाम में भी लिखे हैं। इस प्रथा को अपनाकर सहित्यकार वा.वे.सु. अय्यर अपनी पत्नी मीनाक्षी अम्माल तथा सहित्यकार नीलकंड ब्रह्मचारी अपनी पत्नी कमलनायगी, के नाम में लिखने लगे।

पाठकों के लिए वार्षिक सदस्यता शुल्क :–

पाठकों के लिए, इंडिया पत्रिका के वार्षिक सदस्यता शुल्क, प्रारंभ में रुपए 3 रहा। तत्पश्चात पुदुचेरी में इस पत्रिका का प्रकाशन होने लगा। तब भारती ने पाठकों की आर्थिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर पाठकों की आर्थिक परिस्थिति, के अनुरूप वार्षिक सदस्यता शुल्क में बदलाव किया है। वार्षिक सदस्यता शुल्क इस प्रकार है यथा : सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए रुपए 50, जमींदार, राजा, अंग्रेज साहब, के लिए रुपए 30, रुपए 200 से अधिक मासिक आमदनी वालों के लिए रुपए 15, अन्य लोगों के लिए रुपए 3। विशेषतः 'कर्मयोगी' पत्रिका, छात्रों के लिए निशुल्क वितरित किए गए।

निशुल्क वितरण :–

पत्रिकाओं के निशुल्क वितरण सर्वप्रथम भारती ने ही प्रारंभ किया एवं आम आदमी में पत्रिका पढने की रुचि को बढावा दिया। उन्होंने पाठक रूपी संवाददाताओं के लिए इंडिया पत्रिका का निशुल्क वितरण किया है। 'healthy mind in healthy body' अर्थात स्वच्छ एवं स्वस्थ मानसिकता के लिए निरोगी काया अनिवार्य है। अतः व्यायामशाला को प्रोत्साहित करने के लिए भारती ने एक अनुपम योजना अपनाई। इसके तहत उन्होंने व्यायामशालाओं में 1 साल के लिए, इंडिया पत्रिका का निशुल्क वितरण की घोषणा की। साथ ही उन्होंने 'धर्मम' नामक पत्रिका भी निशुल्क वितरित किया।

महिला पत्रिकाएं :–

भारती का यह अडिग विश्वास रहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए स्त्री–मुक्ति, स्त्री शिक्षण, स्त्री सशक्तिकरण, स्त्री आत्मनिर्भरता आदि अनिवार्य है। अतः भारती अपने लेख, कविता, आदि की सहायता से, महिला सशक्तिकरण व राजनीतिक जागरूकता के लिए सतत प्रयासरत रहे। 'अमृतवर्षिनी', 'महारानी', 'सद्गुण गुण बोधिनी', 'मादर

मित्री', 'पेण मदि बोधिनी', 'मादर मनोरंजीनी', आदि महिला पत्रिकाएं यह इस दृष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'पेण कल्वि', 'तमिल मादु', आदि भारती के समकालीन पत्रिकाएं रहीं। ऐसी ढेर सारी महिला पत्रिकाएं होने के बावजूद, भारती ने महिलाओं की सशक्तीकरण एवं आत्मनिर्भरता के लिए 'चक्रवर्ती' नामक महिला पत्रिका शुरू की। कविता, स्त्री प्रगति, स्त्री शिक्षण से संबंधित लेख, महान व्यक्तियों की जीवनी, आदि भारती की पत्रिका 'चक्रवर्तिनी' के अभिन्न अंग रहें।

पत्रिकाओं में कार्टून चित्र का प्रयोग :-

समाचार को रोचकव बोधगम्य बनाने के लिए तमिल पत्रिकाओं में कार्टून चित्र का प्रयोग सर्वप्रथम भारती ने ही किया था। उस जमाने में, फोटो के अभाव के कारण, समाचार से संबंधित चित्र खींचने की प्रथा को भी उन्होंने अपनाया। 'लंदन पंच', 'हिंदी पंच', नामक पत्रिकाओं के कार्टून चित्र देखकर, भारती तमिल में, मात्र कार्टून के लिए 'चित्रावली' नामक पत्रिका शुरू करना चाहते थे।

समाचार की गुणवत्ता :-

पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचार की विश्वसनीयता एवं गुणवत्ता के कारण, विश्व इतिहास के लिए 'लंदन टाइम्स' पत्रिका ने अपने पुराने संस्करणों, का प्रमाण के रूप में संचित करने लगा। इसे सुनकर भारती ने भी 'सुदेश मित्रन' पत्रिका के पुराने संस्करणों का संचयन करना चाहा। इसके लिए उन्होंने 'सुदेश मित्रन' पत्रिका के पुराने संस्करणों के लिए 2 आना से लेकर रू. 2 तक भुगतान करने की घोषणा की।

अंग्रेजी भाषा में भारती की निपुणता :-

भारती, 'यंग इंडिया', 'द हिंदू', 'कॉमन व्हील', आदि पत्रिकाओं में अंग्रेजी में लेख लिखते थे। इन लेखों में भारती की अंग्रेजी भाषा की कुशलता देख कर, स्वयं अंग्रेज चकित हुए।

तमिल पत्रिकाओं के बारे में भारती की राय :-

भारती तमिल पत्रिकाओं की गुणवत्ता बढ़ाने चाहते थे। तमिल पत्रिकाओं में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग, तथा अंग्रेजी शैली का प्रभाव उन्हें वांछित नहीं था। वे अपनी अंतिम सांस तक तमिल पत्रकारिता के कार्य से जुड़े रहे। भारती तब 'सुदेस मित्रन' पत्रिका में सहायक संपादक के रूप में कार्यरत थे। मंदिर के हाथी उन्हें धकेलने के कारण भारती बीमार पड़े। स्वस्थ होकर उन्होंने 'मंदिर के हाथी' नामक लेख लिखे। मरने के पहले दिन भी वे यही कह रहे थे कि कल मुझे अमानुल्लाह खान के बारे में लेख लिखकर उसे ऑफिस ले जाना है।

इस तरह भारती ने अपनी अंतिम सांस तक तमिल पत्रकारिता के द्वारा भारतवासियों में राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्रीय भावना जगाने में अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया है। इस दृष्टि में तमिल पत्रकारिता के क्षेत्र में राष्ट्र कवि भारती की देन अविस्मरणीय, अप्रतिम और अनुपम है।

संदर्भ :-

1. www.dinamalar.com
2. www.hindutamil.in
3. https://ta.wikipedia.org
4. http://siragu.com
5. http://tnpscwinners.com
6. http://ilakkiyapayilagam.blogspot.com
7. http://kungumam.co.in
8. www.tamildigitallibrary.in
9. https://athiyamanteam.com
10. https://brainly.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 47-52

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Role of Dalit Literature in understanding Double Discripination with Context to the Freedom Movement

Syed Mashud Hashmi, SCHOLAR
Martin Luther, ASSISTANT PROFESSOR
AT HKBK DEGREE COLLEGE, BANGALORE
PhD ENGLISH, CHRISTIAN UNIVERSITY, SHILLONG

RESEARCHER'S NOTE :-

The research looks at the effects and importance of Dalit literature. This study aims to better understand the experiences of Dalit women who face double discrimination due to gender inequality and caste through the lens of Bama's novel Sangati. Additionally, it will examine the various life narratives that are presented in the book and take into account the difficulties they face in order to emphasise how this aids the characters in growing strong and resilient. Creating revolutionary attitudes that ignite the freedom movement is another goal.

ABSTRACT :-

The research aims to analyze Bama's "Sangati" & have an insight into the lives of Dalit women, who face double disadvantage of caste & gender discrimination - For the sole purpose of understanding their struggles that catalyze towards a revolutionary attitude that has fueled the freedom movement in India. Mainly, we emphasize on how the Dalit Literature has not only given an identity to Dalit women but also a different outlook on their problems and discrimination.

INTRODUCTION :-

The power politics between a substantial number of people of who have a place in various communities and castes have made topic of portrayal by different classes and communities in India challenging. Caste discrimination continues to be a crude illustration of Indians' divisions along partisan and class/caste lines.

India is a multiethnic nation with distinct ethnic groups based on caste and religion. Since recorded times, political impulses, a cultural relativist mindset, cultural authority, and dominion have

been forcing cracks and breaking down in the school of thought regarding the mode of guidance, training, openings, and limit building despite the fact that the majority and phonetic diversity in reality mirror the mixture in India.

Literary representations of marginalized communities are of the utmost importance in a time when human rights issues are at the forefront of public discourse. Dalit literature aims to highlight the prejudice, violence, and exclusion that the Dalit community in India experiences. The majority has ignored the lived experiences of the Dalit community members, who have been relegated to the periphery. Their experiences have been viewed as unworthy of writing.

The emergence of Dalit literature, which includes poems, novels, memoirs, and other works of a similar nature, is slowly redressing this situation by illuminating the subtleties of the Dalit culture. One of the most significant literary movements in post-independence India, Dalit literature aims to give a long-victimized group of people their rightful place in society. Finally, their struggles with being stigmatized as "untouchables" are being acknowledged. Dalit literature has come to represent the Dalit consciousness, both personally and collectively. The foundation of Dalit sociopolitical movements and literary works is laid by the writings of B.R. Ambedkar, Joitirao Phule, Bama and Periyar.

Bama's 'Sangati' depicts & defines the Dalit community through the experiences of those on the periphery of our society.

STATEMENT OF PROBLEM :-

The research's primary goal is to analyze Bama's "Sangati" and gain insight into the experiences of Dalit women, who suffer from both caste and gender discrimination, in order to better comprehend their struggles and how they helped to inspire the Indian freedom movement. We primarily focus on how Dalit literature has given Dalit women an identity as well as a different perspective on their issues and discrimination; to help us understand the importance of Dalit literature with context to the freedom movement.

Bama portrays & defines the Dalit community by drawing on the experiences of those who have been marginalized in our society. This study will look at Bama's "Sangati," a collection of personal accounts from Dalit women about their experiences and a reflection on Bama's past. It is a sequel to Bama's 1992 autobiographical book "Karruku," which was published in English for the first time in 1999. Understanding experiences requires analyzing our numerous, intersecting identities. Sangati successfully accomplishes this by telling the stories of a Dalit women's community through this intersecting lens. This book gives us an understanding of the struggles Dalit women go through every day as they resist, fight, hope, love, and become enraged.

Additionally, this book provides new insights into the caste-based patriarchal society from the perspectives of Dalit women, revealing fresh ideas for Dalit women's concerns.

VARIABLES :-

- **PRIMARY TEXT**
- Bama's Sangati
- SECONDARY TEXT(S) :- (Research Papers)
- The theme of retaliation for women empowerment in Bama's Karukku
- The voice of Dalit Women in Bama's Sangati
- Unheard Voices and Gender Reconstruction of Dalit Women in Bama Faustina's Sangati
- Oppression of Dalit women
- The theme of Erasure and Survival – A comparative study of Alice Walker and Bama
- Walker and Bama

OBJECTIVES :-

- To analyze Dalit literature with context to the freedom movement.
- To understand 'Double Discrimination' in context to Dalit woman with regard to caste & gender discrimination.

RESEARCH QUESTIONS :-

1. How important is literature in highlighting the struggles and problems faced by Dalit women in India?
2. How & If literature is a catalyst behind the freedom movement in India.

RESEARCH SCOPE :-

This research will helps us to not only shed light on Dalit women but understand their struggles too. Moreover, it will leave scope for further research topics such as :

- What are the impacts of other Dalit literature in context the freedom movement?
- How dominating is Dalit Literature behind the Freedom movement?
- How Dalit literatures help build and define an identity amongst alit folk?
- A deeper understanding on "double" discrimination with different texts.
- The evolution of Dalit Literature to date.
- The origins of Dalit literature.
- Reviewing and Understanding different Dalit texts to emphasize their importance in Indian Literature.

LITERATURE REVIEW :-

"My mind is crowded with many anecdotes: stories not only about the sorrows and tears of

Dalit women, but also about their lively and rebellious culture, passion about life with vitality, truth, enjoyment, and about their hard labor. I wanted to shout out these stories."

These are Bama's words, which odepicted the suffering endured by Dalit women at all stages of their lives. Her stories gave readers a perspective on Dalit and poor women's lives.

Bama wrote "Sangati" in Tamil in 1994, and Laxmi Holmstrom translated it into English. There are two main characters in the book: Maariamma and Maikkanni. They are the center of the entire narrative. It focuses on how they navigate physical, mental, and emotional obstacles in their daily lives.

- **Sangati's Organization And Language :-**

There are 12 chapters in the book. "Sangati" means "action or events" in Sanskrit. Bama is thus pointing to the tragic events in a Dalit woman's life in this passage. There is an autobiographical component to this book.

Bama has liberally incorporated Dalit, Tamil slang into the language of the book, which is difficult to translate into English. When discussing clothing, festivals, and costumes, she uses slang terms. In my opinion, the use of slang adds authenticity and creativity to this book.

The review illustrates how the Dalit community works together to survive risky circumstances. Sangati depicts people's daily struggles in the streets, at work, and in their homes. In my opinion, it is the Dalit community's story, not the story of a specific individual.

- **How Dalits are aware of their social standing and dignity: (with conext to the novel) :-**

All of the issues that hadn't been addressed for centuries were brought up by Dr. BR Ambedkar. He spoke out against the discrimination against Dalits. This conflict pushes back against the outmoded, illogical beliefs that have no support in reality or logic.

Dalits were prohibited from entering temples, using wells to get water, or attending schools to receive an education. Following Ambedkar's claim, the Dalit community became aware of the appalling circumstances they were living in and began speaking out for their dignity and self-respect. Sangati tells the story of tenacious Dalit women who put in a lot of effort every day and the many hardships they encounter, including abuse from upper caste men.

Conclusion :-

Dalit authors identify the discrimination and exploitation Dalits experience in a caste-based society. Dalit writing is a political genre of writing that documents the social and cultural lives of Dalits and, from an ideological standpoint, calls for resistance. Writing about the lives of Dalit women in Tamil Nadu, Bama is a Tamil Christian Dalit. Sangatican can be viewed as a website that represents Dalit women and examines how caste and gender are used as instruments of double oppression in

these Dalit women's lives.

The fiction written about Dalits can be seen as a social statement that illustrates the multiple forms of marginalization and oppression Dalit women experience on a daily basis. The advancement of Dalit women and their empowerment through education contribute to their relative better condition than that of the older generation of people. This sense of marginalization and the exhortation to resist have been growing from the grandmother to the narrator. Thus, Sangati not only allegorically depicts the caste and gender oppression that exists in the Periyar community, but it also develops a philosophy of resistance and a call to action.

In addition, it does give us a glance as to how Dalit Literature catalyzes the freedom movement.

WORKS CITED :-

1. Bama. Sangati. trans. Laxmi Holmstrom. New Delhi: OUP.2005. Print.
2. Brent. India incidents in the life of a slave girl. New York: hocourt.1973 .Print.
3. Clarke, Sathi. Dalits and Christianity: Subaltern Religion and Liberation Theology in India. New Delhi: Oxford University Press, 1998. Print.
4. Dumont, Louis. Homo hierachicus: The caste system and its implications. London: Paladin.1972. Print.
5. Massey, James. Down trodden: The struggle of India's Dalits for identity, solidarity and liberation. Geneva: WCC. 1997. Print.
6. Rode, Sonali. A brief study of Dalit literature After 1960s. International Research journal. 2010. Print.

REFERENCES :-

1. Paswan, Chhotu. "The Theme of Retaliation for Women Empowerment in Bama's Karukku." International Journal of Applied Research, vol. 6, no. 8, 20 Aug. 2020, pp. 124-126, www.allresearchjournal.com/archives/?year=2020&vol=6&issue=8&part=B&ArticleId=6994). Accessed 30 May 2023.
2. Bama. Sangati. Trans. Laxmi Holmstrom. New Delhi: Oxford University Press.2005. Print.
3. Kolekar, N.Tanaji. Authenticity of Dalit Experience and Literary Expression. 2011. Print.
4. Limbale, Sharankumar. Towards an Aesthetic of Dalit Literature. Trans. Alok Mukherjee. New Delhi: Orient Longman, 2004.
5. Massey, James. Down Trodden: The Struggle of India's Dalits for Identity, Solidarity and Liberation. Geneva: WCC. 1997. Print. 5. Narang, Ed.
6. Harish. Writing Black, Writing Dalit. Shimla: Indian Institute of Advanced Study,2002. 6. Prasad, Ed. Amar Nath. New Lights on Indian Women Novelists. New Delhi: Sarup& Sons, 2008.
7. Srilatha G. The Voice of Dalit Women in Bama's Sangati. wwwacademiaedu. Published online December

2016. https://www.academia.edu/33828790/The_Voice_of_Dalit_Women_in_Bama_s_Sangati
8. Yadav S. UNHEARD VOICES AND GENDER CONSTRUCTION OF DALIT WOMEN IN BAMA FAUSTINA'S SANGATI. wwwacademiaedu. Published online April 17, 2017. Accessed May 30, 2023. https://www.academia.edu/34615214/UNHEARD_VOICES_AND_ GENDER_CONSTRUCTION_OF_DALIT_WOMEN_IN_BAMA_FAUSTINAS_SANGATI
9. Shalu. Significance of Dalit Literature In Indian Context - Ignited Minds Journals. ignited.in. Published June 2018. http://ignited.in/I/a/89630
10. Pk P. THE THEME OF ERASURE AND SURVIVAL – A COMPARATIVE STUDY OFALICE WALKER AND BAMA. wwwacademiaedu. https://www.academia.edu/30435945/THE_THEME_OF_ERASURE_AND_ SURVIVAL_A_COMPARATIVE_STUDY_OFALICE_WALKER_AND_BAMA

EMAIL ID : syedmash95@gmail.com
ADDRESS: 207, MUZZAMIL RESIDENCY, NEXT TO HKBK COLLEGE OF ENGINEERING, GOVINDAPURA, BANGALORE – 560 045

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 53-56

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

A literary analysis of Quit India by Ismat Chugtai

Nayaab Khan

Keywords :- Colonization, Freedom movement, Sense of belongingness.

Abstract :-

Quit India is a literary text written by is IsmatChugtai in 1940s during India's freedom struggle against the British colonizers. Chugtai was one of the Muslim writers who stayed in India after the subcontinent was partitioned.

Her work explored feminine sexuality middle class gentility and gave birth to a revolutionary feminist politics and aesthetics in the 20th century Urdu literature.

Her out spoken and controversial style of writing made her passionate voice representative of the unheard and she became an inspiration for the younger generation of writers readers and intellectuals she was also considered a path breaker for writers at the time in the subcontinent.

This article / paper and analyses characters who are struck by the choices that were made for them in a larger context and how a path is carved for them during their freedom struggle with their environment and also their own identity, while the colonial mentality was rampant.

This narrative is vastly explored to understand the setting of the plot which was a direct reflection of India and many other subcontinents that were going through similar struggles at the time.

Through understanding the colonial mindset this article establishes a narrative into the need "to belong" and how even in the midst of colonization and partition where global mindset was generally about invading, conquering, there are instances where individual on a subjective level just wanted to feel a sense of belongingness irrespective of the environment.

Various methods where adopted to analyse the text such as rhetorical criticism, content analysis,

interaction analysis, to name a few.

An overview of the text quit India is provided with regard to the keywords with the intention to highlight the intricacies of the global and individual psyche during the partition and freedom struggle.

Introduction :-

The beginning of the text foreshadows the end, the author declares in the beginning that the saab is dead, saab being the Englishman who stayed back in India after the colonizers left, Saabs aka Jackson's character establishes credibility in defining the title Quit India.

India was undergoing war with British colonizers while also going through partition this subcontinent was in a doublebind as they had to fight off the whites and also separate their own countryman into Muslims and Hindus. This would naturally be challenging to the people especially civilians who wanted nothing to do with the global politics but were caught in the mix anyway.

This created various disruptions, in their psyche that we can witness even today, the impact of colonial mindset and partition is seen. Relationship with India and Pakistan is still imapired. Indian Muslims are still looked at as outsiders.

Quit India exposes the same, Saab was a middle aged man, Unhappy with his life as an English police officer, had an unsuccessful marriage as his wife was a rich woman who would push him around, his job required killing and beating up people which brought him no joy, he would often scowl at himself and the other people around him.

Saab aka Jacksons character was a personification of an unsatiated identity, even though he was white and a police commissioner he was extremely dejected.

We observe that the protagonist describes him as a scoundrel, a pig and a useless white fellow, not because of his individual personality but simply because he was a whiteman. Surely all Indians at the time would talk of British the same way, Saab was not liked in his own country, neither by his wife nor was he welcome in India.

Jackson represented the trouble state of mind that many people were going through because of their circumstances both individual and their environment.

The other equally important character in the text was Sakku Bai, who was an escort for Englishmen, she shows empathy for Jackson even though the protagonist questions the soft corner Sakku had, Sakku in defence of Saab always said that he is a very unhappy man and she is being there for him, he was also the father of her kids. She was the sanctuary or the grounding that Saab found

amidst his unhappy self.

Sakkubai symbolizes empathy irrespective of an Identity, with regard to citizenship or religion.

Quit India boldly represents a narrative of the colonising era where the colonial mindset of people is shown through words words like tommies, pigs etc which are used to describe the colonizers and "our boys" were used to describe the natives, I and "the other" connotations are used to compartmentalize for the readers. Towards the end of the story we see that saab does not leave India even after his countrymen go away, he eventually starts looking like an Indian himself becomes thin as a wafer, sits in the balcony drinking chai reading his newspaper in a lungi and does the things that the natives would do. Unlike the beginning when he would jog around with his dog, in shorts.

As time passed people had forgotten the colonizers, the torture that happened.

Parvati (Jackson and Sakkus daughter) although an Anglo Indian, an englishman's daughter was very popular among the teen boys who were mad about her beauty. This particular narrative shows the resilience of people and justifies the statement that Time heals all wounds.

Further, the text summarizes the setting of the country, during the departure of the British and while partition was happening an Englishman itself was facing trouble going back to his own country. The author showcases the concept of sense of belongingness which to a person doesn't necessarily have to mean a country, it doesn't have to mean a certain home it doesn't have to mean a certain place, that a sense of belonging in us can be the understanding of another person.

Through this englishman author explains the colonial mindset which rises and falls as per the situation, globally wars were fought for a certain materialistic requirement and invasions were made with regard to materialistic things that have nothing to do with the actual peace of mind and an overall sense of well-being of an individual.

Author in the conclusion declares that Saab was resting on his armchair and Sakku was next to him while children were playing in the garden and a tear rolled down as his life flashes by in front of his eye, he eventually Quits India. These words end the text while sending a chill down our spine.

This symbolises freedom struggle not in the sense of between countries but in the sense of a human being where a human would more importantly want to feel a sense of belongingness more than anything else.

The author also shows the rise and fall of Jackson as a mirror of British Empire like how the saab talks about you how the saab came in with guns and had the whole army with him just like the

British Empire, which eventually fell out due to the resilience of Indians.

Colonial mindset is still rampant in people today where the Britishers or if we use rhetorical criticism we can see that words like “its not fair” “thats so dark” etc furthers white privileges and westernisation aka the colonial mindset.

Colonization still has its impact in the psyhe of people which we are gradually trying to uproot one day at the time, one article at a time, with more advancement in technology and peoples curiosity to go back to their roots and reconnect through understanding their own sense of Identity rather than the westernization and capitalistic aspect of the colonisation, people have started to remove these attributes that were instilled for generations through their ancestors.

The main aim of this text analysis was to understand the depths of colonization with regard to largest country but with a human being and how important it was even back then till now to feel a sense belonging irrespective of labels like patriotism, soldiers, white or black and even a place as luxurious as England would hold no candle to India. Because it certainly is not easy to “Quit India” even for an Englishman.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 57-61

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

تحریک آزادی میں اردو شاعری و شعرائ کا کردار

ناریہ انجم

تحریک آزادی میں اردو شاعری و شعرائ کا کردار

جنگ آزادی میں اردو شاعری نے جو جلوے دیکھائے ہیں وہ قطعی قابل فراموش نہیں ہیں۔ اردو کے بے شمار شعرائ نے اپنے جوش و ولولے سے پڑھنے والوں کے دلوں میں جو انقلاب کی چنگاریاں بھڑکائی ہیں وہ ہمیشہ محبّ وطن کے سینوں میں تازہ دم رہے گی۔ اردو شاعری کا دائرہ بہت وسیع ہے۔ اردو شاعری زمانے اور رمانوی تقاضے کے اثرات کو بہ حسن وخوبی بیان کر لینے کی سکت رکھتی ہے۔ اردو ہر دور میں حب الوطنی، قوم پرستی، ملکی سالمیت جیسے جزبات کو اجاگر کرتی آرہی ہے۔ اس مقصد کو سرانجام دینے میں بہت سارے نامور اور غیر نامور شعرائ نے اہم کردار ادا کیا ہے۔ جیسے مصحفی، بہادر شاہ ظفر، حالی، اکبرالہ آبادی، چکبست، اقبال، ظفر علی، حسرت موہانی، سرور جہاں آبادی، جوش ملیح آبادی، شبلی نعمانی، لال چند فلک وغیرہ نے ہر موقعہ پر اپنے افکار و خیالات سے اردو شاعری میں جان ڈالی ہے۔ جیسے

اپنے منقاروں سے خود کستے تھے پھندا جال کا
طائروں پر سحر تھا صیاد کے اقبال کا (مصحفی)

لال چند فلک ۱۳ جنوری ۱۸۸۷ میں حافظ آباد میں پیدا ہوئے ۱۹۰۴ء میں شعر گوئی کی ابتدائ کی انگریزوں کے ظلم وستم سے اکتا کر ان کے خلاف اپنی نظموں اور صحافت کے ذریعہ احتجاج کیا۔

کبھی وہ دن بھی آئے گا کہ ہم سوراج دیکھیں گے
دیار ہند میں پھر ہندیوں کا راج دیکھیں گے

لال چند فلک نے اپنی نظم نگاری سے ہندوستانیوں میں جنگ آزادی کے ولوے کو ہوا دی ہے۔ ان کی نظم بھارت کے سپوتوں سے خطاب سے قومیت کے جذبات کا اور انگریزوں سے بغاوت کا وجد ملتا ہے۔

بھارت کے اے سپوتو ہمت دکھائے جاؤ

دنیا کے دل پہ اپنا سکہ بٹھائے جاؤ
مردہ دلی کا جھنڈا پھیکو زمین پر تم
زندہ دلی کا ہر سو پرچم اڑائے جاؤ

ظفر علی خان اردو کے ایک ممتاز شاعر، سرگرم سیاسی کارکن جنہوں نے آزادی کی تحریک کا شعلہ عوام کے دلوں میں بھڑکایا ہے جس کی مثال یہ ذیل کی نظم انقلاب ہند ہے۔

بارہا دیکھا ہے تو نے آسماں کا انقلاب
کھول آنکھ اور دیکھ اب ہندوستان کا انقلاب
مغرب و مشرق نظر آنے لگے زیر و زبر
انقلاب ہند ہے سارے جہاں کا انقلاب
کر رہا ہے قصر آزادی کی بنیاد استوار
فطرت طفل و زن و پیر و جواں کا انقلاب
صبر والے چھا رہے ہیں جبر کی اقلیم پر
ہو گیا فرسودہ شمشیر و سناں کا انقلاب

شبلی نعمانی نے اپنی بعض نظموں میں آزادی کی جدوجہد کے زمانے کے حالات کا تزکرہ کرتے ہوئے فرنگیوں کی سیاست اور ان کی جابرانہ حکومت کی تصویر کشی اسطرح سے کی ہے۔

حکومت پر زوال آیا تو پھر نام و نشان کب تک
چراغ کشتۂ محفل سے اٹھے گا دھواں کب تک
کہاں تک لوگے ہم سے انتقام فتح ایوبی
دکھاؤ گے ہمیں جنگ صلیبی کا سماں کب تک

اردو شاعری ظاہر و فاخر جزبات کے ساتھ حیات بخش تصور رکھتی ہے۔اس نے آزادیٔ وطن کے سلسلے میں شدت احساس کو تابندہ کیا۔ اس باب میں حالی اور آزاد نے اپنی تخلیقی کاوشوں کے ذریعہ سیاسی شعور کو اجاگر کیا اور لوگوں میں باہمی اتحاد و اتفاق کی شمع روشن کر دی تھی۔

اب تمہیں بتاؤں کہ حب وطن ہے کیا
وہ کیا چمن ہے اور وہ ہوائے چمن ہے کیا
وہ نور مہر جس سے زمانہ میں نور ہے
وہ نور ذرہ ذرہ پہ جس کا ظہور ہے
حب وطن ہے جلوہ اسی نور پاک کا
اور روشن اس کے نور سے عالم ہے خاک کا

مولانا الطاف حسین حالی نے اپنی شاعری کے ذریعہ لوگوں میں حب الوطنی کے جزبات کو اجاگر کیا ہے۔حالی کی نظم حب وطن، وطن سے محبت و یگانگت کا ایک ایسا سرچشمہ ہے جو اس دور میں ہی نہیں بلکہ ہر دور کے ہندوستانیوں کے سینوں میں چنگاری کو بھڑکاتی ہیں۔

قلب ماہیت میں انگلستان ہے گر کیمیا
کم نہیں کچھ قلب ماہیت میں ہندوستان بھی

اسی طرح سرور جہاں آبادی نے بھی اپنے شاعرانہ انچ سے ہندوستانیوں میں وطنیت کے جزبات کو سرشار کیا ہے۔

ایک ایک گل میں پھونکیں روح شمیم وحدت
اک اک کلی کو دل کے دامن میں دیں ہوائیں
اپنے چمن کے گل ہوں اپنے چمن کی مٹی
غیروں سے پوز جا کر کیوں مستعار لائیں

اکبر الہ آبادی نے اپنی شاعری کے ذریعہ عوام کے دلوں میں اپنے ملک کے ہر ذرہ سے محبت کا درس دیا ملک سے محبت اور ملک کے دشمنوں سے دشمنی ان سے عدم تعاون کے جذبات کو اجاگر کرنے کی کامیاب کاوش کی ہے۔اکبر نے قومی یکجہتی کا درس بھی اپنی شاعری سے دیا۔ ہندو مسلم اتحاد و اتفاق کو قائم کرنے کی کامیاب کوشش انہوں نے کی ہے۔انگریزوں کے ظلم و استبداد کے خلاف آواز اٹھانے کا حوصلہ بھی اپنی شاعری سے دیا ہے۔ اکبر الہ آبادی کا یہ شعر تحریک سودیش کی طرف اشارہ کرتا ہے۔

تحریک سودیش پہ مجھے وجد ہے اکبر
کیا خوب یہ نغمہ ہے چھڑا دیں کی دھن میں

بیسویں صدی میں اردو کے شعرا نے ایسی بے شمار نظمیں لکھی جن میں انگریزوں کی سیاسی ظلم و بربریت عصری حالات کا جایزہ لیا گیا جس کی مثال ذیل میں درج یگانہ کے اس شعر سے کی جا سکتی ہے۔

بڑھ گئی قید خودی سے ادراک قید فرنگ

آزماتے ہیں اب طوق وسلاسل سے مجھے (یگانہ)

حب الوطنی وقومیت کی شاعری کے باب میں چکبست کا کلام بھی اہم ہے جس میں وطن پرستی، وفا شعاری اور راست بازی جیسے صفات کی آیئنہ داری ملتی ہے۔ ان کی نظمیں جیسے وطن کا راگ، خاک ہند، حب قومی اور ہمارا وطن دل سے پیار اوطن لکھی ہیں جن میں قار یئن کو ملک سے محبت اور اس کی شان کو برقرار رکھنے کے لئے جان لٹانے کی ترغیب ملتی ہے۔

وہ تحریک خلافت کے سرآمد

جنہیں سوراج ہے کامل کی آمد

سر بازار کرتے ہیں خوش آمد

اسطرح بیسوی صدی میں اردو شعرا نے اپنی شعلہ بیانی سے ہر ہندوستانی کے دل میں انقلاب کی ایسی مشعلیں جلائی ہیں جس کو بھلانا ممکن نہیں۔ آزادی کی تحریک کو کامیاب بنانے میں اردو شاعری کی خدمات کو نظر انداز نہیں کیا جا سکتا ہے۔

ماخذ: ۱ جنگ آزادی میں اردو شاعری کا حصہ ۔ساحل احمد

۲ جنگ آزادی میں ممتاز اردو شعرا کا حصہ۔ڈاکٹر سید رضوان احمد

۳ ظفر علی خان نمبر ۲۹ جنوری ۱۹۳۶

۴ اردو میں قومی شاعری کا سو سال۔علی جواد زیدی

۵ ریختہ۔آرگ

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 61-63

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

SLOGANS RAISED DURING THE INDIAN INDEPENDENCE MOVEMENT

Farhana Banu

HoD Department of English (farhanabanu.dg@hkbk.edu.in)

HKBK DEGREE COLLEGE -Bengaluru-560045

A Slogan is a simple, concise phrase or motto used to describe a particular goal or occasion. A Slogan can be given by any prominent personality. Giving slogan has purpose motivating people and representing a specific thought.

Patriotism or a nations pride is something we all can relate to. It is this overwhelming feeling of love and utter devotion we experience for our country. This particular attachment might come from different factors ,including our homeland , culture or history, but is something that we can always closely relate to nationalism .Patriotism always unites the people. Slogans have a special role in India's freedom struggle. Every slogan uttered for independence breathed life in the in the Indian revolutionaries that every slogan proved to be the last nail in the coffin of the British. Slogans given by the Indian Revolutionaries during the freedom struggle gave a great inspiration to the people of the country for the freedom struggle of modern India. Patriotism always unites the people of the country. The history of popular slogan raised during the Indian Independence Movement.

'JAI HIND' The term was adopted as a national slogan by independent India. Freedom fighter Zainul A been came up with 'JAI HIND' and it was happily embraced by Netaji Bose for INA. The 'Jai Hind' post mark was the first commemorative post mark of free India. It was issued on the day of Independence on 15th August, 1947.Today 'Jai Hind' is a salutation we hear at political meeting and important pblic gathering and even school, college functions. Slogan ' Do or Die' Mahatama Gandhi gave this slogan during a speech in 1942 which ultimately meant that either we shall free India or we shall die in attempt. The slogan' Inqulilab Zindabad' was coined Hasrat Mohani an urdu poet and freedom fighter . However, the slogan was popularized by Bhagat Singh and it became one of the rallying cries of the Indian freedom struggle movement.It awakened patriotism and pro independence sentiments Netaji Subash Chandra Bose gave the call ' Tum Mujhe Koon Do Mai Tumhe Azadi Dunga'

motivates the people against the Britishers.While raising the 'Azad Hind Fouj'.

'Sarfroshi ki tumnna Ab Hamare dil main hai' These lines Ramprasad Bismal are taken from his patriotic poem which was later used as a slogan to challenge the British authority ruling in India.This slogan enlightened the need of the hour and and urged people to fight for freedom against British imperialism .Bismil was the one of the most talented patriotic writers. Sare Jahan se Accha Hindustan Hamara' by Md.Iqbal 1904 considered as Taran-e-Hind' the famous song was used as a slogan to rejuvenate the youth with a feeling of patriotism and the control of British Monarchy.The abridged version of song still sung and is also Played frequently as a marching song by the Indian Armed Force.

Balgangadhar Tilak said 'Swaraj is birth right and I shall have it'Many Indian s were inspired by his radical writings. He was imprisoned for six years for his writing.He started this movement with Annie Besant, demanding the self government regulation for India within the British rule .He was the first Indian who bravely demanded swaraj means complete freedom and declared it on the open platform.

'Purna swaraj 'or the declaration of the independence of india was enacted by the INC on 19th December 1929 The motto behind this was to get freedom from British rule . The demand of Purna Swaraqj Manifesto was: The citizens of India should have the right to live freely like other nations across the globe .The social, political, financial and living standards of people were deprived during the British rule.The sudden growth in tax rates was one of the demand for Purna Swaraj.

''Simon Go Back'' became one of the most enduring slogans of the Indian freedom struggle, and the images of the crowds holding the protest banners aloft are an iconic visual reminder of the agitation.

The Indian Statutory commission, popularly Simon Commission had been sent to India by the british government to assess the functioning of the Government of India Act 1919. The absence or any Indian members was perceived as an insult to the country by the nationalists , as it sent the message that Indian weren't capable of articulating a constitutional vision for their own nation. The commission was boycotted by Indians and mass protest marches holding black flag to show dissent against the colonial government and the words ''Simon Go Back'.'

''Khoon se Khelenge Holi gar vatan mushkil me hai'' was a famous quote of a great revolutionary Ashfaqulla Khan. Born on October 22, 1900 in U.P , he was a great freedom fighter who made the supreme sacrifice for India's Independence.His name is written in golden letters in the history of India.

Literary Sages, who were active in the fight for freedom of the world's largest democracy, not

only gave new life to the freedom struggle with their great and immortal works like 'Vande Matram' meaning ''mother, I bow to thee'more than just a song and slogan by Bankim Chandra Chatterji it was an oath that added vigour and a stronger dose of patriotism to the freedom struggle. In this poem, Chatterji is the one who personified India as a mother during Indian National Movement 1905-1947.People shouted '' Vande Matram ' first as a patriotic slogan and then as a battle cry.

''Satyameva Jayate'' Pandit Madan Mohan Malviya was the first and last person in India to be decorated with honorific title of Mahaman. Malaviya was unique in truth,and patriotism.The origin of this slogan lies in the well known mantra from the Mundaka Upanishad '' Truth alone triumphs'' is the literal meaning of this phrase which is not only adopted as t5he national motto of India but also inscribed at the base of our national emblem. Malviya used this in 1918 in his presidential address in 1918 in the Indian National Congress Convention.He made sure this slogan reached the masses inspired them.

As a citizens of this country, we should pledge to live to protect the country, for prosperity and patriotism Slogans have often proved their mettle,by acting as a catalyst for many great revolutions in history. These slogans spread awareness regarding freedom fighters and their sacrifices or encourage people towards patriotism.We owe our indepence to the freedom fighters .These unique and meaningful slogans on India's independence day can be used to make this celebration more effective memorable for youths and students.Loving one's country is always right and being happy for the growth and development is natural. The pride that we take in for our country's growth is crucial for giving it a morale boost and helping in its development.As a citizens of this country, we should pledge to live to protect the country, for prosperity and patriotism.

WORKS CITED :-

1. 'Remembering Heroes of Indian freedom struggle' India T.V, o8.8.2013
2. Patriotic Slogan ' Rahul Panchal, 10.1.2020
3. http:// www.com Jagran Josh, 14.8.21
4. Text book app UPSC, 17.4. 2023
5. The Indian Express , 10.8.21
6. Telegraph India .com , 24. 1.21
7. Samanya Gnan. Com , 2.11.22

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 64-70

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में भारत–बोध

विशाल कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी, राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

सारांश :–

भारत–बोध भारतीय संस्कृति की मूल प्रवृतियों की पहचान है। साथ ही युगीन परिस्थितियों, ऐतिहासिक घटनाक्रम, भूगोल, भाषा, रीति–रिवाज, धर्म, सामाजिक ढांचा आदि का बोध भारत–बोध है। जब हम अमृतलाल नागर जी के उपन्यासों में इस भारत–बोध की पड़ताल करते हैं तो उसके विविध आयाम हमें दिखाई देते हैं। नागर जी के सभी उपन्यास अपने कलेवर में पूर्णतः भारतीय हैं। इनमें भारत का इतिहास और वर्तमान अपने समग्र रूप में प्रस्तुत हुआ है। हमारी संस्कृति की मूल प्रवृतियाँ इनके उपन्यासों की आत्मा है। अध्यात्म, विश्व–बन्धुत्व की भावना, नारी का गौरवमय रूप, सामंजस्य व समन्वय की भावना, आस्था और जिजीविषा का स्वर, ये सभी तत्व नागर जी के उपन्यासों में रचे–बसे हैं। उपन्यासों के पात्र भारतीयता का रंग लिए हुए हैं। उपन्यासों में वर्णित भौतिक उपादान, भाषाई प्रयोग आदि सभी भारतीयता की छाप लिए हुए हैं। उपन्यासों में जिन समस्याओं को उठाया गया है, वे भी भारतीय हैं। उपन्यासों की भारत–बोध की विशेषता पाठक को अपने साथ बाँध लेती है। यही कारण है कि उपन्यास पढ़ते समय पाठक उपन्यास के कथानक, पात्रों, परिवेश और भाषा के साथ तादात्मय अनुभव करता है। भारतीय कथा परंपरा की जो किस्सागोई की शैली प्रेमचन्द में दिखाई देती है, वह नागर जी के उपन्यासों में भी परिलक्षित होती है। यह भारत–बोध ही नागर जी के उपन्यासों की विशेष पहचान बन गई है। इनके उपन्यासों की अपार सफलता के मूल में यह भारत–बोध ही है।

अमृतलाल नागर जी के उपन्यासों में भारत–बोध को समछने से पहले भारत–बोध को समझ लेने की आवश्यकता है और भारत–बोध को समझने से पहले बोध को समझने की आवश्यकता है। बोध का अर्थ सामान्यतः समझ, ज्ञान या जानकारी माना जाता है हिन्दी शब्दकोश के अनुसार "चेतन अवस्था में इंद्रियों आदि के द्वारा जीवों को होने वाली बाहरी वस्तुओं और विषयों की पूर्ण जानकारी या बोध।"[1] लेकिन बोध में केवल बाह्य विषयों का ज्ञान और जानकारी ही नहीं अपितु मानसिक अनुभूति और सामूहिक जातीय चेतना भी सम्मिलित होती है। किसी संप्रत्यय को पूर्णता में उसके सभी पक्षों का समग्र ज्ञान ही बोध होता है। बोध की प्रक्रिया जितनी बाह्य है उससे अधिक यह आंतरिक प्रक्रिया है। यदि भारत–बोध की चर्चा की जाए तो कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति का बोध या हम सबकी सांझी विरासत या धरोहर की गहन चेतना या भारतीय संस्कृति के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों का बोध। "भारत को भारतीय दृष्टि से देखने का प्रयास है बारत–बोध।"[2] "यह शब्द दो शब्दों का सम्मिलन है – भारत और बोध, जिसका सामान्य अर्थ होता है भारत का बोध।

स्पष्ट है कि भारत बोध का अभिप्राय है भारत संदर्भित वे अनुभूत तथ्य और सत्य, जिसमें देश की सामूहिक चेतना आप्लावित होती है। भारत बोध भारतीयता का ही चौतन्य विस्तार है।"[3] भारत–बोध को समझ लेने के बाद अब हम नागर जी के उपन्यासों में भारत–बोध पर चर्चा कर सकते हैं। अमृतलाल नागर जी का उपन्यासकारों में एक विशिष्ट स्थान है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी के बाद मेरे विचार में नागर जी उपन्यास विधा के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं। उपन्यास विधा एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से रचनाकार जीवन को समग्रता में पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। उपन्यास में लेखक के स्वयं के जीवन–दर्शन का चित्रण तो होता ही है, साथ ही इतिहास, परंपरा, संस्कृति और समसामयिकता का भी सहज और स्वाभाविक समावेश हो जाता है। क्योंकि कोई भी रचनाकार समाज से अलग होकर रचनाकार्य नहीं कर सकता और समाज का निर्माण उसकी संस्कृति, परंपराओं और समसामयिक घात–प्रतिघातों के सम्मिश्रण से होता है। किसी भी राष्ट्र के समाज में कुछ सांस्कृतिक तत्व तो ऐसे होते हैं जो उसकी पुरातन संस्कृति से संबंधित होते हैं और कुछ तत्व ऐसे होते हैं जो उसने अपने विकास क्रम के दौरान अर्जित किए हैं। ये सभी तत्व समाज के जनमानस में संचित अवस्था में विद्यमान रहते हैं और इन्हीं तत्वों का अनुसरण करते हुए और इनमें परिवर्तन करते हुए समाज आगे बढ़ता है। स्वाभाविक सी बात है कि इन तत्वों का समावेश रचनाकार की रचनाओं में स्वतः ही हो जाता है। किसी रचनाकार की रचनाओं में इन तत्वों की उपस्थिति को हम रचनाकार की रचनाओं में उस राष्ट्र के बोध की संज्ञा दे सकते हैं। नागर जी के उपन्यासों में भारत बोध को भी हम इन तत्वों को आधार बनाकर समझ सकते हैं।

उपन्यासों की भारतीयता का अर्थ है– भारतीय संस्कृति का उपन्यास में उद्‌घाटन। अब प्रश्न यह है कि संस्कृति का अर्थ क्या है तथा भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य क्या है, उसकी अस्मिता क्या है।

सामान्यतया जीवन–यापन की पद्धति ही संस्कृति का पर्याय होता है। पद्धति अपने आप में जीवन सम्बन्धी भिन्न–भिन्न अवधारणाओं, संकल्पनाओं और क्रियाओं का प्रतिबिम्ब होती है। हम जीवन के किसी पक्ष के बारे में जो सोचेंगे जो अवधारणा रखेंगे, उसी के अनुसार व्यवहार करेंगे। हमारी दिनचर्या, खानपान, वेश–विन्यास, सज्जा, आचार, रीति रिवाज, सम्बन्ध–बोध सभी अन्ततः हमारी जीवन सम्बन्धी मान्यताओं के अभिव्यंजक होते हैं। जीवन व्यवस्था का ही सारभूत रूप अथवा उसका अवधारणात्मक रूप संस्कृति कहलाता है। संस्कृति के निर्माण में देश का भूगोल, इतिहास, पुराण, धर्म, कला–कौशल तथा समाज–संरचना योग देते हैं। समाज–संरचना के आधारभूत रूप में वहाँ का समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र निहित होता है, इस प्रकार किसी भी देश की समग्र–संश्लिष्ट जीवन–व्यवस्था का सार अथवा उसकी संकल्पना ही मूल रूप में वहाँ की संस्कृति होती है। संस्कृति का परिचायक तत्व होता है उसकी प्रवृत्तियाँ। संस्कृति के विषय में एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि अधिकांश प्रवृत्तियों का मूल कारण होता है उक्त देश का भूगोल और इतिहास। वहाँ की प्रकृति, वहाँ की मिट्टी, वनस्पति, पर्वत, नदी, सागर, ऋतुएँ, पशु–पक्षी, धर्म, दर्शन, ग्रन्थ, अन्य संस्कृतियों के साथ ताल–मेल, युद्ध और संधियाँ ही अन्ततः जीवन पद्धति के निर्माता तथा नियामक होते हैं।

अमृतलाल नागर के उपन्यासों पर आएँ, तो उनकी मूल शक्ति, उनकी लोकप्रियता का मूल कारण उनकी सफलता का निरपवाद स्रोत है–उनकी भारतीय संस्कृति से घनिष्ट पहचान; उनके उपन्यासों में उपलब्ध होने वाले घरों, बाजारों, मुहल्लों, के चित्रात्मक वर्णनों; घरों में अन्दर की आभीत सज्जा, संस्कारों त्यौहारों सूक्ष्मातिसूक्ष्म ब्यौरों की प्रस्तुति; पात्रों की विभिन्न वेश–भूषाओं का सटीक वर्णन; सम्वादों में विभिन्न भाषिक प्रयोगों–मुहावरों,

कहावतों का प्रयोग, मन्दिरों, चौराहों, बागों, महलों, सरायों, सड़कों के जीवन्त वर्णन; मानवीय सम्बन्धों के विभिन्न सरल व जटिल पक्षों के मार्मिक उद्घाटन, भाषा के बहुविध तेवर; भाव यह है कि वह सब कुछ जिसके लिए नागर जी के उपन्यासों की सराहना होती है; जिसके लिए वे पढ़े जाते हैं। उनका महत्व व्यक्तिगत रूप में नहीं है, अपितु विशाल संस्कृति का उद्घाटन होने में है और इन सबका वर्णन उसी की लेखनी कर सकती है जिसे इन सबका बोध हो। बोध उसे ही हो सकता है जिसे इन सबसे प्यार हो और जिसे इन सब पक्षों से प्यार होगा वह व्यक्ति संस्कृति को पहचानने वाला जानने वाला ही हो सकता है। उस संस्कृति को स्वयं जीने वाला ही हो सकता है।

भारतीय संस्कृति का सर्वप्रमुख गुण उसका आध्यात्मिक पक्ष रहा है। भारतीय संस्कृति नें मानव के आध्यात्मिक पक्ष की कभी अवहेलना नहीं की अपितु आध्यात्मिक विकास को सर्वोपरि रखा। भारत के सनातन धर्म के मूल में यही आध्यात्मिकता कार्य करती है। नागर जी के उपन्यासों में यह आध्यात्मिकता अपने सकारात्मक पक्षों के साथ उद्घाटित हुई है। उनके उपन्यास 'मानस का हंस' में तुलसीदास के माध्यम से यही आध्यात्मिकता अपने पूर्ण विकसित रूप में उभर कर सामने आई है। यही आध्यात्मिक दृष्टि 'खंजन नयन' में सूरदास, 'बूँद और समुद्र' में बाबा रामजी दास और 'एकदा नैमिषारण्ये' में सोमाहूति व्यास के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। नागर जी का अध्यात्म पर प्रबल विश्वास है। प्रगतिशील लेखक संघ से सक्रिय रूप से जुड़े रहने पर भी उन्होंने आध्यात्म का निषेध स्वीकार नहीं किया है। वास्तव में आध्यात्म के प्रति उनकी इस अनुरक्ति का कारण बाबा रामजी का सानिध्य है। नागरजी ने बाबा जी के परामर्श से ईश्वर को जन–जन में देखा है। उनका आध्यात्म मानवीय स्पर्श के कारण अलौकिक बन गया है।

बाबा रामजी के शब्दों में– "आत्मा ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश है। ब्रह्मा के रूप में वह अनुभव की सृष्टि करता है, विष्णु के रूप में वह अपनी सृष्टि की श्री को ग्रहण करता है, और शिव के रूप में निष्काम जोगी बन सर्जन और पालन के अहंकार का नाश करता है तथा सृष्टि और उनकी श्री को सदा एक रूप बनाकर अपने में लय किये रहता है। सो हम तो आत्मा के शिव रूप में श्रद्धा रखते हैं। रामजी ये हमारा अटल विश्वास है।[4] इसी प्रकार हम 'मानस के हंस' में भी देख सकते हैं कि तुलसीदास जी की आध्यात्मिकता भी लोकमंगल की भावना से जुड़ गई है। यह आध्यात्मिकता व्यक्ति को स्वार्थी न बनाकर लोकमंगलकारी भावनाओं से युक्त कर देती है।

यह आध्यात्मिकता मनुष्य को सभी प्राणियों से एकाकार करने वाली आध्यात्मिकता है। 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्वमसि' जैसे भावों से युक्त होकर व्यक्ति सम्पूर्ण सृष्टि से स्वयं को एकाकार कर लेता है। यह आध्यात्मिकता मनुष्य को संप्रदाय से ऊपर उठाकर धर्म के वास्तविक अर्थों का बोध कराती है। 'बूँद और समुद्र' उपन्यास का शीर्षक भी इसी तरफ संकेत करता है कि बूँद–बूँद से जिस प्रकार समुद्र बनता है और दोनों अन्योन्याश्रित हैं उसी प्रकार मनुष्य और समाज का या व्यापक अर्थों में कहें तो आत्मा और परमात्मा का संबंध है। जिस प्रकार प्रत्येक बूँद का महत्व है उसी प्रकार से प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक आत्मा का महत्व है और उसका भरपूर विकास होना चाहिए। मानवीय धरातल पर उपजी यही आध्यात्मिकता नागर जी के उपन्यासों के तीनों पात्रों तुलसीदास, सूरदास और बाबा राम जी दास को संतत्व प्रदान करने में सफल हुई है।

भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण तत्व उसका मानवतावादी दृष्टिकोण और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रही है। नागर जी के सभी उपन्यासों में सभी प्रकार के भेद–भावों से ऊपर इसी मानवतावादी दृष्टिकोण

की स्थापना की गई है। नागर जी ने विवेच्य उपन्यासों में परोक्ष या पारलौकिक ईश्वर के स्थान पर प्रत्यक्ष लौकिक प्राणी मात्र के प्रति जीवन की आस्था जगाने का प्रयत्न किया है। नागर जी लिखते हैं– 'भगवान के यानी मनुष्य के स्वरूप, स्वभाव को ही सर्वव्यापी बनाने में प्रगतिशील समाज को रूढ़िग्रस्त असत्य भगवान से जुझारू युद्ध करना होगा। युद्ध के माने एटमबम नहीं, बल्कि युद्ध का अर्थ है हर विघ्न बाधा को पार कर सामाजिक चेतना को नयी सतह पर ऊँचा उठाना। हिन्दु धर्म की सर्जनात्मक क्षमता को नष्ट करने वाले मुख्य तत्व अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि रहे हैं। नागर जी ने इन विकृतियों को पहचाना है। वे धार्मिक, सामाजिक, नैतिक सभी प्रकार की रूढ़ियों के विरोधी रहे हैं, धार्मिक पाखण्डों पर उन्होंने कठोर प्रहार किये हैं तथा जाति–पाति, छुआ–छूत, ऊँच–नीच के भेदभाव को घृणा की दृष्टि से देखा हैं। वे इन सभी दूषित प्रवृत्तियों का समापन चाहते हैं।

अन्धविश्वास के प्रति नागर जी ने 'बूँद और समुद्र' में रोष व्यक्त किया है। 'एकदा नैमिषारण्य' उपन्यास में भार्गव ऋषि सोमाहुति और वैष्णव मुनि नारद विश्रृंखलित देश को समन्वयकारिणी प्रतिभा से एकसूत्र में बाँधने का संकल्प करते हैं। वे अनेक महासत्रों का आयोजन करते हैं। उन्हीं महासत्रों में महाभारत जैसे महाकाव्य का गिरागुरू गणपति के द्वारा लेखन कार्य सम्पन्न होता है। 'नैमिष आन्दोलन' एक ऐसे प्रयास की कड़ी है जिसके अन्तर्गत सामाजिक भाव क्रान्ति लाने के लिए जन–मन के भेद–भाव को मिटाकर एक विराट समष्टि चेतना को जगाना आवश्यक था। यह उपन्यास सम्पूर्ण आर्यावर्त के इतिहास में मानववाद की प्रतिष्ठा करता है, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना इस समग्र ऐतिहासिक चेतना का मूल स्वर है। यह मूल स्वर ही प्राचीनता को नवीनता का संदेश देता है। यह उपन्यास पौराणिक के साथ सांस्कृतिक भी है। अनेक संघर्षो और संकटों से जूझते इसके पात्र अन्ततः एक ऐसे मानव को प्रसूत करने में सफल होते हैं जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा का धारक है।

रचनाकार की रचनाओं में भारत–बोध केवल उस संस्कृति के सकारात्मक पक्षों तक ही सीमित नहीं माना जाना चाहिए अपितु नकारात्मक पक्षों का समावेश भी होना चाहिए क्योंकि आज की बहुत सी समस्याओं की जड़ उसमें निहित होती है। यदि हमारी वर्णाश्रम व्यवस्था घोर जाति–प्रथा में परिवर्तित होकर हमारे सामने समस्या के रूप में आ खड़ी हुई है तो इसके सूत्रों की पड़ताल भी उपन्यास में होनी चाहिए, वह भी भारत बोध ही कहा जाएगा। लेखक ने 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास में इस समस्या को बहुत गहरे रूप में चित्रित किया है। संस्कृति में आए अन्य नकारात्मक तत्वों जैसे भ्रष्टाचार, स्त्री उत्पीड़न, नैतिकता का ह्रास, स्वार्थ की भावना, ढोंग, आडम्बर, पाखंड, राजनैतिक विद्रूपता, आर्थिक विषमता, दहेज प्रथा, गरीबों व दलितों का शोषण, आदि भी वर्तमान भारत के बोध के रूप में देखे जा सकते हैं। 'अमृत और विष', 'बूँद और समुद्र', 'अग्निगर्भा', 'नाच्यो बहुत गोपाल', 'महाकाल या भूख', 'विखरे तिनके' आदि उपन्यास इन तत्वों का बोध अभिव्यक्त करते हैं।

उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' में निर्गुणिया जी चार पीड़ाओं से गुजरती हैं। एक तो वह स्वयं अपने ब्राह्मण समाज से उत्पीड़ित होती हैं, दूसरे उन्हें मेहतर जाति के मोहन के साथ भाग जाने के कारण मेहतरानी होने के कष्टों को भी झेलना पड़ता है। तीसरी पीड़ा यह है कि वह स्त्री होने के कारण पुरुष प्रधान समाज की प्रताड़ना भी झेलती हैं तथा ब्राह्मणी से मेहतरानी बनने की प्रक्रिया में शारीरिक और मानसिक दोनों ही प्रकार का कष्ट झेलना पड़ता है। उपन्यास में एक स्थान पर निर्गुणिया जी कहती हैं कि 'मार–मार कर भंगी बना दिया जाता है, लेकिन मैंने तो उस बात को अपने जीवन में अनुभव कर लिया।'[5]

भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख तत्व जीवन में आस्था, जिजीविषा भी रहा है। गीता का कर्म का उपदेश इसी आस्था और जिजीविषा का दूसरा रूप है। हमारा सम्पूर्ण वाङमय जीवन में आस्था का प्रतिपादन करता है। हमारे यहाँ सुखान्त रचनाओं के रचना विधान को भी हम इस परिप्रेक्ष्य में देख सकते हैं। इसे आदर्शवादी दृष्टिकोण कह दिया जाता है लेकिन यदि एक ओर दृष्टि से देखा जाए तो यह आशावादी बोध कहा जा सकता है। आस्था, जिजीविषा एवं मानवतावाद के सन्दर्भ में नागरजी की समस्त कृतियों में आस्था का आलोक एवं जिजीविषा की ज्योति व्याप्त है। जीवन की विषम परिस्थितियों एवं अनास्थापरक गतिविधियों के बीच भी वे आस्था का मार्ग खोज निकालते हैं। 'भूख', 'बूंद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'नाच्यौ बहुत गोपाल' तथा 'करवट' उपन्यासों में आस्था और जिजीविषा का स्रोत देखा जा सकता है। 'भूख' उपन्यास में मृत्यु के भयानक आतंक के बीच पलायनवादी पाँचू नवजात शिशु को पाकर जिजीविषा की प्रेरणा प्राप्त करता है और इस प्रकार अनास्थावादी परिवेश को आस्था का स्पर्श मिल जाता है। नागर जी की यह मान्यता रही है कि जीवन को विकसित करने के लिए आस्था और जिजीविषा की आवश्कता है। अनास्था जीवन को विकासोन्मुख नहीं कर सकती। अनास्थावादी व्यक्ति अन्धकार में विचरण करता रहता है और जीवन संग्राम में पराजित होता रहता है। आस्था के प्रहरी के रूप में नागरजी ने अपने सभी उपन्यासों में मानवतावादी मूल्यों की स्थापना की है।

आस्था का स्वर नागर जी के उपन्यास 'बूंद और समुद्र' में इन शब्दों में व्यक्त हुआ है– 'मनुष्य का आत्मविश्वास जागना चाहिए उसके जीवन में आस्था जागनी चाहिए। मनुष्य को दूसरों के सुख–दुख में अपना सुख–दुख मानना चाहिए।[6] इस उपन्यास की अंतिम पंक्ति में आस्था पर डटे रहने और व्यक्ति की सामाजिक चेतना जगाने की बात कही गई है। बाबा रामजी दास की मानव सेवा भावना ने उनकी कर्मठ आस्था को नया आयाम दिया है। 'शतरंज के मोहरे' के सन्यासी का सन्देश अंधकार से प्रकाश की यात्रा का है– 'रात के बाद दिन अवश्य आता है। मैं उसी उजाले की बाट में बैठा हूँ।'[7] इसी भाँति नागर जी ने अपने अंतिम उपन्यास 'करवट' का आस्थापरक समापन किया है। 'अमृत और विष' में लेखक को हेमिंग्वे के बूढ़े मछेरे तथा बचपन के साथी बछड़े से प्रेरणा मिलती है।

नारी का गौरवमय, उदात्त और पतिव्रत रूप भारतीय संस्कृति की एक अन्यतम विशेषता रही है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ तत्व रहा है। वैदिक काल में नारी को पुरुष के समान ही सभी अधिकार प्राप्त थे, ऐसे प्रमाण मिलते हैं। हालांकि मध्यकाल तक आते–आते और उसके बाद भी नारी की स्थिति केवल भोग्या वस्तु जैसी ही रह गई। लेकिन फिर भी नारी का शीलवान होना और पतिव्रता होना उसका एक पूजनीय गुण रहा है। नागर जी के उपन्यासों में बहुत से नारी पात्रों की रचना हुई है। लेकिन वही नारी पात्र महत्वपूर्ण बन पड़े हैं जिनमें स्त्रियोचित श्रेष्ठ गुण विद्यमान हैं। 'सुहाग के नुपुर' उपन्यास में कोवलन की पत्नी कन्नगी एक ऐसी ही उदात्त गुणों से युक्त स्त्री है। बह आदर्श भारतीय पत्नी, निष्ठा तथा समर्पण की प्रतिमूर्ति, धीर, गंभीर, सहिष्णु, कुलवधू की मर्यादा, प्रतिष्ठा और सौभाग्य का दायित्व वहन करने वाली स्त्री है जो अपने सुहाग के नुपुरों को एक वेश्या से बचा लेती है और अपने पति को वलन को उसके सही और गलत का एहसास करा देती है। – हवेली से निकाल दिए जाने पर वह श्वसुर द्वारा बनवाई हुई धर्मशाला में साधनहीन अवस्था में रहना पसंद करती है परन्तु अपने पिता के घर जाना या उनकी सम्पत्ति स्वीकार करना पसंद नहीं करती। अपनी निर्धनता के कारण दिए में तेल के अभाव तक को सह लेती है पर पिता की अपार सम्पत्ति को

न लेकर राजकोष में दे देने की सलाह देती है। उसका यह त्याग उसके व्यक्तित्व का सुदृढ़ एवं स्वाभिमानी पक्ष प्रस्तुत करता है। उसकी चिंतनधारा स्पष्ट एवं प्रौढ़ है।

माधवी द्वारा पाँवों में घुघरू बाँधने के आग्रह को वह यह कहकर निरूत्तर कर देती है– "बहन मेरे देवतुल्य पतिकुल ने सुहाग के नुपुरों से मेरे पैरों को बाँध दिया है। ये घुघरू तुम्हारे ही पैरों में शोभा पाएँगे।'[8] अपने घुघरूओं की शक्ति से कोवलन को रिझा लेने के माधवी के अहंकार को कन्नगी अपने शांत किन्तु दृढ़ स्वर सेपराजित कर देती है– "मुझे तुम्हारे घुघरूओं से ईर्ष्या नहीं बहन। मेरी दृष्टि में उनका कोई मूल्य नहीं है।समस्त गुणों से युक्त कन्नगी का निष्कलंक चरित्र तथा तेजस्वी व्यक्तित्व पाठकों को प्रभावित करता है। उसकी इसी तेजस्विता का कायल कोवलन भी है। उपन्यास के समापन के करीब कोवलन का कन्नगी से क्षमा माँगना सती कन्नगी की महत्ता को प्रतिष्ठित कर देता है– "तुम्हारे चरण छू लूँ सती, आज उऋण न हो सकूँगा।'[9]

इस प्रकार कन्नगी के माध्यम से उपन्यासकार ने गृहलक्ष्मी की गरिमा को व्यक्त किया है। नारी की विवशता और समस्याओं के लिए जुझनेवाली वनकन्या को प्रेम के नाम पर धोखेबाजी नापसंद है– 'स्त्री–पुरूष जीवन में सिर्फ एक ही बार एक–दूसरे को पाते हैं मेरा इस बात में दृढ विश्वास है और पाने के लिए उन्हें आपस में अपने आपको अनेक कसौटियों पर कसना होता है। यह जिम्मेदारी का नाता होता है, रईसों, कलाकारों, मनचलों के दिल बहलाव का खेल नहीं। इस प्रकार उपन्यासकार ने वनकन्या को एक प्रतिभाशाली, संस्कार, शील तथा जागरूक नारी के रूप में चित्रित किया है जो किसी के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हो सकती है। 'नाच्यो बहुत गोपाल' उपन्यास में भी निर्गुणिया जी का अपने मोहन के प्रति एकनिष्ठ प्रेम समर्पण भाव उनके चरित्र को उच्च भूमि पर स्थापित कर देता है।

विभिन्न संस्कृतियों का आत्मसातीकरण और सामंजस्य की भावना भी भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण प्रवृति है। नागर जी के उपन्यासों में इसी साझी संस्कृति के दर्शन होते हैं। अरविन्द शंकर, रमेश, लच्छु, सज्जन, बाबा राम जी दास, सूरदास, तुलसीदास, सेठ बाँकेमल आदि पात्र इसी साझी संस्कृति के समर्थन में खड़े दिखाई देते हैं। विभिन्न संस्कृतियों के सकारात्मक तत्वों को ग्रहण करके आगे बढ़ने की प्रवृति ने न केवल भारतीय संस्कृति को ओर अधिक समृद्ध बनाया है, अपितु सामंजस्य का महत्व भी विश्व के सामने प्रमाणित किया है।

नागर जी के उपन्यास भारत–भूमि के चप्पे–चप्पे का वर्णन करते हैं– नगरों का, गाँवों का, वन प्रदेशों का, आधुनिक नगरों का भी तथा मध्य युगीन नगरों का। हिन्दुओं की हवेलियों का वर्णन है तो मुसलमानों के महलों–हरमों–सरायों का भी। ये उपन्यास भारत की षडऋतुओं का सरस वर्णन करते हैं। भयंकर लू, झुलसाती गर्मी, कड़ाके की सर्दी, मनभावन वर्षा, बसन्त आदि सभी ऋतुओं का सूर्योदय व सूर्यास्त के बिखरते–बदलते आकाशीय रंगों का चन्द्रमा की रूपहली चाँदनी का, घुप्प अंधियारे का, घरों के तहखानों का घरों की छतों का सीढ़ियों का ढलानों और दहलीजों का उसके भौतिक शरीर का साकार वर्णन कर देते हैं और उसकी आत्मा का तो करते ही हैं।नागर जी के उपन्यास विशुद्ध भारतीय उपन्यास हैं। ये भारतीय उपन्यास इसलिए नहीं है कि हिन्दी में लिखे गए हैं, या भारत के किन्हीं नगरों की गाथा कहते हैं, ये इसलिए भी भारतीय हैं, क्योंकि, इनके पात्र भारतीय हैं, उनका चिन्तन उनका विश्वास भारतीय है, उनकी भावनाएँ, आस्था, निष्ठा भारतीय हैं, तथा उनकी समस्याएँ भारतीय हैं। यही इन उपन्यासों की मूलशक्ति है। इस शक्ति के अभाव में नागर जी के उपन्यासों का वर्णन–बाहुल्य घोर ऊबाऊ या सारहीन होकर रह जाता या उपन्यासों को एकदम असफल बना देता।

भारतीयता की अभिव्यंजना और अभिकल्पना से लबरेज़ विस्तृत ब्यौरे तथा लम्बें वर्णन इन उपनयासों की शक्ति बनकर उभरें है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नागर जी के बारह के बारह उपन्यास केवल हिन्दी के ही उपन्यास नहीं है, अपनी प्रकृति, आत्मतत्व व कथातत्व में वे पूर्णतया भारतीय हैं। उन्हें किसी भी भाषा में अनुदित कर देने से भी उनकी भारतीय पहचान तनिक भी मन्द नहीं पड़ सकती।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1 https://www.hindlish.in/%E0%A4%AC%E0%A5%8B%E0%A4%A7/%E0%A4%AC%E0%A5%8B%E0%A4%A7&meaning&in&hindi

2. भारत बोध, डॉ. सौरभ मालवीय।

3. https://www.dainiktribuneonline.com/news/sahitya/logical&attempt&to&understand&bharatbodh&86347

4. बूँद और समुद्र, अमृत लाल नागर।

5. नाच्यो बहुत गोपाल, अमृतलाल नागर।

6. बूँद और समुद्र, अमृतलाल नागर।

7. शतरंज के मोहरे, अमृतलाल नागर।

8. सुहाग के नुपुर, अमृतलाल नागर।

9. सुहाग के नुपुर, अमृतलाल नागर।

ई मेल– vishalgoel009@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 71-76

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आधुनिक काव्य में राष्ट्र-प्रेम

पिंकी

स्नातकोत्तर हिंदी, नेट, बीएड, छात्रा, टीकाराम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सोनीपत, हरियाणा।

आमुख :-

राष्ट्र के प्रति अपनेपन की भावना एवं प्रेम ही राष्ट्र प्रेम कहलाता है। जो मनुष्य राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने की भावना रखते हैं, उन्हें ही राष्ट्र प्रेमी की संज्ञा दी जाती है। राष्ट्र प्रेम की भावना लोगों को एक दूसरे के साथ सद्भाव से मिलकर देश के विकास के लिए प्रेरित करती है। आधुनिक युग की युवा पीढ़ी में ये भावना बहुत कम दिखाई पड़ती है। यह भावना कुछ लोगों में स्वयं उत्पन्न होती है जबकि कुछ लोगों में इसे जागृत करना पड़ता है। यह लोगों में आपसी भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :-

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इस प्रकार है :-

1) राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना,
2) स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय काव्य धारा की भूमिका से पाठकों को अवगत कराना,
3) राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करना,
4) भाषा कौशलों का विकास कर साहित्य में रुचि उत्पन्न करना।

विषय प्रवेश :-

प्राचीनकाल साहित्य से लेकर ही आधुनिक साहित्य तक राष्ट्र प्रेम से संबंधित प्रचुर साहित्य रचा गया है। जिसमें काव्य की अहम भूमिका है। किसी भी साहित्य पर देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य होता है।

"साहित्य का मानव जीवन से चिरंतन संबंध है। साहित्य का स्त्रष्टा मनुष्य है और मनुष्य के लिए ही साहित्य की सृष्टि है।"(1)

ज्यों–ज्यों परिस्थितियां बदलती हैं हमारा साहित्य भी अवश्य परिवर्तित होता है। साहित्य में मानवीय संवेदना होती है जो अन्य किसी ज्ञान शाखा में नहीं होती।

आधुनिक काव्य में राष्ट्र प्रेम :-

19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध से ही आधुनिक युग की शुरुआत मानी जाती है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश के स्वतंत्र होने तक का साहित्य राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय प्रेम की भावना से ओत प्रोत है। हिंदी साहि त्य की प्रत्येक विधा में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। लेकिन उन सभी विधाओं में से कवितश

का राष्ट्रीय चेतना में अत्यंत महत्व रहा है। भारतीय राष्ट्रीयता में अंग्रेजों की वजह से परिवर्तन आया।

"राष्ट्रीयता भारत के लिए नवीन विश्वास थी इसके पूर्व इस देश में यह बात अपरिचित थी।"(2)

अंग्रेज़ी शासकों से ही प्रेरणा लेकर भारतीय लोगों के मन में स्वाधीनता के भाव पैदा होने लगे। स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, परमहंस, भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके मंडल के अन्य कवियों ने मिलकर राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का भरसक प्रयास किया। इन्होंने जो राष्ट्रीयता के बीज बोए उन्हीं को आगे बढ़ाने का काम आधुनिक हिंदी कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से किया।

भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्र प्रेम (1857–1900) :–

राष्ट्रीय काव्यधारा का उदय आधुनिक काल में भारतेंदु युग से ही होता है। जिसमें भारतेंदु जी स्वयं संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने की बात करते हैं। राष्ट्र निर्माण में भारतेंदु जी निज भाषा के महत्व को बताते हुए कहते हैं :–

"निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।'(3)

इसके अतिरिक्त इस काल में राष्ट्रीय काव्य धारा को सशक्त बनाने में राधाचरण गोस्वामी की 'हमारो उत्तम भारत देश'।

राधाकृष्ण दास की 'भारत बारह मासा', बद्री नारायण प्रेमघन की 'धन्य भूमि भारत सब रत्ननिकी उपजावनि', प्रताप नारायण मिश्र की 'महापर्व, नया संवत' आदि का प्रमुख योगदान है। इन कवियों ने अनेकों बार भारत के गौरवशाली इतिहास को अपनी कविताओं में प्रकट करके जनमानस में राष्ट्रीय भावना जागृत करने का प्रयास किया। प्रेमघन जी की 'आनंद अरुणोदय' एवं राधाकृष्ण दास की 'भारत बारह मासा' के साथ राष्ट्रीय चेतना का प्रसार अत्यधिक तेज हुआ। देशवासियों को जागृत करने में 'भारत बारह मासा' का स्वर इस प्रकार है :–

"लाग्यो असाढ़ सुहावना सब देश मिलि आनंद करै,
यूरोप अमेरिका फ्रांस जर मन मोद जिय में नहि धरै,
एक हम अभागे देशभर कै बैठि के रोनत रहै,
नहि काम कोऊ करनो, हमै बस व्यर्थ दिन खोवत रहै।"(4)

द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्र प्रेम (1900–1918) :–

द्विवेदी युगीन साहित्य को जागरण एवं सुधार काल की संज्ञा भी दी जाती है। क्योंकि जिस राष्ट्रीयता की भावना का प्रारंभ भारतेंदु युग से हुआ, उसे आगे बढ़ाने में द्विवेदी काल के काव्य का अत्यंत महत्व है। इस युग के काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र प्रेम की भावना को प्रखर रूप मिला। इस युग के राष्ट्रवादी काव्य में किसान, भारत भारती (मैथिलीशरण गुप्त), शंकर सरोज, शंकर सर्वस्व (नाथूराम शंकर), सर्वस्त्र (गया प्रसाद शुक्ल स्नेही), रामनरेश त्रिपाठी, मौर्य विजय (सिया रामशरण गुप्त) आदि का प्रमुख योगदान है। इस युग के काव्य में मुख्य रुप से देश प्रेम, अतीत गौरव, स्वदेश अभिमान आदि की अभिव्यक्ति हुई है।

गुप्त जी की कविता भारत भारती को पढ़कर नौजवानों में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े :–

"हम कौन थे, क्या हो गए,
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारे बैठकर,
ये समस्याएं सभी।"[5]

मैथिलीशरण गुप्त जी आधुनिक हिंदी काव्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उनकी राष्ट्रीय भावना के कारण ही उन्हें राष्ट्र कवि की संज्ञा दी जाती है। इसके अलावा गया प्रसाद शुक्ल सनेही ने भी अपने बलिदानी गीतों से राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने का प्रयास किया है। जो इस प्रकार है :–

"भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं"[6]

छायावादी युगीन काव्य में राष्ट्र प्रेम (1918–1936) :–

भले ही छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शैली दोनों की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती काव्य से अलग हैं। लेकिन फिर भी छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के स्वर भी मुखरित हुए हैं। प्रसाद जी के नाटकों में जो गीत योजना की है उसमें राष्ट्रीय भावना की बहुत ही सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। अपनी कविता 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' में उन्होंने भारत के अतीत गौरव का चित्रण करते हुए देश की महिमा का बखान किया है :–

"अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा है।"[7]

माखनलाल चतुर्वेदी के गीतों में राष्ट्र प्रेम अपने चरमोत्कर्ष पर है। 'पुष्प की अभिलाषा' में उन्होंने एक पुष्प की यह इच्छा व्यक्त की है कि उसे शहीदों के चरणों तले आने का सौभाग्य मिले :–

"मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावे वीर अनेक।"[8]

इसके अतिरिक्त रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित 'पथिक' एवं 'वह देश कौन सा है' कविता में भी लोगों को देश के विषय में एवं उनमें देश प्रेम जागृत करने का प्रयास किया है। रामनरेश त्रिपाठी जी अपनी कविता 'वह देश कौन सा है' में प्रकृति की आलौकिकता के साथ–साथ देश की सुंदरता को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं :–

"मनमोहिनी प्रकृति की गोद में जो बसा है।
सुख स्वर्ग सा जहां है वह देश कौन सा है।"[9]

वहीं अपनी कविता 'पथिक' में उन्होंने पथिक के माध्यम से स्वयं की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। वे लोगों को पराधीनता के प्रति जागृत करते हुए कहते हैं :–

"अपना शासन आप करो तुम यही शांति है, सुख है
पराधीनता से बढ जग में नहीं दूसरा दुःख है।"[10]

इनके अतिरिक्त सूर्यकांत त्रिपाठी निराला 'जागो फिर एक बार' 'राम की शक्ति पूजा' आदि राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व की रचनाएं हैं। जिनमें भारतीय गौरव का बखान करते हुए भविष्य का निर्माण करने की प्रेरणा प्रदान की है।

प्रगतिवादी–प्रयोगवादी काव्य में राष्ट्र प्रेम (1936–1953) :–

इस युग के काव्य में मुख्यतः निराला, पंत, दिनकर, नागार्जुन, केदारनाथ, यशपाल आदि ने राष्ट्रीय

आंदोलन की बागडोर ही नहीं संभाली, बल्कि स्वयं भी उसमें सक्रिय रूप से शामिल हुए। जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय भावना प्रबल हो गई। वहीं इन्होंने लोगों में राष्ट्र भावना जागृत कर उन्हें शोषण के प्रति आवाज उठाने के लिए भी प्रेरित किया। निराला की अनेक कविताओं में राष्ट्रीयता के स्वरों की अभिव्यक्ति हुई है। निराला की इन पंक्तियों में राष्ट्रीयता को स्पष्ट किया है :–

"सारी संपत्ति देश की हो,
सारी आपत्ति देश की हो,
जनता जातीय देश की हो।"(11)

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' 'वीरों का कैसा बसंत' आदि कविताओं में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है।

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी "जैसे अनेक काव्य टुकड़े आज भी किसी भी भारतीय को राष्ट्रीयता से भर देते हैं। दिनकर जी मूलतः ओजगुण के कवि है। उनकी कविता 'आग की भीख' 'सरहद के पार से' आदि में राष्ट्रीयता का जो उद्घोष मिलता है। ऐसा विरले ही कवियों में दिखाई देता है 'सरहद के पार से' कविता की कुछ पंक्तियां प्रकार है :–

"था मों इसे, शपथ लो, बालिका कोई कर्म न रुकेगा,
चाहे जो हो जाए, मगर यह झंडा नहीं झुकेगा।"(12)

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी भी राष्ट्रकवि हैं। इन्होंने भी स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय योगदान निभाया जिसकी वजह से कई बार इन्हें जेल भी जाना पड़ा। लेकिन अंग्रेजों के लाख अत्याचारों के बाद भी इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से युवाओं में उत्साह और उमंग का प्रसार करना नहीं छोड़ा। 'विप्लव गायन' में कहते हैं :–

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाए, त्राहि–त्राहि रव नभ में छाए।
नाश और सत्यानाशो का, धुआंधार नभ में छा जाएं।(13)

इनके अलावा माखनलाल चतुर्वेदी जी की हिम तरंगिनी एवं हिमकिरिटनी में भी राष्ट्र प्रेम का चित्रण हुआ है।

नई कविता में राष्ट्र प्रेम (1953–1963) :–

नई कविता विषय वस्तु एवं शिल्प दोनों की दृष्टि से बाकि युगों के बिल्कुल विपरीत है। लेकिन फ़िर भी बालकृष्ण शर्मा नवीन, रमेश पोखरियाल, भवानी प्रसाद मिश्र आदि की कविताओं में चेतना एवं राष्ट्र प्रेम का चित्रण मिलता है। बालकृष्ण जी ने निराशा का अवतरण, मुसलमान भाइयों की खिदमत में, एक ही थैली के चट्टे–बट्टे आदि शीर्षकों से अनेक लेखों को पत्रों के माध्यम से प्रकाशित करवाकर जनता को जागृत किया। इसके अलावा इन्होंने राष्ट्रीयता एकता में बाधक मनुष्यता के पतन को रेखांकित करते हुए कहा है :–

"आ पहुंचा है जिस ओर मनुष्य, उस दौर आज हैं सर्वनाश,
यदि वह अपने हिय को मथकर, करले न आज अपना विकास।"

इस युग में राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रसारित करने में रमेश पोखरियाल जी का भी अत्यंत महत्व है। शांत

हूं पर, देश हम जलने न देंगे, उनकी शर्त गिरे हुए लोग, आदि शीर्षक कविताओं का महत्वपूर्ण योगदान हैं। राष्ट्रीय विघटन हेतु दुष्चक्र रचने वालों तथा भाईचारे में विभेद की नीति अपनाने वालों के लिए कवि कहता है कि :–

"शांत है पर सोच लो,
प्रचंड बन जाता हूं क्षण में,
दुष्टता भूसे मिटाने,
काल बन जाता हूं रण में।"(14)

समकालीन कविता में राष्ट्र प्रेम (1963–अब तक) :–

समकालीन कविता आधुनिक कविता के विकास में नई संवेदना, नई चेतना आदि के बदलाव की सूचक है। समकालीन काव्यधारा में राष्ट्रीय प्रेम एवं राष्ट्रीय एकता के स्वर को मुखरित करने में धूमिल (संसद से सड़क तक), विनोद कुमार शुक्ल (बुरी नजर), अरुण कमल (धार), रघुवीर सहाय (आत्महत्या के विरुद्ध), गुलजार (हिंदुस्तान में दो–दो हिंदुस्तान दिखाई देते हैं), हरिओम पंवार (घाटी के दिल की धड़कन) आदि का महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय ने समकालीन कविता की संवेदना पर टिप्पणी करते हुए कहा है :–

"जिस देश में लूट मची हो..... विष की रचनात्मकता में रत हो जाता है।"(15)

समकालीन कविता स्थितियों, तथ्यों, दृश्यों और घटनाओं की कविता है। इस युग की कविता में लीलाधार जुगड़ी की 'इस व्यवस्था में' नामक कविता में देशभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति प्रेम के विषय में कहां है :–

"पता नहीं मुझसे, क्या गलती हो गई है,
आजादी के बाद देश भक्ति,
मेरे कंधे के सिर टकराकर सो गई है।"(16)

इनके अतिरिक्त समकालीन कवियों ने देश, लोकतंत्र, राजनीति, नैतिकता आदि पर भी व्यंग्य करते हुए कहा है :–

"यह मेरा देश है, हिमालय से लेकर हिमा सागर तक,
फैला हुआ, जली हुई मिट्टी का ढेर है।"(17)

हरिओम पंवार जी अपनी कविता 'कालेधन' में झूठे देश भक्तों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि :–

"दो नंबरी के दोषी उस दिन देश भक्त बन जाएंगे,
जिस दिन 100 काले धन वाले सूली पर टंग जाएंगे।"(18)

शोध पत्र की प्रासंगिकता :–

हिंदी साहित्य राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्र प्रेम की भावना को प्रसारित करने में प्राचीन काल से ही मशहूर रहा है। राष्ट्रीय चेतना में साहित्य की सभी विधाओं ने अहम भूमिका निभाई है। लेकिन उनमें काव्य का विशेष महत्व है। साहित्य मूलतः सत्यम, शिवम्, सुंदरम को समाहित करता है। कोई भी साहित्य कई कारणों से प्रासंगिक होता है। आधुनिक काव्य ने भी उनका निर्वाह किया है। किसी भी साहित्य का सबसे बड़ा योगदान पाठक को संवेदनशील बनाना होता हैं। संवेदनशील यानी उस भाव के प्रति भावनात्मक संबंध महसूस कराना

जो पीड़ा उसमें समाहित है। यही कारण है कि अलग–अलग भाव की कविता को पढ़कर पाठक के मन में भी वहीं भाव उत्पन्न हो जाता है। जैसे निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' से दया का तथा सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता पढ़ने से वीरता का भाव उत्पन्न हो जाता है।

इसके इसी गुण के कारण इस लेख की प्रासंगिकता आज भी है। क्योंकि राष्ट्रीयता के भाव को उत्पन्न करने में राष्ट्रवादी कविताओं का ही प्रसार किया जाता है।

निष्कर्ष :–

आधुनिक काव्य में राष्ट्र भक्ति पर प्रचुर मात्रा में साहित्य रचनाएं सम्मिलित हैं। इन्ही रचनाओं के द्वारा कवियों ने जनता में देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीयता आदि की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया है। राष्ट्रीयता के कारण समाज में ऐसी सहनशीलता का निर्माण होता है जिसकी वजह से लोग एकता के सूत्र में बंध जाते हैं।

अतः स्पष्ट रूप में हम कह सकते हैं कि आधुनिक काव्य में प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य था कि स्वाधीनता के लिए प्रयास कर लोगों में देश प्रेम एवं राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत कराना। जोकि आधुनिक काव्य में भरसक मात्रा में देखने को मिलता है।

संदर्भ संकेत :–

1. नंददुलारे वाजपेई, नया साहित्य – नए प्रश्न
2. डॉ. हजारी प्रसाद, चंद्रगुप्त, दूसरा अंक
3. भारतेंदु, भारत दुर्दशा, www.amarujala.com
4. राधाकृष्ण ग्रंथावली 1, संपादक श्यामसुंदर दास
5. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती–अतित खंड
6. गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही, स्वदेश।
7. जयशंकर प्रसाद, चंद्रगुप्त, दूसरा अंक
8. माखनलाल चतुर्वेदी, पुष्प की अभिलाषा, www.amarujalaa,com
9. स्वतंत्रता पुकारती, नंदकिशोर नवल, साहित्य अकादमी, संस्करण 2006, पृष्ठ सं. 95
10. गंगाजल पत्रिका, भारतीय सांस्कृतिक संबंध, नई दिल्ली, पृष्ठ 50
11. निराला, बेला, पृष्ठ संख्या 78
12. रामधारी सिंह दिनकर, सरहद के पार, सामधेनी काव्य संग्रह, पृष्ठ संख्या 136
13. निराला, विप्लव गायन।
14. रमेश पोखरियाल, काव्य संग्रह देश हम जलने न देगें (शांत हूं मैं पर)
15. विरेंद्र सिंह, समकालीन कविता, पृष्ठ संख्या 50
16. लीलाधर जुगड़ी, नाटक जारी है, अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ संख्या 52
17. धूमिल, संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2013, पृष्ठ संख्या 99
18. हरिओम पंवार, कालाधन, www.amarujala.com

Email Address :– pinkipriyanka813@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 77-79

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता

डॉ. चौत्रा एस.

सहायक प्राध्यापिका, जे.एस.एस. महिला महाविद्यालय, सरस्वतिपुरम्, मैसूर–570009

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में जब वैश्वीकरण प्रारंभ हुआ तब उसके लाभ और प्रभाव को देखकर यह शंका मन में पैदा होने लगी कि एक दिन राष्ट्र और राष्ट्रवाद अप्रासंगिक हो जाएँगे। अपने देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो और हर नागरिक के जीवन स्तर में वृद्धि हो यह सबसे बड़ा आकर्षण का मुद्दा था। सभी इस बात की आशा और अपेक्षा करने लगे कि अन्य देशों से उनके यहाँ पैसा आए ताकि सदियों से चले आने वाला अभाव दूर हो जाए। गरीबी एक बड़ा अभिशाप है जिसे कल्याणकारी राष्ट्र की सरकारें जड़मूल से नष्ट करना अपना प्रथम दायित्व समझती हैं। वैश्वीकरण के प्रारंभिक दिनों में ऐसा लग रहा था कि अब केवल अंग्रेजी जैसी अंतर्राष्ट्रीय भाषा को ही महत्व मिलेगा। लेकिन कुछ ही समय में यह भ्रांति दूर हो गई। एक राष्ट्र की वस्तुएँ जब दूसरे राष्ट्र में जाकर बिकने लगी तो स्थानीय बाजार पर वर्चस्व जमाने के लिए उस देश को अन्य देश की भाषा सीखनी पड़ी। अपनी भाषा की अनिवार्यता को देखकर कोरियन पहले से अधिक कोरियन हो गया और एक भारतीय पहले से अधिक अपनी भारतीय भाषा के महत्व को समझने लगा। क्योंकि तब उसकी भाषा उसके रोजगार और रोटी से जुड़ गई। इसलिये हम देखते हैं कि जो बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ दूसरे देशों में पहुँची उस समय लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए वहाँ की स्थानीय भाषा को सीखने लगी। यही कारण है कि हमारी हिन्दी अब ब्रिटेन और अमेरिका में पढाई जाने लगी है और हम चीनी भाषा सीखना चाहते हैं क्योंकि वह एक बड़ा बाजार है। लेकिन वैश्वीकरण का जादू अब उतरता दिखलाई पड़ने लगा है, कि हर राष्ट्र यह महसूस करने लगा है कि उसका काम उन देशों में होने लगा है जहाँ मजदूरी सस्ती है। साथ ही उसके प्राकृतिक स्रोत का प्रवाह भी सस्ते दामों पर वहाँ पहुँच रहा है।

इस बहस की जब शुरुआत करते हैं तो हमारे सामने कुछ मिले–जुले शब्द आकर खड़े हो जाते हैं। जिनमें राज्य, राष्ट्र, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद प्रमुख हैं। राज्य शब्द पहले अस्तित्व में आया कि राष्ट्र' राज्य के लिए धरती पहली शर्त है, फिर उसकी सीमा और अंत में वहाँ रहने वाली जनसंख्या। प्रकृति ने सर्वप्रथम धरा की ही रचना की। रचना करते समय कहीं पर्वत, कहीं नदी, कहीं रेगिस्तान और कहीं समुद्र बने। यह कुदरत का अपना बँटवारा था। लेकिन जब इंसान इस धरती पर रहने लगा तो उसने अपना क्षेत्र अपनी ताकत के अनुसार तय किया और जो सीमा उसने निश्चित की वह आज का राज्य बन गया। लेकिन राज्य अपने आप में निर्जीव है। क्योंकि उसके जन–जीवन अथवा तो उस धरा पर होने वाली गतिविधि का प्रतिबिम्ब नहीं दर्शाता। इसलिये यहाँ पर उसे सोचने पर मजबूर हो जाना पड़ता है कि राज्य को सजीव बनाने वाला तत्व कोई और है। संभव है

उसका जन्म इन सबसे पहले हो गया हो। यह शब्द कोई और नहीं बल्कि राष्ट्र था।

पहले कौन से शब्द का उद्‌भव हुआ इस बहस में न पड़ें तब भी दोनों भिन्न हैं यह तय है। एक निर्जीव तंत्र 'मेकेनीजम' या अस्तित्व (एंटिटी) है। जबकि राष्ट्र सजीव जीवन मान अस्तित्व है जिसे अंग्रेजी में 'लिविंग ओरगेनीजम' कहा गया है। जन सामान्य की भाषा में राज्य शरीर है लेकिन राष्ट्र आत्मा है। मुर्दा शरीर किस काम का 'उसकी न तो कोई पहचान है और न ही उसके जन्म का उद्देश्य' इसलिये भारतीय साहित्य में प्रारंभ से ही राष्ट्र शब्द पर चर्चा हुई है। राज्य को समझ लेने के बावजूद भारतीय ऋषि मुनियों ने राष्ट्र की परिभाषा, जन्म, विकास और उसकी निर्मिति पर चर्चा की है। इसलिये हमारी बोलचाल की भाषा में स्व राष्ट्र (सौराष्ट्र) और महाराष्ट्र शब्द का उपयोग होता है। भारत के किसी भी क्षेत्र को राज्य के नाम से पुकारा गया हो यह ढूँढने पर भी नहीं मिलता। आगे चलकर अपनी सत्ता को परिभाषित करने के लिए राज्य शब्द का उपयोग हुआ दिखलाई पड़ता है। फिर वह मुगल राज्य हो या ब्रिटिश राज्य अथवा तो उनके अधीन कायम होने वाली रियासतें जिन्हें राज्य कहकर संबोधित किया गया। मेवाड, मारवाड, कलिंग, निजाम जैसे असंख्य राज्य। चूँकि वे किसी एक राजा के अंतर्गत थे इसलिये वास्तव में तो वे साम्राज्य थे। राष्ट्र होने की पहली शर्त उसकी स्वतंत्रता है और दूसरा वह जनता का जनता के लिए जनता के द्वारा होना चाहिए। भारत में प्राचीन जनपद और यूनान के स्पार्टा इस श्रेणी में आ सकते हैं। निर्जीव वस्तुओं को अधिक महत्व न देकर उसमें जीती जागती व्यवस्था का जो नामकरण किया गया वह सही अर्थों में राष्ट्र है।

देश की कौन सी भाषा और कौनसा साहित्य होगा जिसमें राष्ट्रीयता के आविष्कार की गाथा नहीं कहीं गई हो। साहित्य में गद्य हो या पद्य समान रूप से राष्ट्रीयता के स्वर उनमें सुनाई पडते हैं। भारत में भजन–कीर्तन से लगाकर संस्कृति, देश प्रेम और मातृभूमि की गौरव गाथा हर युग और हर सदी में पढने को मिलती है। भारत चूँकि प्रकृति प्रेम से ओतप्रोत देश रहा है। उसकी कृषि और वन्य जीवन तथा पर्वतों की गुफाओं में साधना आराधना नित्य का क्रम रहा है इसलिये उक्त साहित्य काव्य के रूप में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। भारत की कोई भाषा और बोली इससे अछूती नहीं रही है। केवल उदाहरण मात्र ही कुछ जानकारी प्रस्तुत की गई है। हिन्दी साहित्य में जब राष्ट्रीयता की खोज करते है तब इस बात का अहसास हो जाता है कि इस विशाल भू–भाग पर जो उत्तर और पश्चिम में स्थित है, वह सबसे अधिक उठापटक का केन्द्र रहा। विदेशी आक्रांताओं में मुस्लिमों ने तो सीधे–सीधे इस पर अपना आधिपत्य जमाया। लेकिन ब्रिटिशों ने १८वीं से २०वीं शताब्दी के १९४७ तक इस भू–भाग पर राज किया। आजादी की लडाई में सारे देश ने योगदान दिया लेकिन निर्णायक सफलता इसी धरती पर मिली इसलिये यह क्षेत्र राष्ट्रीयता का धडकता दिल बन गया।

गंगा–यमुना की सभ्यता वाले इस प्रदेश में भारतीय संस्कृति ने इतनी गहरी छाप छोडी है कि डॉक्टर इकबाल जैसे अलगाववादी कवि को भी यह स्वीकार करना पडा कि.... 'यूनानो मिश्रो रोमा सब मिट गए जहाँ से..... कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।' हिन्दी साहित्य का आदिकाल बाह्य आक्रमणों और आंतरिक कलह के कारण उथल–पुथल, अशांति और पारस्परिक वैमनस्य का युग था। सातवीं शताब्दी में हर्षवर्धन के निधन के पश्चात् कोई व्यक्ति नहीं रहा जो देश को एकसूत्र में बाँधे रखता। लेकिन चाणक्य जैसा व्यक्ति भी इस धरती पर जन्मा जिसने न केवल आक्रांताओं से लडने के लिए लोगों को संगठित किया बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था से लगाकर राजनीति के सूक्ष्म गुर भी सिखलाए। चाणक्य ने जो चिंतन किया और जो कुछ किया वह सब

भारतीयता और राष्ट्रीयता के लिए ही किया। जाति, देश और धर्म को विखंडित किए जाने वाला साहित्य राष्ट्रीय तो नहीं हो सकता लेकिन अपने नवयुवकों के सम्मुख शौर्य, पुरुषार्थ और बलिदान का मार्मिक चित्र प्रस्तुत कर अपने पूर्वजों के गौरवपूर्ण पद चिह्नों पर चलने और मातृभूमि के लिए बलिदान करके स्वयं को गौरवान्वित करने की प्रेरणा प्रदान करता रहा।

पृथ्वीराज और राणा प्रताप ने विदेशियों से जो युद्ध किये उनमें भारतीय हुंकार के दर्शन होते है। चंद्रबरदाई और भूषण की वाणी को आप क्या कहेंगे' हिन्दुत्व चूँकि राष्ट्रीयत्व से अलग नहीं है इसलिये जो संघर्ष हुआ वह राष्ट्रीयता के लिए ही था। अकबर को सफलता भले ही मिलती रही हो लेकिन उसी के दरबार में बैठे कवि इस बात से चिंतित थे कि भारत का स्वाभिमान कहीं घायल न हो जाए इसलिये अकबर के दरबार के कवि पृथ्वीराज को जब मालूम हुआ कि राणा प्रताप अकबर के सामने समर्पण करने जा रहे हैं तब उसने राणा को एक पत्र लिखा जिसने राणा प्रताप का इरादा बदल दिया। अकबरी दरबार के एक अन्य कवि दुर्सा जी राणा प्रताप की प्रशंसा में 'विरुद्ध वहतरी' लिखी इसमें स्वतंत्रता सैनानी और आत्म बलिदानी देशभक्त के रूप में राणा प्रताप की स्तुति पर कवि ने पाठकों के हृदय में वीरता, देशभक्ति और राष्ट्रीयता के भाव संचारित करने का प्रयास किया है।

केशव ने अपनी 'रत्न बावनी' में राजकुमार रत्नसिंह के बलिदान का जिस ढंग से गौरव किया है वह किसी राष्ट्र नायक की याद दिलाने के लिए पर्याप्त है। भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल को भारत की राष्ट्रीयता का प्रतीक बतलाया है। भक्तिकाल के कवियों ने ईश्वर के शत्रु के रूप में तत्कालीन सत्ता को ही अपना लक्ष्य बनाया। नानक और कबीर जिस एकता के लिए समाज को प्रेरित कर रहे थे, उनकी फूट और व्यक्ति में आए दुर्गुण को दूर करने का जो आध्यात्मिक और सामाजिक आंदोलन चला रहे थे वह किसके लिए था '१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् जो क्रांति का बिगुल बजा वह किस उद्देश्य के लिए था' तो इसका एक ही उत्तर मिलता है अपनी भूली बिसरी राष्ट्रीयता को और भारतीय मूल्यों को लौटा लेने के लिए।

राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक भावना है। किसी प्रदेश विशेष के निवासियों की यह भावना और विश्वास है कि वे एक हैं और अपना भविष्य उज्ज्वल करने के लिए उनका दृढ़ संकल्प हैं। इसका नाम ही राष्ट्रीयता है जो साहित्य रूपी सरिता से निकल कर मानवता के मैदान को सींचती हुई अनंत में विलीन हो जाती है।

ईमेल–chaitrabhi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 80-85

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कविता साहित्य में राष्ट्र प्रेम

डॉ. सुनीता राठौर

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय एम. एम. आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चाम्पा।

कविता के माध्यम से हम राष्ट्र में प्रबल प्रेम जगा सकते है, कवि कविता केवल व्यक्ति में राष्ट्र के प्रति प्रेम जागरूक करने के लिए लिखते है। राष्ट्र के प्रति अपनत्व तथा अगाध प्रेम की भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। आज राष्ट्रीयता एक प्रबल शक्ति एवं प्रभावशाली प्रेरणा है। राष्ट्रीयता का संबंध केवल जड़भूमि से न होकर आंतरिक होता है। अपने देश के अगाध प्रेम में अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं धर्म के प्रति गौरव में अपने देश की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार के प्रयत्न आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीयता की भावना व्यक्ति को अपने राष्ट्र के लिए उच्च कोटि के शौर्य तथा बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाली सामूहिक भावना की एक ऐसी उच्चतम अभिव्यक्ति है, जिसका इतिहास निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है। राष्ट्रीयता की भावना एक मानसिक अनुभूति अथवा मन की एक स्थिति है। राष्ट्रीयता के कारण समाज में ऐसी स्नेहशीलता निर्माण हो जाती है, जिसकी वजह से लोग एकता के सूत्र में बंध जाते है – ''राष्ट्रीयता के लिए देश की अथवा राज्य की इकाई होना आवश्यक है। यह बात दूसरी है, कि विभिन्न युगों में देश अथवा राज्य की सीमाएं घटती–बढ़ती है सीमाओं के अनुपात में ही राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण में अंतर आ जाता है।''

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'शुभकामना' कविता 'भारत–भारती' में संकलित है। 'भारत–भारती' गुप्त जी की राष्ट्रीय भक्ति को प्रकट करने वाली रचना है। 'शुभकामना' कविता में गुप्त जी कर्तव्य से न हटने तथा दृढ संकल्पी बनने का संकेत किया है। गुप्त जी कहते है, कि चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न आये अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हम अनीति का रास्ता नहीं अपनाएँ, क्योंकि इससे जीवन में सरलता नहीं रहती है। जब तक इस तन में प्राण है, हम पुण्य का रास्ता ही अपनाएँ। सत्य के मार्ग पर चलकर कठिनाई जरूर आयेगी, लेकिन विजय सत्य की ही होगी। हमारे पास सम्पत्ति हो तथा हम विपत्ति में हो तब भी सत्य का मार्ग न छोड़े और कभी भी विचलित न हो।

''उपलक्ष के पीछे कभी विगलित न जीवन – लक्ष्य हो,
जब तक रहें ये प्राण तन में पुण्य का ही पक्ष हो।
कर्तव्य एक न एक पावन नित्य नेत्र – समक्ष हो,
सम्पत्ति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो।।

निराला ने भी मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम प्रकट किया है। निराला के गीत 'भारत वंदना' कविता में (भारति जय विजय करे) में भारत की सुषमा तथा सागर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है तथा निराला जी कहते

है, कि हे भारत माता! आप सदा विजय हो। सदैव आपकी जय–जय कार हो।

भारति जय विजय करें
कनक शस्य कमल करें।
लंका पतल शतदल गर्जितोर्भि सागर जल
धोता शुचि चरण–युगल स्तव कर बहु – अर्थ भरे।
तरू–तृण–वन–लता वसन अंचल में खचित सुमन
गंगा ज्योतिर्जल कण–धवल धार हार गले।
X X X
ध्वनित दिशाएँ उदार शतमुख शतरव मुखरे।''

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी 'जागो फिर एक बार' कविता में भारतीयों को उद्‌बोधन दिया है, कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के महासंग्राम में योद्धा की तरह संघर्ष करो। अपनी वीस्वती परंपरा को अक्षुण्ण रखने वाले भारतीय व्यक्ति को अपनी संपूर्ण कायरता को त्यागकर अपने पराक्रमी और पुरूषार्थी स्वरूप को जागृत करो। अपनी दासता के संपूर्ण बंधनो को तोड़ने के लिए उसे जागृत करना आवश्यक है।

'जागो फिर एक बार' कविता में निराला जी ने भारत के अतीत का गौरवमय चित्रण किया है। इसी संदर्भ में कवि भारतियों को जागते रहने का संदेश देते है, देशवासियों को नई उत्साह और ओजस्विता को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, कवि निराला कहते है :–

''जागो फिर एक बार!
समर अमर कर प्राण,
गान गाये महासिन्धु–से सिन्धु–नद तीर वासी!
X X X
तुम हो महान्, तुम सदा हो महान्
जागो फिर एक बार।''

'स्वतंत्रता पुकारती' जयशंकर प्रसाद जी द्वारा लिखी गई है, इस कविता में देश की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु भारत माता, पिता के वीर सपूतों का आह्‌वान किया है। प्रसाद जी स्वतंत्रता संघर्ष के बीच सिपाही के रूप में देश प्रेम की उत्कट तीव्र भावना से ओतप्रोत होकर भारत माँ के वीर सपूतो का आह्‌वान करते हुए लिखते है कि भारत माता के तुम वीर पुत्र हो, दृढ़ संकल्प करके सोच लो, पुण्य रास्ता पर चलो, बढ़े चलो–बढ़े चलो और अपनी देश की रक्षा करो। प्रसाद की 'स्वतंत्रता पुकारती' में यह झलक हम देखते है –

अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पन्थ है–बढ़े चलो, बढ़े चलो।

पं. माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना के संवाहक ही नहीं, अपितु उसके पोषक और प्रतीक भी थे। वर्तमान दशा के दुःखद, उपेक्षित और असहाय पक्षों को उद्‌घाटित करते हुए इन्हें राष्ट्रोत्थान के लिए रीढ़ स्वरूप चित्रित करने वाले राष्ट्रीय कवियो में कविवर माखनलाल चतुर्वेदी का स्थान अत्यन्त विशिष्ट है।

जेल में लिखी गयी माखनलाल चतुर्वेदी जी की प्रसिद्ध कविता 'पुष्प की अभिलाषा' में कवि ने केवल

बलिदानी वैश्णव व्यक्तित्व की निष्ठा ही प्रकट नहीं हुई है, वरन उस युग के सम्पूर्ण राष्ट्रीय संघर्ष की चेतना भी ध्वनित हुई है। कवि मातृभूमि के लिए उत्सर्ग की भावना व्यक्त करते हुए फूल के मुँह से कहलवाते है कि हे बनमाली, मुझे तोड़कर जिस पथ में मातृ भूमि के लिए वीर, बलिदान करने गये थे, उस पथ में फेंक दो –

''मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।''

चतुर्वेदी जी की अपनी काव्य–साधना एक महान् लक्ष्य और साध्य क्रान्ति के उन्मेष से देश की स्वतन्त्रता और देशोत्थान का सुखद स्वरूप स्थापित करने का रहा। इस दिशा में वे पूरे योग्य दिखाई देते है, क्योंकि उनकी क्रान्तिकारी कविताओं की धार तीखी है, इस प्रसंग में उनकी एक कविता 'जवानी' के कुछ अंश बताये जा रहे है –

''आग अंतर में लिए पागल जवानी।
कौन कहता है, कि तू विधवा हुई, खो आज पानी।।
X X X
धानियों की–सी पहन वानी आज धानी
आग अंतर में लिए, पागल जवानी।।''

''निःशस्त्र सेनानी'' कविता माखन लाल चतुर्वेदी द्वारा रचित है इसमें चतुर्वेदी जी ने भारतीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति के प्रयास के विषय में कहा है। इसमें चतुर्वेदी जी गांधी जी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा के समय वहाँ की स्थिति का चित्रण कर रहा है, दुःशासन के बन्धु अर्थात् अंग्रेज वहाँ अत्याचार कर रहे थे और हमेशा युद्ध के तत्पर रहते थे। दूसरी ओर महात्मा गाँधी और दक्षिण अफ्रीका की जनता है, जिसकी युद्ध की इच्छा नहीं है, आँखें झुकी हुई है, किन्तु कभी–कभी ऐसा आभास होता मानो उनके दोनों हाथ कह रहे हों हथियार उठा लो। लाखों तलवारें हाहाकार मचाने के लिए तत्पर हैं। सभी लोग बलि के पशु के समान असहाय और मूक खड़े है, किन्तु कवि कहता है कि, आकाश की ओर देखो इसकी प्रकृति बिल्कुल शान्त है, ऐसा ही स्वयं को बनाओ। चाहे विश्व में कितनी ही क्रान्ति क्यों न हो जाये हम हथियार नहीं उठायेंगे। कवि इसमें सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा और शांति का संदेश दिया है और भारत के अहिंसा के संदेश को जन–जन तक पहुँचाया है। इस संबंध में माखनलाल चतुर्वेदी जी का एक अंश देखिए –

''लपकती है लाखों तलवार, मचा डालेंगी हाहाकार,
मारने–मरने की मनुहार, खड़े है बलि–पशु सब तैयार।
किन्तु क्या कहता है, आकाश? हृदय! सुन यह गुंजार,
'पलट जाये चाहे संसार, न लूँगा इन हाथों हथियार।''

'भारतमाता' कविता में सुमित्रानंदन पंत जी ने तत्कालीन परिस्थितियों में संघर्षरत भारतीय जीवन का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने भारतीयों की गुलामी की दशा को बताया है जिसमें ये भारतीय की दीन–हीन शोषित, दुःखी, असभ्य–अज्ञान और उदासीन अवस्था का चित्रण करते है। 'भारत–माता' में भारत को माँ की संज्ञा देकर अहिंसा की प्रशंसा की गई है। पंत जी के अनुसार भारत माता का इतने वर्षों की तपस्या और संयम का फल शीघ्र ही मिलने वाला है। अर्थात शीघ्र ही भारत को स्वतन्त्रता प्राप्ति होने वाली है, क्योंकि अब

भारतवासियों को अहिंसा रूपी अमृत का पान कराने वाले महान् नेता का आगमन हो चुका है।

पंत जी और आगे कहते है कि हे भारत माता! तुम जग की जननी हो, इसलिए अपने पुत्रों के मन से भय को हर लो, अज्ञानता रूपी अंधकार को मिटा दो, व हमारे हृदय से विभ्रम को दूर फेंक कर हमारा विकास करो इसी संदर्भ में कवि पंत कहते है –

सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन मन भय, भव तम भ्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी।

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत थी। उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता के स्वर कूट–कूटकर भरे हुए है। वे स्वयं देश की स्वतन्त्रता हेतु कई बार जेल भी गई। उन्होने जेल में भूख से बिलखती बिटिया को बहलाने के लिए अरहर दलने वाली महिला कैदियों से अरहर की दाल लेकर तवे पर भूनकर खिलाई लेकिन संघर्ष के मार्ग से विचलित नहीं हुई। उनका राष्ट्र–प्रेम उनके परिवारिक कर्तव्य से अलग नहीं था। उनका देश प्रेम के प्रति प्रेम देखिए –

''गिरफ्तार होने वाले है, आता है वारण्ट अभी,
X X X
जेल गए, जनता ने पूजा, संकट में अवतार हुए।
मै पुलकित हो उठी यहाँ भी, आज गिरफ्तारी होगी,
X X X
कर लो अब स्वीकार बधाई, छोटी बहिन सुभद्रा की।''

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय कविताओं में ओजस्विता है। यह वर्तमान में भी प्रासंगिकता है, कि अभी भी हमें देश प्रेम के प्रति जागरूक होना चाहिए। देश प्रेम को सरस भाव से व्यक्त करने के कारण कवि शमशेर ने सुभद्रा कुमारी चौहान को 'राष्ट्रीय वसंत की प्रथम कोकिला' कहा है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में ओजस्वी ध्वनि पराधीनता और दमन के विरूद्ध गूँज उठी है। उनकी 'जलियाँवाला बाग में बसन्त' कविता में ओजस्वी स्वर दिखाई देता है। उनकी अन्य राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण कविताओं में 'लक्ष्मीबाई की समाधि' 'वीरो का कैसा हो बसन्त' आदि कविताएँ उल्लेखनीय है। 'वीरो का कैसा हो बसन्त' में कवयित्री भारतीय युवकों को देश को स्वतन्त्र कराने के लिए आह्वान करती है। वह भारतीय वीरों को अपने गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरणा लेने का आह्वान करती है। इसका कुछ अंश देखिए –

'कह दे अतीत अब मौन त्याग, लंके, तुझमें क्यों लगी आग?
हे कुरूक्षेत्र! अब जाग, जाग, बतला अपने अनुभव बसन्त
वीरों का कैसा हो वसंत?

इस प्रकार 'वीरो का कैसा हो बसन्त' कविता सुभद्रा कुमारी चौहान की देश प्रेम तथा राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत है। इसमें उन्होंने नवयुवकों को प्रेरणा दी है, कि वह भोग–विलास में लिप्त रहने की अपेक्षा अपने देश

को आजाद कराने के काम करें।

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'झाँसी की रानी' कविता राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत है। इस कविता को सुनने के बाद भारतीयों के मन में उत्साह का संचार होता है। उनकी भुजाएँ फड़क उठती है। वे अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए तत्पर हो जाते थे। कवयित्री मुक्त हृदय से रानी लक्ष्मीबाई का गुणगान करते हुए कहती है –

''सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढे भारत में आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की मन में सबने ठानी थी
चमक उठी सन् सन्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हर बोलों के मुँह, हमनें सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह, तो झाँसी वाली रानी थी।''

इस प्रकार उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई को आदर्श रूप में बताकर भारतीयों में स्वतंत्रता के लिए त्याग और बलिदान करने की भावना उत्पन्न की। देश की पराधीनता के दिनो में इस रचना ने स्वतन्त्रता सेनानियों को जितना बल और पौरूष प्रदान किया वह अवर्णननीय है। इनकी रचनाओं में वीरभाव के साथ–साथ भावुकता भी है।

वस्तुतः बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एक सिद्धान्तवादी राष्ट्रवादी रचनाकार थे। आदर्शवाद उनके संस्कारों में था। राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभाषा प्रेम और राष्ट्रीय संस्कृति प्रेम उनके जीवन में सबसे बड़ा मूल्य था।

राष्ट्रीय आन्दोलन में यायावर की भाँति घर का सुख छोड़कर भटकते रहना ही कवि की नियति बन गया था। उसके लिए सांसारिक विलास, महल, धन संपदा इत्यादि कुछ मूल्य नहीं रखते। कवि स्वयं स्वीकार करता है कि कभी भी सांसारिक आकर्षण उन्हे अपने लक्ष्य से विमुख नहीं कर सका। 'हम अनिकेतन' कविता में अपनी फकीरी का कुछ ऐसा ही वर्णन करते है –

देखे महल, झोंपड़े देखे, हासविलास मजे के।
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे।
लालच लगा कभी पर हिय में, मच न सका शोणित उद्वेलन।
हम अनिकेतन, हम अनिकेतन।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जीवन मातृभूमि की स्वाधीनता में लगा था, वहीं उनका कवि कर्म इसमें लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग बना रहा था। वे केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि अन्य रचनाकारों को भी संदेश दे रहे थे कि युगीन सत्य की उपेक्षा न करें। वर्तमान समय संघर्ष का है, तो कवि की वाणी में भी उथल–पुथल भरी भावाभिव्यक्ति आवश्यक है, क्योंकि उसकी वाणी से ही जनता जागृत होगी और स्वाधीनता की हिलोरें उठने लगेगी। कवि मन को संबोधित करते हुए 'विप्लव गायन' कविता में वे कहते हैं –

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं, जिससे उथल–पुथल मच जाए।
शांति दंड टूटे उस महारूद्र का सिंहासन थर्राए।

उसकी श्रवासोच्छवास दाहिका, विश्व के प्रांगण में घहराए।
नाश! नाश! हा महानाश! की प्रलयंकारी आँख खुल जाए।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, कि 'कविता साहित्य में राष्ट्रप्रेम' अमिट रूप में मिलते है, मैथिलीशरण गुप्त की 'शुभकामना' (भारत–भारती) निराला की 'भारत वंदना', 'जागो फिर एक बार', प्रसाद की 'स्वतंत्रता पुकारती' तथा पं. माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा', 'जवानी', 'निःशस्त्र सेनानी' सुमित्रानंदन पंत की 'भारत–माता', सुभद्राकुमारी चौहान की 'वीरो का कैसा हो बसंत', 'झाँसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा नवीन की, 'हम अनिकेतन', 'विप्लव गायन' ये सारी कविताएँ राष्ट्र प्रेम से भरी हुई है, वर्तमान समय में हम इन कविताओं की सभी भावनाओं को अपने जीवन में अमल करें तो वास्तव में हमारा देश विश्व के देशों में, राष्ट्रप्रेम में प्रथम स्थान पर रहेगा।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :-

1. रामकुमार वर्मा, धर्मयुग।
2. अजयमाला, बी.ए. द्वितीय वर्ष हेतु, हिन्दी साहित्य, प्रथम प्रश्न–पत्र पृ. सं. 11, अजयमाला, प्रकाशक अजय प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)
3. भारतीयता के अमर स्वर, प्रधान संपादक – प्रोफेसर धनंजय वर्मा, संपादक – प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्र, पृ. सं. 1, प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा भोपाल (म.प्र.) 462003
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – जागो फिर एक बार कविता (परिमल कविता संग्रह)
5. भारतीयता के अमर स्वर, प्रधान संपादक – प्रोफेसर धनंजय वर्मा, संपादक प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्र, पृ. सं. 2 प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल (म.प्र.) 462003
6. शोध–धारा – Chief Editor – Dr. (Smt.) Neelam Mukesh
   Editor- Dr. Rajesh Chandra Pandey, पृ.सं. 104 बिलासपुर संगोष्ठी विशेषांक
   Publisher : Dr. Rajesh chandra Pandey
   Shakshik Avam Anushandhan sansthan Orai (Jalaun) U.P.
7. अजयमाला बी.ए. द्वितीय वर्ष हेतु, हिन्दी साहित्य, प्रथम प्रश्न–पत्र, पृ. सं. 70, अजय माला, प्रकाशक – अजय प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)
8. हिन्दी साहित्य भाग – 2 प्रधान संपादक डॉ. राजेन्द्र मिश्र पृ. सं. 23, 19, 42, प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा, भोपाल (म.प्र.) 462003
9. अजयमाला, बी.ए. द्वितीय वर्ष हेतु, हिन्दी–साहित्य, प्रथम प्रश्न–पत्र, पृ. सं. 133, 136 अजयमाला, प्रकाशक, अजय प्रकाशन, रायपुर (छ.ग.)
10. राष्ट्रीय चिंतन के परिप्रेक्ष्य में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का काव्य – नेट से

मो. नं. – 9907987060
sunitarathore1503@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 86-91

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास साहित्य में राष्ट्रीय प्रेम विशेषतः 'आजादी के अमृत महोत्सव' के आलोक में

निर्मला पुरसवानी, शोधार्थी
प्रो. (डॉ.) आदित्य गुप्त, शोध निर्देशक
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, (राज.)

किसी भी देश का स्वतंत्र होना उसकी अस्मिता का विशेष सूचक होता है। हमारे भारत देश का स्वाधीन होना ही उसकी अस्मिता को प्रकट करता है। 15 अगस्त 1947 ई. को ब्रिटिश गुलामी की जंजीरों से स्वतंत्र हुए हमारे भारत देश ने 15 अगस्त 2022 को अपनी 75वीं वर्षगांठ का जश्न मनाया लेकिन इसकी शुरूआत 75 हफ्ते पूर्व ही 12 मार्च 2021 ई. को 'आजादी के अमृत महोत्सव' के रूप में हो गई जिसकी यात्रा का दौर वर्तमान में भी जारी है जो 15 अगस्त 2023 को अपना अंतिम सफर का कारवां तय करेगी।

भारत देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित आजादी के इस अमृत महोत्सव का उद्देश्य वर्तमान युवा पीढ़ी में देशभक्ति की उस भावना को जागृत करना रहा है जिसे आधुनिक भौतिकवादी संस्कृति की चकाचौंध में युवा पीढी भूलती जा रही है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी में राष्ट्रीय प्रेम व देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना है। इस महोत्सव के माध्यम से युवा पीढी को हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को जानने व समझने का अवसर मिला है जो उनके लिए आवश्यक था ताकि वे हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान, संघर्ष व उनकी शहादत की अमर गाथाओं को सहेज कर रख सके और उससे प्रेरित हो सके क्योंकि युवा पीढी ही देश के भावी कर्णधार है। साथ ही यह महोत्सव भारतीय युवा पीढी में इन स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को जीवंत करने में मदद करता है कि जिस स्वतंत्र भारत में वे खुली सांस ले रहे है, उसके पीछे स्वतंत्रता सेनानियों के साहस, संघर्ष और बलिदान के ने जाने कितने कारवां जुडे हुए है जिनका उन्हे एहसास तक नहीं है। इस महोत्सव ने भारतीय युवा पीढी में छिपी ताकत को फिर से खोजने के लिए प्रोत्साहित किया है और अपने देश भारत को विश्व के अन्य देशों में सबसे शीर्षस्थ स्थान हासिल करने के लिये युवा पीढी को आगे आने के लिये प्रेरित किया है। साथ ही इस महोत्सव ने पिछले 75 वर्षों में भारत द्वारा की गई प्रगति से भी युवा पीढ़ी को परिचित कराया है।

आजादी का अमृत महोत्सव सम्पूर्ण देशवासियों के लिये गौरव की बात है और इस महोत्सव के अन्तर्गत ही आजादी की 75वी वर्षगांठ के अवसर पर सरकार द्वारा ''हर घर तिरंगा, घर घर तिरंगा'' अभियान भी चलाया गया जिसका सम्पूर्ण देशवासियों ने हृदय से स्वागत तो किया ही साथ ही एक योग्य नागरिक का फर्ज भी

निभाया।

आजादी के अमृत महोत्सव में देशवासियों की इस सक्रिय सहभागिता में साहित्य और साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है जिसने समय–समय पर अपनी लेखनी के द्वारा भारतीयों ने देशभक्ति की भावना को बढावा दिया। उनकी यह लेखनी स्वतंत्रता के लिये भारतीय संघर्ष के दौरान भी नहीं रूकी बल्कि साहित्यकारों ने अपने साहित्य के विविध रूपों द्वारा क्रांतिकारी अंश लिखे जिसका उद्देश्य लोगो के मन में सोई हुई राष्ट्र प्रेम व देशभक्ति की भावना को जगाना व भारत को स्वतंत्र कराने के लिये खडे होने का आह्वान करना था। साहित्य में भी विशेष रूप से हिन्दी साहित्य ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया क्योंकि भारत में बहुसंख्यक लोगो की भाषा हिन्दी है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दू हरिशचन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, नागर्जुन नरेन्द्र शर्मा इत्यादि साहित्यकार हुए है जिन्होने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगो में राष्ट्रीय प्रेम की भावना को जगाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चूंकि कविता के मर्म को समझना मुश्किल होता है इसलिए उपन्यास ऐसी विधा है जिसके माध्यम से साहित्यकार अपने विचारों को बड़ी ही सहजता से प्रकट करता है। भगवतीचरण वर्मा हिन्दी साहित्य में ऐसे साहित्यकार रहे है जिन्होने अपने उपन्यासों के माध्यम से राष्ट्रीय प्रेम की भावना को व्यक्त किया जिसे हम आजादी के अमृत महोत्सव के आलोक में देख सकते है। आजादी के अमृत महोत्सव के पीछे भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की एक लम्बी दास्तान रही है जिसमें ब्रिटिश शासन के लगभग 200 वर्षों की गुलामी को सहना पडा, जिससे मुक्ति के लिए अनेक राजनीतिक घटनाऐं घटित हुई, अनेक राजनीतिक आन्दोलन चलाए गए, हजारों लाखों स्वतंत्रता सेनानियों को जेल की रोटी खानी पडी व इस संघर्ष में शहादत देनी पड़ी और अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिसके भूले बिसरे चित्रों का दिक्दर्शन भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में बडी ही सहजतापूर्वक किया जा सकता है जो उनके राष्ट्रीय प्रेम को ही दर्शाता है। उनके उपन्यासों के माध्यम से भारत देश की नई पीढ़ी भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के अतीत के भूले बिसरे चित्रों को देख सकती है समझ सकती है, जान सकती है ताकि वे अपने भारत देश की आजादी की अक्षुण्ण रख सके, साथ ही प्रेरित हो सके। यही आजादी के अमृत महोत्सव का उद्देश्य भी है। साथ ही वर्मा जी के उपन्यास स्वातन्त्रयोत्तर भारत में हुई प्रगति का लेखा–जोखा भी प्रस्तुत करते है। इस रूप में भी वर्मा जी के उपन्यास आजादी के अमृत महोत्सव से जुड जाते है।

भगवतीचरण वर्मा ने अपने उपन्यास रूपी खेत में किसी एक युगीन स्वाधीन संघर्ष से जुड़ी राजनीतिक घटना रूपी क्यारी को स्थान नहीं दिया बल्कि अनेक राजनीतिक घटनाओं रूपी क्यारियों को भी स्थान दिया। इन राजनीतिक घटनाओं रूपी क्यारियों में जो भी पौधे लगाए गए, वे सत्य पर आधारित थे, जीवंत थे चाहे वह पौधा 1885ई. में भरतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का हो अथवा गांधीजी द्वारा चलाए गए अनेक आंदोलनों का हो, प्रथम–द्वितीय विश्व युद्ध का हो या दीर्घकाल की विदेशी दासता से मुक्ति के लिये किया गया स्वाधीनता संग्राम का हो या फिर भारत का हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के रूप में राष्ट्र विभाजन का हो, राष्ट्र विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न साम्प्रदायिक दंगे, मारकाट, हत्या, बलात्कार, लाखो लोगो के बेघर व शरणार्थी हो जाने का अथवा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की नृशंस एव हृदयदावक घटना का हो अथवा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् होने

वाले आम चुनावों अथवा चीनी आक्रमण का पौधा हो। लम्बे समय तक चले स्वाधीन संघर्ष से जुडी हुई विस्तृत घटनाओं को अपने उपन्यासों में समेटना किसी भी उपन्यासकार के लिए कठिन कार्य है लेकिन भगवती जी ने इसे अपने उपन्यासों में समेट कर राष्ट्रीय प्रेम को व्यक्त किया है।

राष्ट्रीय प्रेम की दृष्टि से उनके उपन्यासों में 'भूले बिसरे चित्र', 'टेढे मेढे रास्ते', 'सीधी सच्ची बातें', 'प्रश्न और मरीचिका', 'सामर्थ्य और सीमा' 'सबहि' नचावत राम गोसाई, मुख्य है जिसमें उन्होने भारत की 1885–1962 तक की उन विशाल राजनीतिक गतिविधियों का विस्तृत चित्रण किया है जो भारतीय राजनीतिक इतिहास में अपना अलग ही महत्व रखता है क्योंकि हमारे देश में यही से सही मायनों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये राजनीतिक हलचलों का दौर प्रारम्भ होता है।

भारत में 19वीं शती के अन्त में 1885 ई. में ए. ओ. ह्यूम की अध्यक्षता में इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई जिसके बारे में भगवती जी अपने उपन्यास 'भूले बिसरे चित्र' में लिखते है ''कांग्रेस सिर्फ हिन्दुस्तान में सुधारों की मांग करती है, वह हिन्दुस्तान के लिए डोमीनियन स्टेटस चाहती है ताकि हिन्दुस्तान वाले अपनी हालत सुधार सके।''[1] प्रारम्भ में कांग्रेस का स्तर अंग्रेजों के प्रति श्रद्धा व भक्ति का था । धीरे–धीरे 19वीं शती के अन्त तक अंग्रेजी सरकार पर से कांग्रेस का विश्वास हटने लगा। 1 जुलाई 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा जब बंगाल विभाजन की घोषणा की गई तब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बंगाल में स्वदेशी आंदोलन की शुरूआत की जिसमें विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार व स्वदेशी वस्तुओं के अपनाने की बात की गई। 'भूले बिसरे चित्र' में वर्मा जी ने इस स्वदेशी आंदोलन का यथार्थ चित्रण किया है ''मूलगंज के चौराहे पर विदेशी कपड़ो की होली जलाई गई, बड़े उत्तेजनापूर्ण भाषण दिये गए। बाजार में एक तरह की घबराहट सी है, लोग अपनी अपनी दुकानों से विलायती कपड़ा हटा रहे है। कौन जाने, कब क्या हो जाए। विलायती कपड़ा बाजार में दिखता नही। यह स्वदेशी का आंदोलन जोर पकड रहा है।''[2]

वर्मा जी ने इसके पश्चात् 1911 में आयोजित दिल्ली दरबार की भव्यता व शोभा का सजीव चित्रण भी किया है। ''समस्त भारतवर्ष के देशी नरेशों के खेमों के लिए स्थान निर्धारित कर दिए गए थे और उनके खेमे तेजी के साथ लगाए जा रहे थे। देश भर की सामग्री उमड़ी पड़ रही थी। वहाँ हीरे, जवाहररात, सोना, चाँदी से लेकर आटा, दाल, साग, सब्जी तक और इस सबका प्रदर्शन देखने के लिए दिल्ली की जनता की भीड उमड़ी पड़ी थी।''[3] लेकिन दिल्ली दरबार के प्रबन्ध में लगे हुए भारतीयों की निस्सहाय भरी स्थिति को भी लेखक ने अपने उपन्यास में व्यक्त किया है कि किस तरह रास्ता चलते हुए अंग्रेज सिपाही और उनके अफसरों के लिए इन भारतीय मजदूरों का अस्तित्व केवल जानवरों के झुंड के अस्तित्व के समान था और हिन्दुस्तानी अफसर एवं ठेकेदार सहमे हुए अपनी नजरे बचाते हुए इधर उधर दिखाई दे रहे थे। इसके पश्चात् उन्होने रोलेक्ट एक्ट के विरोध के फलस्वरूप भारतीयों में उदित हुई राष्ट्रीय चेतना के विरोध स्वरूप जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड का भी चित्रण किया है जिसकी भयावहता की और रचनाकार ने संकेत किया है ''बिना हथियार के लड़ने के अर्थ होते है अवश्यम्भावी मृत्यु। जलियावाला बाग में यही हुआ, सारे पंजाब में यही हुआ। ईंटे और ढेले फैंक कर तो मशीनगनों से नहीं लड़ा जा सकता।''[4] इस जलियावाला बाग हत्याकाण्ड से ही असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

असहयोग आंदोलन की प्रारम्भिक अवस्था में सरकार द्वारा दी गई उपाधियों का परित्याग किया गया।

धारा सभाओं, अदालतों व शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया जाने लगा। घर–घर में चरखा चला गया। खादी वस्त्रों का प्रयोग, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। इस स्थिति का सजीव अंकन वर्मा जी ने अपने उपन्यास 'भूले बिसरे चित्र' में की है ''फरहतुल्ला ने ऐलान कर दिया कि महात्मा गाँधी और कांग्रेस के हुक्म से उन्होने आज से वकालत छोड़ दी। यही नहीं थानेदार विक्रम सिंह ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। एक दफा मेरे जी में आया कि मैं भी इस्तीफा दे दूँ।''[5] रचनाकार ने इस आंदोलन की सबसे बडी विशेषता की और भी इंगित किया है कि इस आंदोलन में स्त्रियों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया जो पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाती हुई भाग लेती है बल्कि पुलिस द्वारा उनके गिरफ्तारी भी की जाती है। असहयोग आंदोलन के पश्चात् वर्मा जी ने 'भूले बिसरे चित्र में' चोरी–चोरा हत्याकाण्ड व नमक सत्याग्रह आंदोलन की भी अभिव्यक्ति दी है।

रचनाकार ने 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के पश्चात् 'टेढे मेढे रास्ते उपन्यास में जहाँ 1930–1938 तक की तत्कालीन युगीन राजनीतिक हलचलों को अपने उपन्यासों मे चित्रित किया है वही तत्कालीन प्रमुख राजनीतिक विचारधारों गांधीवाद, साम्यवाद व क्रांतिवाद का भी यथार्थ अंकन किया है। यथार्थ इन सभी राजनीतिक विचारधाराओं का उद्देश्य एक ही था स्वतंत्रता प्राप्ति लेकिन इनका जो रास्ता था, वह अलग–अलग था। अन्त में भारतीयों द्वारा कांग्रेसी विचारधारा को ही स्वीकार किया गया लेकिन रचनाकार ने गांधीवादी आंदोलनों के अतिरिक्त सम्पूर्ण क्रांतिकारियों के जीवन प्रतिबिम्ब को भी दर्शाने का प्रयास किया है जिन्हे स्वाधीनता इतिहास में कम आंका गया जबकि उनका भी महत्व उतना ही है जितना अहिंसावादियों का। क्रांतिकारी जो भी हिंसक कार्य करते है उसके पीछे देश हित एवं राष्ट्रीय प्रेम की भावना छिपी होती है लेकिन उन्हें इतनी भी स्वतंत्रता नहीं होती कि ये अपना नाम जाहिर कर सकें। वस्तुतः गहराई से देखा जाए तो भारतीय स्वाधीनता इतिहास में क्रांतिकारी आंदोलन एक स्वर्ण युग है लेकिन भारतीय नेताओं ने इसे दबा सा दिया और उसे भारतीय इतिहास में उतना महत्व नहीं मिल सका, जितना मिलना चाहिए था। यदि उन्हे अपेक्षाकृत सम्मान व स्वतंत्रता मिली होती तो हमारा भारतवर्ष 1947 ई. से पूर्व ही स्वतंत्र हो जाता और भारत पाक विभाजन जैसी त्रासदी को नहीं झेलना पड़ता। आजादी का अमृत महोत्सव गुमनाम क्रांतिकारियों के अमूल्य योगदान को पुर्नजीवित करता है जिसे रचनाकार ने अपने उपन्यासों में यथोचित स्थान दिया है।

'टेढे मेढे रास्ते' उपन्यास का अगला पड़ाव 'सीधी सच्ची बाते' है जिसमें उन्होने 1939–1947 तक की भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की लम्बी व करूण दास्तान को समेटा है। इस उपन्यास में ब्रिटिश सरकार की कूटनीति, हिन्दु मुस्लिम संघर्ष, भारत छोड़ो आंदोलन, गांधी व जिन्ना के अहं व व्यक्तित्व में टकराहट के फलस्वरूप भारत विभाजन की मांग, विभाजन के उपरांत स्वतंत्रता प्राप्ति इत्यादि राष्ट्रीय गतिविधियों की अभिव्यक्ति दी है जिसे जानना और समझना आजादी के अमृत महोत्सव के आलोक को तीव्र करता है। वर्मा जी ने भारत विभाजन के पीछे इस सत्य को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है कि जहाँ अंग्रेजो की डिवाईड एण्ड रूल की नीति ने हिन्दु मुस्लिम के बीच एक खाई उत्पन्न करने का कार्य किया वहीं गांधी और जिन्ना के अहं और व्यक्तित्व की टकराहट ने इस खाई को और भी अधिक गहरा बना दिया। इसे अभिव्यक्त करते हुए वर्मा जी कहते है ''जिन्ना को गाँधी के बाद का दूसरा दर्जा नहीं, उन्हें गांधी के मुकाबले बराबरी का दर्जा चाहिए। गांधी हिन्दु है, जिन्ना मुसलमान है। कोई एक दूसरे से बडा छोटा क्यों हो? मैं कहता हूँ कि कांग्रेस के इस अड़ने से और गांधी जी की इस जिद से देश का बटवारां होकर रहेगा।''[6] महात्मा गांधी, जिन्ना की महत्वाकांक्षा को

समझ नहीं पा रहे थे और यदि समझ रहे थे तो उसे जान–बूझकर नजर अन्दाज कर रहे थे। यही बात जिन्ना के संदर्भ में भी थी कि वह हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा आदमी बनना चाहते थे। रचनाकार की पैनी दृष्टि इस सत्य को पहचानने में नहीं चूकी और उन्होने भारत विभाजन के उन कारणों को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है जिसे तत्कालीन युगीन कांग्रेसी नेता और भारतीय जनता नहीं समझ सकी जो अब केवल इतिहास बन चुका है लेकिन वर्मा जी अपनी तीक्ष्ण दृष्टि द्वारा इस युगीन राजनीतिक रहस्य को उद्घाटित कर देते है जो आजादी के अमृत महोत्सव को उचित दिशा निर्देश देता है। इसके अतिरिक्त वर्मा जी ने भारत की आजादी के तात्कालिक कारण के रूप में 1946 के नौसैनिक विद्रोह को भी अभिव्यक्त किया है ''बीस हजार हिन्दुस्तानी नाविकों ने हड़ताल कर दी है। हमें अच्छा खाना चाहिए, अच्छा व्यवहार चाहिए।''[7]

वास्तव में यह वह विद्रोह था जिसने अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाने के लिए सबसे अधिक मजबूर किया लेकिन भारती स्वाधीनता इतिहास में आज भी इसे उचित स्थान नहीं मिल पाया जिसे वर्मा सदृश्य युगीन उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में चित्रित किया। 'आजादी का अमृत महोत्सव' हमें इस विद्रोह को स्वतंत्रता इतिहास में उचित स्थान देने के लिये प्रेरित करता है। इस नौसैनिक विद्रोह ने ही अंग्रेजो के मन में इस बात का डर बैठा दिया था कि भारतीय सेनाएँ उनका साथ कभी भी छोड सकती है। आखिरकार ब्रिटिश सरकार ने भारत और पाकिस्तान इन दोनो अलग अलग देशों के नेताओं को सत्ता हस्तान्तरित कर दी जिसकी अभिव्यक्ति वर्मा जी ने की है ''20 जनवरी सन् 1947 को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि जून 1948 के पहले ही ब्रिटेन भारत को स्वतंत्र कर देगा। यही से इतिहास का नया पृष्ठ आरम्भ हुआ।''[8] ऐसी स्वतंत्रता प्राप्ति से कांग्रेस असंतुष्ट थे क्योंकि देश का विभाजन हो रहा था। मुस्लिम लीग को घोर असंतोष था क्योंकि जो पाकिस्तान उसे मिला था वह पंगु था। इस भारत पाक विभाजन से उत्पन्न त्रासदी व साम्प्रदायिक दंगो की सुलगती हुई अग्नि में सबसे अधिक निर्दोष मानवता को झुलसना पड़ा। यह विभाजन किसी देश की जमीन का तो हुआ ही, साथ ही उन लोगों की भावनाओं का भी हुआ जिन्होने विभाजन के दर्द को प्रत्यक्ष रूप से सहा, जिनको अपना घर बार छोड़ना पड़ा और अपनों को खोने का जहरीला घूँट पीना पड़ा, औरतों को बेआबरू और बच्चों को अनाथ होना पड़ा और अहिंसा के प्रतीक महात्मा गांधी को अपनी जान गवानी पड़ी। इस तरह भारत की आजादी के पीछे इस करूण दास्तान को रचनाकार ने राष्ट्रीय प्रेम के रूप में अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है।

निष्कर्ष रूप में भगवती चरण वर्मा ने अपने उपन्यासों में भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की उन युगीन राजनीतिक घटनाओं का चित्रण किया है जो हमारे भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की नींव है। अपने उपन्यासों में उन्होने युगीन राजनीतिक परिदृश्य को उभारकर उसमें उन पहलुओं, घटनाओं को छूने का प्रयास किया है जिसे भारतीय इतिहासकारों ने महत्व नहीं दिया और वे अतीत बनकर काल के गर्त में समा गए लेकिन वर्मा जी की दृष्टि उन पहलुओं, घटनाओं को अनदेखा न कर पाई जिससे उनका राष्ट्रीय प्रेम झलकता है। यह उनका राष्ट्रीय प्रेम ही था कि उन्होने भारतीय स्वाधीन इतिहास की घटनाओं को यथार्थ व निष्पक्ष तरीके से अपने उपन्यासों में उभारा। इसलिए इनके उपन्यासों में निहित राष्ट्रीय प्रेम को आजादी के अमृत महोत्सव के आलोक में देखा जा सकता है कि किस तरह से उन्होने निडरता पूर्वक देश की राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष की घटनाओं को क्रमबद्ध व जीवंत रूप में प्रस्तुत किया जिसको पढकर वर्तमान नई पीढी ही नहीं बल्कि आने वाली भावी पीढी भी आजादी के महत्व को अक्षुण्ण रख सकती है। यदि रचनाकार के उपन्यासों का गहराई से अध्ययन किया जाए तो उसमें

स्वाधीनता संघर्ष की राजनीतिक घटनाओं का ऐसा यथार्थ चित्रण किया गया है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों से अनजान कोई भी व्यक्ति जब उसे पढे तो उसे स्वतः ही आजादी के अमृत महोत्सव मनाने की यह पहल सार्थक जान पड़ेगी। भले ही उनके उपन्यासों को लिखे हुए एक सदी से अधिक समय व्यतीत हो चुका है लेकिन उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के उस अतीत के भूले बिसरे चित्रों को देख सकते है जिसे आज की वर्तमान व नई युवा पीढी के लिये सहेज कर रखना जरूरी है जो आजादी के अमृत महोत्सव के इस उद्देश्य को सार्थक रूप देने में समर्थ है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 303
2. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 341
3. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 199
4. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 291
5. भूले बिसरे चित्र, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 321
6. सीधी सच्ची बाते, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 228
7. सीधी सच्ची बाते, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 464
8. सीधी सच्ची बाते, भगवती चरण वर्मा, पृ. सं. 470

पता – नन्द नगर, ब्यावर, जिला : अजमेर (राज.)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 92-98

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ग्रामीण क्षेत्रों में नकद रहित लेन–देन के चलन का अध्ययन

सुनील कुमार

T

सार :–

डिजिटलीकरण दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहा है और इसने व्यापार परिदृश्य को बदल दिया है। बाजार संक्रमण के चरण में हैं, किराना स्टोर, हाइपर मार्केट से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मार्केट और प्लास्टिक कार्ड का उपयोग, ऑनलाइन शॉपिंग और इलेक्ट्रॉनिक भुगतान आदि। आरबीआई और सरकार नकदी के उपयोग को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था में नकदी के उपयोग को कम करने के कई प्रयास कर रहे हैं।

डिजिटल लेनदेन बेहतर पारदर्शिता, मापनीयता और जवाबदेही लाते हैं। पिछले एक दशक में विमुद्रीकरण ने नकद रहित लेनदेन में तेजी से वृद्धि देखी है। अन्य संस्थानों के साथ समन्वय में, दक्षता बढ़ाने के लिए सरकार कैश–आधारित से नकद रहित सिस्टम की ओर बढ़ रही है, जो एक भविष्यवादी, नकद रहित समाज के विचार की ओर ले जाती है।

सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय लेन–देन के लिए प्रौद्योगिकी का हालिया विकास नीति निर्माताओं और वित्तीय संस्थानों के लिए वर्तमान संस्थागत व्यवस्थाओं की उपयुक्तता और वित्तीय स्थिरता, दक्षता और मौद्रिक नीति की प्रभावशीलता की गारंटी के लिए उपकरणों की उपलब्धता के संबंध में चुनौती पेश करता है।

भुगतान प्रणाली के विभिन्न रूप अस्तित्व में रहे हैं जैसे कि वस्तु विनिमय प्रणाली और वस्तु विनिमय प्रणाली की समस्याओं के कारण विभिन्न प्रकार के धन की शुरुआत हुई। डिजिटलाइजेशन ने आर्थिक नीतियों में कई उल्लेखनीय बदलाव लाए हैं और नकद रहित अर्थव्यवस्था इस डिजिटल पुश की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम है। देश में चलाए गए विमुद्रीकरण के कदम से लोगों में नकद रहित समाज की ओर एक कदम आगे बढ़ने की प्रेरणा पैदा हुई।

भूमिका :–

तकनीकी नवाचार के उद्भव के कारण वित्तीय सेवा उद्योग अचानक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का बैंकिंग क्षेत्र पर बहुत प्रभाव पड़ा। इस नए फिनटेक युग में भारत में बैंक पारंपरिक से सुविधाजनक बैंकिंग दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहे हैं। इस नकद रहित सोसाइटी को शुरू करने और इसकी ओर बढ़ने में काफी समय लगा। प्रारंभ में, यह एक बड़ी सफलता नहीं थी लेकिन अंततः यह सामने आई है। अब, यह उपयोगकर्ता के अनुकूल सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के साथ विश्वव्यापी इंटरनेट उपलब्धता के कारण प्रगति कर रहा है। भुगतान और निपटान सुविधाओं की इन नई किस्मों को प्रोत्साहित करने के आरबीआई के

प्रयास का उद्देश्य कम नकद समाज के लक्ष्य को प्राप्त करना है। नया कदम अधिक व्यापारियों को डिजिटल धन स्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा।

नकद रहित सोसाइटी और नकद रहित लेनदेन इकोनॉमी शब्द डिजिटल रूप से लेनदेन करने के बजाय नकद लेनदेन और निपटान को कम करने का संकेत देते हैं। नकद रहित लेनदेन इकोनॉमी का मतलब कैश की कमी नहीं है, बल्कि यह डिजिटल तरीके से लेनदेन करने वाले लोगों की संस्कृति को दर्शाता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में, पैसा इलेक्ट्रॉनिक रूप से चलता है। इसलिए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के साथ–साथ डिजिटल भुगतान संस्कृति का प्रसार आवश्यक है।

नकद रहित इकोनॉमी ऐसी आर्थिक प्रणाली है जिसमें वास्तविक नकदी के बदले लेन–देन महत्वपूर्ण रूप से नहीं किया जाता है और नकद आधारित लेनदेन की मात्रा न्यूनतम रखी जाती है। सरकार का उद्देश्य सभी लोगों के बीच और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में नकद रहित लेनदेन के तरीकों को बढ़ावा देना है।

डिजिटल इंडिया भारत को एक डिजिटल सशक्त समाज और एक ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने की दृष्टि से भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। आरबीआई और भारत सरकार प्रीपेड उपकरणों और सभी कार्डों सहित डिजिटल भुगतान उपकरणों या विधियों को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था में भौतिक नकदी के उपयोग को कम करने के लिए विभिन्न प्रयास कर रहे हैं।

इन्हें प्रोत्साहित करने के आरबीआई के प्रयास, भुगतान और निपटान सुविधाओं की नई तकनीकों का उद्देश्य 'कम नकदी' समाज के उद्देश्य को प्राप्त करना है। वहीं, नकद रहित सोसाइटी और नकद रहित लेनदेन इकोनॉमी शब्द डिजिटल रूप से लेनदेन करने के बजाय नकद लेनदेन और निपटान को कम करने के लिए एक ही बात का संकेत देते हैं।

नकद रहित लेनदेन इकोनॉमी का मतलब कैश मनी की कमी नहीं है, बल्कि यह डिजिटल तरीके से लेनदेन को निपटाने वाले लोगों की संस्कृति को दर्शाता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में पैसा इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रवाहित होता है। अतः इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास के साथ–साथ डिजिटल लेन–देन प्रणाली का प्रसार आवश्यक है।

तकनीकी अवसंरचना के निरंतर स्तर और नीतिगत परिवर्तनों के कारण भुगतान के तरीकों की संख्या में वृद्धि हुई है। नकद रहित अर्थव्यवस्था भारतीय अर्थव्यवस्था का भविष्य है जहां नकदी का भौतिक प्रवाह नहीं होगा। सभी भुगतान आभासी दुनिया में किए और प्राप्त किए जाएंगे। विमुद्रीकरण के बाद नकद रहित अर्थव्यवस्था लोकप्रिय हुई जहां प्लास्टिक मनी का व्यापक रूप से उपयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य नकद रहित अर्थव्यवस्था के बारे में नागरिकों के बीच जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना है।

नकद रहित इकोनॉमी उस शब्द को संदर्भित करती है जहां करेंसी नोटों और सिक्कों के भौतिक प्रवाह को पैसे के डिजिटल प्रवाह से बदल दिया जाता है, जिसमें प्लास्टिक मनी, डिजिटल साधनों का उपयोग और शुद्ध लेनदेन शामिल हैं। इस तरह के प्रतिस्थापन का अर्थ करेंसी नोटों को तत्काल हटाना नहीं है, बल्कि एक उचित प्रक्रिया का पालन करके धीरे–धीरे और धीरे–धीरे कागजी मुद्रा को बाहर करना है।

साहित्य की समीक्षा :–

श्री तावड़े (2017) भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था का भविष्य और दायरा। यह पेपर भविष्य के

रुझानों और भारतीय आर्थिक परिदृश्य में नकद रहित होने के प्रभाव का आकलन करने में मदद करता है। अध्ययन किए जाने के बाद यह देखा गया कि भारत सरकार को भारत को डिजिटल बनाने के लिए कई और कदमों पर विचार करना चाहिए। और भुगतान के तरीकों को और अधिक सुरक्षित और जोखिम मुक्त बनाया जाना चाहिए।

अरोड़ा (2017), जेनेसिस ऑफ नकद रहित सोसाइटीरू प्लास्टिक मनी के प्रति बढ़ती स्वीकार्यता पर एक अध्ययन। इस पेपर का उद्देश्य हाल के वर्षों में प्लास्टिक कार्ड की स्वीकार्यता में तेजी से वृद्धि के लिए जिम्मेदार कारकों का अध्ययन करना है। अध्ययन किए जाने के बाद यह देखा गया कि प्लास्टिक कार्ड का उपयोग किशोरों के बीच बहुत गर्व की बात है और इसे सुरक्षित और किसी भी धोखाधड़ी से मुक्त माना जाता है।

डॉ. गुजराती (2017), फेसलेस, पेपरलेस, नकद रहित इकोनॉमी की ओर भारत का मार्च। पेपर का उद्देश्य नकद रहित अर्थव्यवस्था, इसके लाभों, चुनौतियों और नकद रहित अर्थव्यवस्था की दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में जागरूकता की भावना पैदा करना है। किए गए शोध के बाद यह देखा गया कि नकद रहित अर्थव्यवस्था विभिन्न लाभों के साथ आती है लेकिन इसके साथ बहुत अधिक चुनौतियां भी लाती हैं।

डॉ. आशा शर्मा (2017), पोटेंशियल फॉर नकद रहित इकोनॉमी इन इंडिया। यह अध्ययन भारत के नकद रहित अर्थव्यवस्था बनने की संभावना, नकद रहित अर्थव्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों का पता लगाने के लिए किया गया था। अध्ययन से पता चलता है कि नकद रहित भारत का एक महत्वपूर्ण दायरा है क्योंकि हम आज जिन विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे हैं उन्हें समाप्त कर सकते हैं लेकिन हमें उन चुनौतियों और समस्याओं के लिए तैयार रहना चाहिए जो नकद रहित अर्थव्यवस्था लाएगी।

रजनी (2018), नकद रहित अर्थव्यवस्था की ओर व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन पर एक अध्ययन। अध्ययन का उद्देश्य नकद रहित अर्थव्यवस्था के प्रति व्यक्ति में व्यवहारिक परिवर्तन का अध्ययन करना है। किए गए अध्ययन के बाद यह देखा गया कि बहुत से लोग पहले ही नकद रहित राष्ट्र की ओर बढ़ चुके हैं या आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन भारत को नकद रहित बनने के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

खुराना (2015), नकद रहित इंडिया का सपना : लाभ और चुनौतियां। यह पेपर उन लाभों और चुनौतियों का अध्ययन करता है जिनका भारत को सामना करना पड़ सकता है यदि यह नकद रहित राष्ट्र बन जाता है। यह डिजिटल इंडिया के अर्थ और नकद रहित इंडिया के सपने को हासिल करने की दिशा में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का आकलन करने में भी मदद करता है। अध्ययन के बाद सरकार ने डिजिटल इंडिया के सपने को पूरा करने के लिए कितना भी कुछ कर लिया हो, लेकिन उस सपने को साकार करने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

जिंदप्पा (2017), भारत में आम आदमी पर नकदी रहित अर्थव्यवस्था का प्रभाव। अध्ययन भारत में रहने वाले एक आम आदमी पर नकद रहित होने के प्रभाव और नकद रहित होने से संबंधित चुनौतियों पर केंद्रित है। अध्ययन से पता चलता है कि भारत कभी भी पूरी तरह से नकद रहित अर्थव्यवस्था में नहीं बदल सकता क्योंकि नकदी का प्रभुत्व रहा है और हमेशा रहेगा। नकद रहित होना समाज के एक बहुत छोटे वर्ग के लिए

ही संभव होगा, पूरे देश के लिए नहीं।

खन्ना (2017), नकद रहित पेमेंट : ए बिहेवियरल चेंज टू एन इकोनॉमिक ग्रोथ। पेपर का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि भारतीय आर्थिक परिदृश्य में एक व्यवहारिक परिवर्तन ने आर्थिक विकास को कैसे प्रभावित किया। किए गए अध्ययन के बाद यह देखा गया कि इस तरह के बदलाव के लिए विभिन्न कारक जिम्मेदार थे क्योंकि लोग इस तरह के बदलाव को अपनाकर विभिन्न लाभ और अवसर पा रहे थे।

शंकर (2018), नकद रहित इकॉनमी/लेनदेन। पेपर नकद रहित अर्थव्यवस्था के प्रभाव और भारत में इसके महत्व को समझने पर केंद्रित था। किए गए शोध के बाद यह देखा गया कि भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था की शुरुआत से वित्तीय क्षेत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और भारत में भुगतान प्रणाली के आधुनिकीकरण में मदद मिलेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में नकद रहित लेन-देन का चलन :-

बैंकिंग के माध्यम से धन के संचलन पर पारदर्शिता, दक्षता लाने और काले धन पर लगाम लगाने के लिए अर्थव्यवस्था में नकद रहित लेनदेन की आवश्यकता सामने आती है। भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के प्रभुत्व वाली अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो रही है।

पारंपरिक भुगतान विधियों का डिजिटलीकरण बैंकिंग उद्योगों, इंटरनेट सेवाओं और मोबाइल उद्योगों का एक क्रांतिकारी विकास है, जो लोगों को अधिक आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह दुनिया भर में नई तकनीकों और विकास को स्थापित करने का अवसर पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप देश का आर्थिक विकास होता है।

डिजिटल भुगतान नकद रहित अर्थव्यवस्था का दिल है। डिजिटल भुगतान लेन–देन का एक तरीका है जिसमें विभिन्न प्रकार के डिजिटल मोड का उपयोग करके भुगतान किया जाता है। डिजिटल भुगतान में लेन–देन ऑनलाइन पूरा होता है। डिजिटल भुगतान तब होता है जब उत्पादों को विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के उपयोग से खरीदा जाता है। इस प्रकार की भुगतान पद्धति में नकद या सुविधाजनक तरीकों का कोई उपयोग नहीं है। इसे इलेक्ट्रॉनिक भुगतान भी कहा जाता है।

डिजिटल भुगतान बिना ज्यादा समय लिए दुनिया में कहीं भी अपने उपयोगकर्ताओं के व्यापारिक लेनदेन के लिए आर्थिक स्वतंत्रता पैदा करते हैं। आर्थिक स्वतंत्रता लोगों को दुनिया भर में व्यापार करने की अनुमति देती है। वे दुनिया भर में कुछ ही घंटों में सुरक्षित और सुरक्षित लेनदेन के साथ हस्तांतरण या भुगतान स्वीकार करके विश्व स्तर पर अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं और यह भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को कम करता है।

नकद रहित प्रणाली के विकास से समानांतर काली अर्थव्यवस्था पर अंकुश लगता है जो मुख्य रूप से नकदी के आधार पर चलती है। नकद रहित लेनदेन ट्रैक करने योग्य और भौतिक लेनदेन की तुलना में अधिक पारदर्शी होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन हमेशा भुगतानकर्ता और प्राप्तकर्ता दोनों के लिए एक डिजिटल प्रूफ फायदेमंद छोड़ देते हैं और इसलिए सिस्टम को और अधिक पारदर्शी और अनुपालन बनाते हैं। नकद रहित सिस्टम बिना ज्यादा समय लिए स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लेन–देन के निपटान को गति देता है।

भारत में नकद रहित प्रणाली का एक और बड़ा लाभ यह है कि पिछले कुछ वर्षों में कर चोरी में भारी

गिरावट आई है क्योंकि डिजिटल माध्यम से किए गए भुगतान ट्रैक करने के लिए उपयोगी होते हैं और इस तरह सरकारी एजेंसियों के लिए खर्च का ट्रैक रखना और अधिक लाना आसान हो जाता है। कर दायरे में आने वाले लोग जो पहले बड़ी आय होने के बावजूद कर का भुगतान नहीं कर रहे थे।

भारत एक ग्रामीण बहुल देश है जहाँ निरक्षरता दर विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इतनी अधिक नहीं है। भारत में डिजिटल साक्षरता सिर्फ 10 प्रतिशत है। देश की आधी से ज्यादा आबादी अभी भी कंप्यूटर का उपयोग करना नहीं जानती है। भारत में अभी भी कई ग्रामीण और शहरी क्षेत्र हैं जहां हाई स्पीड नेटवर्क तक पहुंच बहुत मुश्किल है। इसके अलावा, देश में हर कोई इसकी उच्च लागत के कारण इंटरनेट सुविधाओं का उपयोग नहीं कर पा रहा है। हम डिजिटल साक्षरता के अभाव में भारतीय अर्थव्यवस्था के एक पारंपरिक शाखा आधारित मॉडल से आभासी रूप से मौजूद नकद रहित अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।

भारत में नकद रहित नीति के विकास में एक और बड़ी चुनौती साइबर सुरक्षा के मुद्दे हैं। डिजिटल लेन–देन कई मुद्दों का सामना करता है जैसे कि ऑनलाइन धोखाधड़ी का जोखिम, गोपनीय जानकारी का रिसाव, साइबर अपराध, मैलवेयर और वायरस के हमले आदि। भारत जैसे देशों में डिजिटल भुगतान को लोकप्रिय बनाने के लिए यह सबसे बड़ी चिंताओं में से एक है जहां डिजिटल साक्षरता बहुत कम है।

पूर्वोक्त परिवर्तनों के समानांतर भुगतान का तरीका बदल गया है। क्रेडिट और डेबिट कार्ड व्यापक हो गए हैं और नकदी को निचोड़ना शुरू कर दिया है, जबकि संपर्क रहित प्रौद्योगिकियों के उद्भव ने इन भुगतान साधनों के उपयोग को और बढ़ा दिया है। स्मार्ट फोन ने भुगतान में भी क्रांति ला दी।

नकद रहित समाज उस समय से अस्तित्व में है जब मानव समाज अस्तित्व में आया, वस्तु विनिमय और विनिमय के अन्य तरीकों के आधार पर, लेकिन वास्तविक नकदी रहित समाज को एक ऐसे समाज की ओर बढ़ने और इसके निहितार्थों के अर्थ में समझा जाना चाहिए जहां नकद को इसके द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।

सरकारें डिजिटल सेवाओं की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करती हैं क्योंकि वे इसे मनी लॉन्ड्रिंग, कर चोरी को संबोधित करने और वित्तीय सेवाओं में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के तरीके के रूप में देखती हैं। दूसरों का तर्क है कि डिजिटल भुगतान उपभोक्ताओं को लूटने या पैसे खोने से बचाता है, साथ ही उन्हें लगातार वॉलेट ले जाने की परेशानी से बचाता है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष बताते हैं कि डिजिटल भुगतान विधियों का उपयोग करने के मामले में भारत अभी भी दुनिया के अन्य विकसित देशों की तुलना में बहुत खराब है। जैसा कि कई देश पहले से ही अपने इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली के साथ बदल चुके हैं, भारत अपने शुरुआती चरण में है और सभी आबादी मुख्य रूप से उचित इंटरनेट कनेक्टिविटी की अनुपलब्धता, जागरूकता की कमी और वित्तीय लेनदेन के ज्ञान की कमी के कारण कागजी नकद आधारित लेनदेन पर निर्भर है। कार्ड भुगतान और गैर परिचालन बैंक खातों पर शुल्क।

सरकार को डिजिटल लेनदेन भुगतान पर अतिरिक्त लाभ प्रदान करना चाहिए और बैंक खातों में नकद बचत पर अतिरिक्त प्रोत्साहन या ब्याज दर की पेशकश करनी चाहिए। साथ ही डिजिटल लेन–देन के शुल्कों में कमी या डिजिटल बैंकिंग पर पूरी तरह से कुछ शुरुआती वर्षों के लिए छूट की पेशकश की जानी चाहिए जो भारत में भुगतान के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया को तेज करने के लिए अधिक सहायक हो सकती है।

भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया में कुछ चुनौतियाँ हैं। भारत में सभी देशों के क्षेत्र में छोटे

खुदरा विक्रेताओं का एक विस्तृत नेटवर्क है और उनमें से अधिकांश के पास डेबिट और क्रेडिट कार्ड के उपयोग पर उपभोक्ताओं की धारणा और विश्वास है कि नकद मदद करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक भुगतान बुनियादी ढांचे में निवेश करने और डिजिटल रूप से भुगतान करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। आप बेहतर बातचीत करते हैं। नकद रहित अर्थव्यवस्था की ओर न बढ़ने में भी निहित स्वार्थ है, और कार्ड और नकद का उपयोग करने वाले अधिकांश लोग डरते हैं कि कार्ड का उपयोग करने पर उनसे अधिक शुल्क लिया जाएगा। इसके अलावा, ज्ञान की कमी या नई तकनीकों और वित्तीय साक्षरता के अपर्याप्त ज्ञान के कारण, क्रेडिट कार्ड का उपयोग न करने वाले लोगों को क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लाभों के बारे में पता नहीं होता है। भारतीय बैंक निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा जारी किए गए डिजिटल वॉलेट को संबंधित बैंकों की वेबसाइटों पर उपयोग करने के लिए इसे समस्या बना रहे हैं।

नकद रहित लेन–देन का मुख्य अवसर यह है कि सभी आर्थिक लेन–देन का उचित रिकॉर्ड रखना संभव है। काला बाजार और भूमिगत अर्थव्यवस्थाएं आम तौर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाती हैं। आतंकवाद को बढ़ावा देने में प्लास्टिक मनी की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि यह सर्वविदित है कि नकदी मनी लॉन्ड्रिंग का एक साधन है और आतंकवाद के वित्तपोषण में लेनदेन प्राथमिक तरीका है। इसलिए इस तरह की गतिविधियों को काफी हद तक कम करने में नकद रहित इकॉनमी फायदेमंद है। इस नकद रहित लेनदेन से केंद्र सरकार को भी लाभ होता है क्योंकि यह पैसे की आपूर्ति पर केंद्रीय नियंत्रण की अनुमति देता है और नकद रहित अर्थव्यवस्था में किसी व्यक्ति द्वारा भुगतान किए गए आयकर की निगरानी करना आसान होता है। नकद रहित लेन–देन नकारात्मक वैश्विक मुद्रास्फीति और मात्रात्मक सहजता के संदर्भ में सहायक होते हैं।

नकद रहित अर्थव्यवस्था में लोग विश्व स्तर पर अपना लेन–देन आसानी से कर सकते हैं। हितग्राहियों के खातों में बड़ी पारदर्शिता के साथ सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं का सीधा लाभ उठाया जा सकता है। नकद लेन–देन डिजिटल होने से लेन–देन की लागत भी कम हो जाती है। भौतिक मुद्रा पर अक्सर तम्बाकू, सिगरेट आदि के गंदे निशान पाए जाते हैं, जिससे बैक्टीरिया, कीटाणु, विषाणु एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाते हैं, जो बीमारी के कारणों में से एक बन जाते हैं। डिजिटलाइजेशन से इस तरह के खतरों को खत्म किया जा सकता है।

सरकार के इस कदम के प्रति देश के लोगों की प्रतिक्रिया के रूप में नकद रहित भारत का भविष्य काफी आशाजनक दिखता है और इसके प्रति समर्थन एक स्पष्ट संकेत है कि सरकार का कदम सफल होने की संभावना है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि नकद रहित लेनदेन अर्थव्यवस्था भारत सरकार के अच्छे और मजबूत फैसलों में से एक है। बहुत से लोग नकद रहित लेनदेन प्रणाली की अवधारणा को स्वीकार करते हैं। यह आतंकवाद, भ्रष्टाचार, मनी लॉन्ड्री आदि जैसी अर्थव्यवस्था में प्रमुख अवैध या अनैतिक गतिविधियों से लड़ने में मदद करता है। इसलिए, ऑनलाइन शरारतों से बचाने के लिए इंटरनेट सुरक्षा को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। नकद रहित लेनदेन के आवेदन में ग्राहकों और छोटे खुदरा विक्रेताओं को उच्च स्तर के जोखिम और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कम साक्षरता दर है।

निष्कर्ष :–

नकद रहित लेन–देन एक ऐसी प्रणाली है जो व्यक्तियों को किसी भी मूर्त वस्तु के आदान–प्रदान के बिना

सामान या सेवाएं खरीदने की अनुमति देती है। डिजिटल भुगतान के अधिक उपयोग से काफी बचत होगी क्योंकि इससे भारत में नकदी की लागत कम करने में मदद मिलेगी। नकद रहित अर्थव्यवस्था के विकास से पारदर्शिता आएगी, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और आर्थिक विकास में आसानी होगी।

भारत के लिए सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल डिजिटल भुगतान अवसंरचना का वातावरण बनाने की दिशा में रोडमैप में लोगों के वित्तीय समावेशन और विकास की सीढ़ी को अत्यधिक बढ़ाने की बहुत संभावनाएं हैं, जो शायद सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है, जिस पर सरकार को सख्ती से काम करना चाहिए। नकद रहित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और विकसित करने की दिशा में।

डिजिटल भुगतान चैनलों के उचित तरीकों को अपनाकर भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था हासिल की जा सकती है, जिसके लिए नई सुरक्षित और सुरक्षित वित्तीय नीतियों, केंद्रीकृत प्रशासनिक नियंत्रण, बैंकरों, सरकारी एजेंसियों और अन्य निजी सेवा पर नियमित मौद्रिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अलावा, भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ाने के लिए, यह सुरक्षित और सुरक्षित सेवाओं की मांग करता है जैसे भुगतान का तत्काल प्रमाणीकरण, उनके खातों का स्पष्ट विवरण, कोई छिपा हुआ शुल्क नहीं, पैसे पर पूर्ण नियंत्रण, लेनदेन की प्रक्रिया को पूरा करके छोटा करना अनिवार्य जानकारी। ग्रामीण क्षेत्रों का परिवर्तन भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

संदर्भ :-

1. श्री प्रदीप एच. तावड़े (2017) भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था का भविष्य और दायरा।
2. ढांडा और अरोड़ा (2017) जेनेसिस ऑफ नकद रहित सोसाइटी प्लास्टिक मनी के प्रति बढ़ती स्वीकार्यता पर एक अध्ययन।
3. डॉ. रश्मी गुजराती (2017) फेसलेस, पेपरलेस, नकद रहित इकोनॉमी की ओर भारत का मार्च।
4. डॉ. आशा शर्मा (2017) पोटेंशियल फॉर नकद रहित इकोनॉमी इन इंडिया।
5. डोमिनिक, सरन्या और रजनी (2018) नकदी रहित अर्थव्यवस्था की ओर व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन पर एक अध्ययन।
6. श्री भरत खुराना (2015) नकद रहित इंडिया का सपना लाभ और चुनौतियां।
7. मेत्री और जिंदप्पा (2017) भारत में आम आदमी पर नकद रहित अर्थव्यवस्था का प्रभाव।
8. कुमारी और खन्ना (2017) नकद रहित भुगतान आर्थिक विकास के लिए एक व्यवहारिक परिवर्तन।
9. फेलिक्स, रेबेका और इगबिनोबा (2015) नाइजीरियाई अर्थव्यवस्था में ई–बैंकिंग और नकद रहित समाज के प्रभाव का मूल्यांकन।
10. कौसल्या और शंकर (2018) नकद रहित अर्थव्यवस्था लेन–देन।
11. कोकिला और उषादेवी (2017) नकद रहित लेनदेन पर उपभोक्ता व्यवहार पर एक अध्ययन।
12. थॉमस और कृष्णमूर्ति (2017) नकद रहित ग्रामीण अर्थव्यवस्था–एक सपना या वास्तविकता।
13. श्रीकला के.के. (2017) नकद रहित लेन–देन कर्नाटक के कोडागु जिले के विशेष संदर्भ में अवसर और चुनौतियां।
14. शेंडगे, शेलार और कापसे (2017) भारत में नकद रहित लेनदेन का प्रभाव और महत्व।
15. गर्ग और पांचाल (2017) भारत में नकद रहित अर्थव्यवस्था के परिचय पर अध्ययन 2016 लाभ और चुनौती।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha
July 2023

ISSN : 2395-7115
Page No. : 99-102

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्रवासी साहित्य में राष्ट्रीय चिंतन

वि अमुधा

शोधार्थी, हिंदी विभाग, वेल्स विश्वविद्यालय, चेन्नई।

प्रवासी भारतीय जो संवेदनशील थे, उन्होंने विदेश में अपने प्रवास के दौरान आने वाली समस्याओं को, अपने आस–पास घटित घटनाओं को अपनी क़लम के माध्यम से साहित्य द्वारा उजागर किया। अपने विचारों, अपनी सोच, दृष्टिकोण, चिंतन व मान्यताओं द्वारा लेखन कार्य प्रारम्भ किया। अपने सामाजिक परिवेश से व परिस्थितियों से प्रभावित हो कर अलग–अलग विषयों में साहित्य की रचना की। यहीं से 'प्रवासी हिन्दी साहित्य' का 'श्री गणेश' हुआ। प्रवासी हिंदी साहित्य भारतीयों के पलायन व उन्हें दरपेश मुश्किलों के अलावा उनके जीवन संघर्ष की गाथा को प्रस्तुत करता है। आधुनिक प्रवासी हिन्दी कथा–साहित्य पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि भारत के बाहर दुनिया के कई देशों में हिन्दी कथा साहित्य रचा जा रहा है। मॉरीशस, सूरीनाम, फ़ीजी में तो यह था ही अब यह अमेरिका, कैनेडा, न्यूज़ीलैंड, डेनमार्क, अर्जेण्टीना, नॉर्वे, जापान, अबूधाबी में भी खूब फल–फूल रहा है। आज यह मात्र भारत के भीतर ही सीमित न होकर पूरे विश्व में फैला हुआ है। प्रवासी साहित्य को अलग करके देखने की बजाए, उसे हिंदी की मुख्यधारा में स्थान दिया जाए। विदेशों में रहने वाले लेखक जब संस्कृ ति के टकराव के बारे में लिखते हैं, तो लोगों को उच्च श्रेणी के साहित्य से मुख़ातिब होने का अवसर मिलता है। गाँव से शहर में आकर बसने वाले लोगों में भी प्रवास का दर्द देखा जा सकता है। यही वज़ह है कि साहित्य स्थापित मूल्यों के विरुद्ध मुहिम चलाने का काम कर रहा है।

भारतीय प्रवासियों के अधिकारों की लड़ाई महात्मा गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका से आरम्भ की। हिंदी साहित्य में मॉरिशस में रचित हिन्दी साहित्य की एक अलग पहचान है। इसके पुरोधाओं में मॉरिशस के अभिमन्यू अनत का नाम सर्पोपरि आता है। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाएँ कविता, कथा–साहित्य आदि की रचनाओं से प्रवासी साहित्य को समृद्ध किया है। इनका 'लाल पसीना' उपन्यास बहुत ही चर्चित उपन्यास है। इसमें भारतवंशी की वेदनाओं का चित्रण बहुत मर्मस्पर्शी है। इसके बाद अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में प्रवासी भारतीयों की हिंदी रचनाएँ आती हैं। इंग्लैंड में हिंदी साहित्य के विकास में डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी का नाम सर्वोपरि है। डॉ. सिंघवी ने इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त रहते हुए भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी का एकल कवि सम्मेलन कराया।इसके अतिरिक्त इंग्लैंड में प्रवासी साहित्य के विकास में श्रीमती शैल अग्रवाल, पद्मेश गुप्त, तितिक्षा शाह, कृष्ण कुमार, तेजेन्द्र, शर्मा, दिव्या माथुर आदि ने अपनी रचनाओं से अहम भूमिका निभाई है। विदेश में रहने वाले हिंदी साहित्यकार इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उनकी रचनाओं में अलग–अलग देशों की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ हिन्दी की साहित्यिक रचनाशीलता का अंग बनती हैं, विभिन्न देशों के इतिहास और

भूगोल का हिन्दी के पाठकों तक विस्तार होता है। विभिन्न शैलियों का आदान–प्रदान होता है और इस प्रकार हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय विकास भी होता है।

प्रवासी लेखकों में अभिमन्यु अनंत का नाम सबसे पहले आता है। अभिमन्यु अनत मॉरिशस के विख्यात हिंदी साहित्यकार हैं। भारत से बाहर रूस, जर्मनी, अमेरिका ,इंग्लैंड आदि अनेक देशों में प्रवासी लेखकों ने हिंदी में कविता, कहानी, लेख, लघुकथा आदि कई विधाओं में लिखा भी है, किन्तु अभिमन्यु अनत ऐसे भारतवंशी लेखक हैं जो हिंदी में एक से एक बड़ी रचना देते हैं।

मॉरिशस में हिंदी का यह संघर्ष, साहस, यातना और बलिदान की गाथा रही है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के दमन के लिए पूंजपतियों ने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा था। यातना और बलिदान भी उतने ही ज़रूरी थे, क्योंकि आगे चलकर हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय स्थान के मूल में ही थे। दुनिया के बहुत कम देश ऐसे होंगे, जहाँ एक भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए इतना कुछ भुगतना पड़ा हो। फिर भी उन शोषित मज़दूरों ने उन वर्चस्व को धर्म–निष्ठा के साथ पूरा किया। वह एक भारी सांस्कृतिक निष्ठा, भाषा के प्रति गौरव का भाव था, जिससे सुबह–शाम गन्ने के खेतों में तपते सूरज को सहते हुए गोरे मालिक के कोड़ों की बौछारों को झेलने के बाद भी अपनी बस्ती में हिंदी पठन–पाठन में लग जाते। वर्षों से इस द्वीप में निःशुल्क पढ़ाई जाती रही।

वरिष्ठ कथाकार सुषम बेदी का कहना है कि प्रवासी लेखन ने विश्व को एक सूत्र में जोड़ने का काम किया है। फ़िलहाल प्रवासी साहित्य का बड़ा मुद्दा अस्मिता का है। प्रवासी लेखक को राष्ट्रीय बद्धता में बँधने की ज़रूरत नहीं। जबकि भारत के साहित्यकार की रचनाएँ समाज व राष्ट्रीयता से बँधी नज़र आती हैं। जीवन शैली की भिन्नता, सोच का वैभिन्न्य और भाषागत भिन्नता एक क़िस्म का 'कल्चरल शॉक' देती रही हैं। सांस्कृतिक मूल्यों की इस टकराहट की अनुगूँज इनके लेखन में स्पष्ट तौर पर सुनाई देती है। अपनी लेखनी से इस लेखिका त्रयी ने न केवल भारतीय साहित्य को समृद्ध किया वरन उसका परिचय एक ऐसे कथालोक से कराया जो इससे पहले हिन्दी साहित्य में अनजाना था। आज के प्रवास में एक द्वन्द्व की स्थिति है। मान्यताएँ टकराती हैं और निजी संघर्ष पैदा होते हैं। इन्हीं टकराहटों और निजी संघर्षों का प्रवासी साहित्य अधिक है। निजी संघर्षों से बाहर आकर प्रवास की स्थितियों में वहाँ के जीवन में झाँकने के उत्सुक प्रयास भी हैं, लेकिन बहुत कम। इन दोनों से ऊपर उठकर, व्यापक सामाजिक, राजनीतिक, मानसिक संघर्षों और उथल–पुथल के साहित्य की अनुपस्थिति खटकती है। बृहत्तर मानवीय मूल्यों, सरोकारों और उन संघर्षों की निर्ममताओं का साहित्य नहीं है, जो हर ऊँचे साहित्य की पहली शर्त बनती है।

प्रमुख प्रवासी लेखक तेजेंद्र शर्मा का कहना है कि विदेशों में बैठकर लिखने वाले लेखकों को प्रवासी न कहा जाए। उन्होंने कहा कि उषा प्रियंवदा ने भारत में रहकर साहित्य की रचना की। बावजूद इसके उन्हें प्रवासी साहित्यकारों की श्रेणी में रखा जाता है। उन्होंने पूरे हिंदी साहित्य को प्रवासी बताया और कहा कि अमेरिका, कैनेडा तथा लंदन में लिखा जा रहा साहित्य मुख्यधारा का साहित्य है। विदेशों में युवा हिंदी नहीं जानते, जबकि भारत में भी नई पीढ़ी हिंदी से विमुख हो रही है। डर है कहीं विदेशों में लिखा जाने वाला साहित्य ख़तम न हो जाए। या फिर साहित्य को बचाए रखने के लिए माइग्रेशन का सिलसिला यूँ ही जारी रहेगा। उन्होंने आलोचकों से आह्वान किया कि वे पुराने हथियारों से उनके साहित्य का आंकलन न करें। प्रवासी जीवन का यथार्थ वापस लौटने के स्वप्न और न लौट पाने की बाध्यता के बीच दोहरेपन की मानसिकता होती है। अतीतानुराग की

भावुकता से छुटकारा न पा सकने के कारण अपने वर्तमान को अस्वीकार करने और अतीत में जीने की मानसिकता खुद उनके लिए जड़ता, विषमता और अलगाव पैदा करती है।

सुधीश पचौरी के अनुसार 'प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है एक ही वक्त में दो दुनियाओं को पुकारता है। एक वह जिसमें डॉलर कमाने, विदेश पलट होने, अमीर होने के लिए वह परदेस में नाना कष्ट सहता अपने देश की याद करता रहता है। दूसरा वह जो याद आने वाले 'देश' के यथार्थ को भी जानता है जिससे उबकर वह 'परदेश' भागा था। परदेस में उसका 'देश' प्रेम ज़ोर मारता है और देश में परदेस प्रेम। पूँजीवादी सभ्यता की मारकाट वाली स्पर्धा, हर वक्त की असुरक्षा, अकेलापन उसे डॉलर देती है। कहीं न कहीं सभी प्रवासी अपनी मूल संस्कृति, मूल परम्परा और मानस से स्वभावतः या प्रकृतिजन्य रूप से जुड़े रहते हैं। यह जुड़ा रहना अवसरों, कुअवसरों पर बाहर भी झाँकने लगता है। परम्परायें, रीति–रिवाज़, लोक जीवन में रची–बसी गहरी आकृतियाँ, मौसम–बेमौसम हमारे व्यवहार, हमारी स्मृति और हमारी पहचान को उकेरती रहती हैं। भाषा का इस एहसास से बड़ा सीमित सा रिश्ता रह जाता है। सिर्फ़ उन लोगों में भाषा इस एहसास का अहम् हिस्सा बनती है जो काफ़ी देर से, परिपक्वास्था में अपना परिवेश छोड़ कर यहाँ आ बसे। आधे मन से वह उसमें लगता है लेकिन वह यह भी चाहता है कि डॉलर रहे संग में अपना गाँव भी रहे तो मज़ा है। इस तरह प्रवासी भाव देश–परदेस के बीच विभाज्य भाव है।'

प्रवासी भारतीयों की दोहरी मानसिकता के संदर्भ में दुर्गा प्रसाद गुप्त का मत है 'यह ऐसा भारतीय मन है जो एक तरफ़ भारत के आध्यात्मिक अतीत पर मुग्ध होता है, उसके लिए आहें भरता है तो दूसरी तरफ भौतिकता में उलझे उसके ग़रीब और पिछड़े वर्तमान पर आँसू बहाता है। उसके प्रति विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित करता है। यह विभाजित मन उन प्रवासी भारतीयों का है जो न तो सही अर्थों में अपनी धर्म और संस्कृति के प्रति तटस्थ रह पाते हैं और न निर्वैक्तिक। फिर भी वे दोनों संस्कृतियों के प्रेमी आलोचक हैं।' श्यामा चरण दुबे के अनुसार ष्ये वे लोग हैं जो विदेशों में भारतीय और भारत में विदेशी जीवन शैली और मूल्यों के साथ जीते हैं। उनकी जड़ें भारतीय परम्परा में नहीं होती, पर साथ ही उनका पश्चिमीकरण भी बहुत सतही स्तर वाला होता हे। वे पश्चिमी संस्कृति के बाह्य लक्षणों का अनुकरण करते हैं, पर गहराई में जाकर उसकी आत्मा से साक्षात्कार करने से कतराते हैं। साथ ही वे पश्चिमी संस्कृति के सुख–सुविधा और स्वच्छंदता तो चाहते हैं पर उससे होने वाला सांस्कृतिक अवमूल्यन उन्हें चिन्तित करता है। प्रवासी भारतीयों के हिंदी साहित्य में अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा अस्ट्रोलिया, नीदरलैंण्ड, नार्वे, डेनमार्क आदि देशों में भारतीय प्रवासियों की पहली पीढ़ी का साहित्य आता है। ये लोग अपने बेहतर जीवन और शिक्षा के लिए इन देशों में गए और अपने हिंदी प्रेम के कारण, हिन्दी को अपनी अभिव्यक्ति की भाषा बनाया।

इस प्रकार ये दो भिन्न धाराएँ प्रवासी भारतीय की संवेदना एवं चेतना का व्यापक परिदृश्य प्रस्तुत करता है। प्रवासी साहित्य के माध्यम से ज्ञात होता है कि भारतेतर देशों में भारतीय कैसे जीवन–यापन करते हैं। उनका जीवन–संघर्ष क्या है तथा परदेश में स्वदेश की कोई सत्ता या अनुभूति है या नहीं इसका परिचय मिलता है। प्रवासी साहित्य के माध्यम से दो नस्लों के व्यक्ति एक साथ मिलते हैं। इस मिलन से एक नई नस्ल का जन्म होता है। इस प्रकार के सम्मिलन से भिन्न प्रकार की संस्कृति, भाषा और साहित्य का जन्म होता है। हिंदी का प्रवासी साहित्य, हिंदी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करता है। जिस प्रकार हिंदी में छायावाद, प्रगतिवाद,

प्रयोगवाद, अकविता, नई कहानी, दलित साहित्य, स्त्री विमर्श आदि की स्वतंत्र सत्ता है; उसी प्रकार प्रवासी हिंदी साहित्य, भारततेर देशों में हिंदी साहित्य की पहचान है। इधर हिंदी के कुछ एक आलोचक भारतेतर देशों में रचित साहित्य, को साहित्य की श्रेणी में स्वीकार करने के पक्षधर नहीं हैं। इस प्रकार की अवधारणा भारतीय भाषाओं के अन्य साहित्य में नहीं हैं। इन आलोचकों की अवधारणाएँ ही हिंदी साहित्य को पीछे धकेलती हैं। यही कारण है कि भारतीय भाषाओं का मराठी, बांग्ला आदि भाषाओं का साहित्य हिंदी से टक्कर लेने के लिए तत्पर रहता है।

निष्कर्ष :-

10 जनवरी 2003 को प्रवासी दिवस मनाए जाने के साथ ही दिल्ली में प्रवासी हिंदी उत्सव का श्रीगणेश हुआ। प्रवासी हिंदी उत्सव में ऐसे लोगों को रेखांकित करने और प्रोत्साहित करने के काम की ओर भारत की केंद्रीय और प्रादेशिक सरकारों तथा व्यक्तिगत संस्थाओं ने रुचि ली, जो विदेश में रहते हुए हिंदी में साहित्य रच रहे थे। भारत की प्रमुख पत्रिकाओं जैसे वागर्थ, भाषा और वर्तमान साहित्य ने भी प्रवासी विशेषांक प्रकाशित कर के इन साहित्यकारों को भारतीय साहित्य की प्रमुख धारा से जोड़ने का काम किया। इस तरह इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में आधुनिक साहित्य के अंतर्गत प्रवासी हिंदी साहित्य के नाम से एक नए युग का प्रारंभ हुआ। आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली पाँच भाषाओं में है तो इसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता है, जो भारत से इतर देशों में जाकर बसने के बावजूद हिन्दी को अपनाए हुए हैं। इन देशों में रचा जा रहा साहित्य, उस देश के परिवेश से ही हमारा परिचय नहीं कराता, वरन उनकी भाषा से शब्द भी ग्रहण कर रहा है।

फलस्वरूप हिन्दी का भी एक नया स्वरूप विकसित हो रहा है और उस हिन्दी में लिखे गए साहित्य का एक अलग स्वाद है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. साहित्य परिक्रमा, नई दिल्ली, 2009, पृ. सं. 20, 21
2. प्रवासी साहित्य भाव और विचार, साहित्य संचय, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. 153, 193
3. लाल पसीना राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. सं. 64, 153

मोबाइल–9840824531

Email- amudhav-79@yahoo.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 103-104

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नई शिक्षा नीति एवं शिक्षक शिक्षा

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

रिसर्च स्कॉलर, महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, लखनऊ।

सभ्यता के प्रारंभ से ही शिक्षा भारतीय समाज की बुनियाद रही है। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मानव को सभ्य इंसान बनाना है, जिसकी सोच और कार्य युक्त संगत हो, जिसमें दया एवं सहानुभूति हो, साहस एवं संकटों का सामना करने की क्षमता हो, वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो तथा नैतिकता एवं मूल्यों के साथ रचनात्मक कल्पना शक्ति हो। हमारे देश में अनौपचारिक ढांचे वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी, नालंदा और तक्षशिला के काल में भारत में उच्चतर शिक्षा ज्यादा समग्र और समाज से जुड़ी थी। अभी तक हमारी मौजूदा शिक्षा प्रणाली का ढांचा ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली पर आधारित था। भारत में विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और विद्यालय स्तर की शिक्षा के ढांचे के निर्माण और विकास ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के अनुसार हुआ।

21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक उच्च मानकों के शिक्षित और कुशल व्यक्तियों के साथ एक ज्ञानवान समाज बनाने की आकांक्षा के लिए हमें अपनी स्कूली शिक्षा प्रणाली की मजबूत नींव सुनिश्चित करने की आवश्यकता हुई। समानता, गुणवत्ता और सामर्थ्य सिद्धांतों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 में बच्चों के साथ–साथ शिक्षक पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.)–2005, शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.टी.ई.)–2009, और शिक्षा का अधिकार अधिनियम के सफल शुरुआत के साथ भारत में शिक्षक–शिक्षा प्रणाली में बदलाव आया।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2014 में बी.एड. कार्यक्रम का पुनर्गठन किया और इसकी अवधि को दोगुना करके 2 वर्ष कर दिया। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा परिषद द्वारा तैयार किए गए शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम में योग शिक्षाघ, आई.सी.टी., शांति शिक्षा, मूल्य शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा के साथ पर्यावरण और जनसंख्या शिक्षा जैसे कई बदलाव किए गए। शिक्षकों को आज न केवल पाठ्य पुस्तकों में पाठ्यक्रम के साथ बल्कि विद्यार्थियों को सक्षम बनाने वाली, हमेशा विकसित होने वाली तकनीकों, बदलते बाजार के रुझान के साथ–साथ संस्कृति और मान्यताओं के अनुरूप खुद को लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षक–शिक्षा के पहलुओं को संशोधित करने का प्रस्ताव किया गया है,

इसमें देश के शिक्षक–शिक्षा के लिए प्रभावी कार्यवाही के माध्यम से इसकी संरचना विनियमन और संचालन सहित मौजूदा प्रवृत्तियों के अनुरूप, मानकों को बढ़ाने और ईमानदारी, विश्वसनीयता, प्रभावकारिता और उच्च गुणवत्ता को बहाल करने का प्रस्ताव है। शिक्षक की शक्ति को स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में प्रणालीगत सुधार किए गए हैं, जो शिक्षण को प्रतिभाशाली युवाओं के पसंद के आकर्षक पेशे के रूप में उभरने में मदद करेंगे।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 105-109

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में राष्ट्र प्रेम

डॉ. क्षितिजा

प्रवक्ता, एम.एल.ए. अकादमी ऑफ़ हायर लर्निंग, मल्लेश्वरम, बेंगलुरू।

गिरिजाकुमार माथुर ने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए.अंग्रेजी और एलएलबी की डिग्री प्राप्त की कुछ वर्षों तक कानून का अभ्यास करने के पश्चात उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो और बाद में दूरदर्शन में काम शुरू कर दिया। शुरू में वकील के रूप में काम किया। लेकिन बाद में ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली के कार्यक्रम में शामिल हो गए, वहां कुछ वर्षों काम करने के बाद, भारत के तत्कालीन एकमात्र टेलीविजन प्रसारण संगठन दूरदर्शन में शामिल हो गए। दूरदर्शन में अपनी सेवा के दौरान माथुर जी ने लोकप्रिय सुसमाचार और नागरिक अधिकार आंदोलन गीतवी शैल ओवरकम का हिंदी अनुवाद होंगे कामयाब के रूप में किया। इसे दूरदर्शन आर्केस्ट्रा की एक महिला गायिका ने गाया था और संगीत को सतीश भाटिया ने भारतीय संगीत वाद्य यंत्रों का उपयोग करके व्यवस्थित किया था। इस संस्करण को बाद में टीवीएस सारेगामा द्वारा सामाजिक उत्थान के गीत के रूप में जारी किया गया था जो अक्सर और 70 और 80के दशक में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया जाता था। उस समय दूरदर्शन भारत का एकमात्र टेलीविजन स्टेशन था और यह गीत विशेष रूप से राष्ट्रीय महत्व के दिनों में बजाया जाता था।

''हम चलेंगे साथ–साथ
डाल हाथों में हाथ
हम चलेंगे साथ–साथ एक दिन
हो हो हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास हम चलेंगे साथ–साथ एक दिन
होंगे कामयाब हम होंगे कामयाब एक दिन
मन में है विश्वास पूरा है विश्वास हम होंगे कामयाब एक दिन।[1]

हम होंगे कामयाब जैसी राष्ट्रीयता से ओत प्रोत कविता के लेखक गिरिजा कुमार माथुर ने नई कविता का मार्ग प्रशस्त किया। प्रयोगवादी कविता में गिरिजा कुमार माथुर जी प्रसिद्ध है। प्रयोगवाद को परिभाषित करते हुए गिरिजा कुमार माथुर ने लिखा है :– प्रयोगों का लक्ष्य है व्यापक सामाजिक सत्य के खंड अनुभवों का साधारणीकरण करने में कविता को भावानुकूल माध्यम देना जिसमें व्यक्ति द्वारा "व्यापक" सत्य का सर्व बोधगम्य प्रेषण संभव हो सके।[2] माथुर जी भारतवर्ष के उन जुझारू व्यक्तियों में से एक सशक्त हस्ताक्षर है, जिन्होंने जीवन को बहुत ही निकटता से देखकर यथार्थ पर दृष्टि से बिखरे हुए सूत्रों को एकत्रित किया है।

तार सप्तक का प्रकाशन 1943 में हुआ। इसमें अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमीचंद जैन, भरत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर मच्चे, गिरिजा कुमार माथुर और रामविलास वर्मा इन सात कवियों की प्रतिनिधि रचनाएं संकलित की थी। समकालीन काव्य इतिहास में तार सप्तक में जो स्थान पाया है वह सराहनीय है। आधुनिक बोध और नूतन काव्य संवेदनाओं के सफल कलाकार के रूप में गिरिजा कुमार माथुर तार सप्तक के कवियों में सबसे अलग दिखाई पड़ते हैं। तार सप्तक में गिरिजा कुमार माथुर की कुल मिलाकर 21 कविताओं का संकलन है। 1953 में हिंदी में नई कविता का आंदोलन चला। जब तार सप्तक का संबंध प्रयोगवाद और नई कविता से जोड़ा जा रहा था, वे तार सप्तक के प्रमुख कवि तो है ही तब उन्होंने नई कविता का नेतृत्व करने का विचार किया। अपने समकालीन हिंदी कवियों में उनका स्थान विशिष्ट प्रमाणित हुआ। समकालीन परिवेश और रचनाओं से वे बेहद प्रभावित हुए इसी कारण से वे सफलता के नए शिखर छू सके। भावना के धरातल पर उनकी कविता के नए क्षितिजो का आविष्कार हुआ। गिरिजा कुमार माथुर अपने समय की गतिविधियों तथा विभिन्न विचारधाराओं से प्रभावित हुए। गहन अध्ययन गिरिजा कुमार माथुर के व्यक्तित्व का एक विशिष्ट गुण है, अनेक कविताओं में कवि ने विविध प्रयोग किए हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि नई भाषा शैली इन कविताओं के विशेष गुण है।

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना देखने को मिलती है। उन्होंने मानव को जागरूक, मानवता का पाठ, देश प्रेम, जनजागृति, स्वाधीनता, भारत का भविष्य, यथार्थ बोध, कुटिल नीतियों का खंडन, गांधीवाद का समर्थन और अहिंसा की स्तुति की है। गिरिजा कुमार माथुर एक मानवतावादी रचनाकार है। युगीन परिवेश के प्रति अत्यंत सजग रहे। राष्ट्रीय धरातल पर युगीन समस्याओं के समाधान ढूंढ निकालने के पक्ष में कवि गिरिजा कुमार माथुर के विचार अत्यंत प्रासंगिक एवं उद्देश्य पूर्ण लगते हैं। धूप के धान की कविता में गिरिजा कुमार माथुर ने लिखा है :–

"तप में रची अस्थियों
अस्थियों से निर्माण
मिट्टी नवयुग तन का हरकन
रवि की नई उठान,
तुमने मरकर मिटा दी, विश्व निहाल हुआ।"[3]

समाज और धर्म के क्षेत्र में जो कुरितियां प्रचलन में थे, जिसके कारण सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हो गया था। गांधी जी ने जनता में आत्मविश्वास और चारित्रिक दृढ़ता का विकास किया। लोगों के मन में सत्य और अहिंसा के बल में शांति की भावना उत्पन्न की। गांधी जी जैसे महान दार्शनिक को और विभिन्न धार्मिक महापुरुषों के प्रभाव की स्वीकृति के कारण देश प्रेम माथुर जी का प्रमुख स्वर बन गया। पूंजीवाद के विरोध के साथ–साथ सांप्रदायिकता के विरोध में एवं युद्ध संस्कृति के विरोध तथा शांति के समर्थन के रूप में देश प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। ऐतिहासिक तथ्य एवं कल्पना का आश्रय लेकर कवि गिरिजा कुमार ने स्वदेश के प्रति अपने अनुराग को प्रकट करने के लिए कई महत्वपूर्ण कविताओं का सृजन किया।

"जन अम्बुधि की यह एक लहर आसन्न क्रांति की दूत हुई
लो महाशक्ति युग जीवन की जन जीवन में संभूत हुई
देश से उठ आया निनाद अंतिम विराट जनसागर का

हो एक प्राण, हो एक चरण हो एक दिशा जनता निकली।''(4)

बुद्ध नामक कविता में कवि गिरिजा कुमार माथुर ने बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धा भी प्रकट की।

''फैल गई थी मिट्टी के अंतर की बाहें
सत्य और सुंदरता के अविरल संघों से
स्याम, ब्रह्म, जापान, चीन, गंधार, मलय तक
दीर्घ विदेशों के अशोक साम्राज्यों ऊपर
नहीं रहे वे महावंश अब।''(5)

गिरिजा कुमार माथुर ने अपनी कविताओं में स्वाधीनता आंदोलन के समर्थन में जन चेतना को जागृत करने का विशेष प्रयास किया है। स्वाधीन भारत के सुंदर भविष्य की कल्पना कवि कुमार ने भी की है। विदेशी शासन से मुक्ति मिलने के बाद देशभर में उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। 15 अगस्त कविता में माथुर यह विचार व्यक्त करते हैं कि :–

''विषम श्रृंखलाएं टूटी है,
खुली समस्त दिशाएं,
आज प्रभंजन बनकर चलती
युग बंदिनी हवाएं
प्रश्न चिन्ह बन खड़ी हो गई
यह सिमटी सीमाएं
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएं
उठता है तूफान इंदु
तुम दीप्तिमान रहना
पहरुए सावधान रहना।''(6)

पराधीनता की जंजीरे टूटने के कारण कवि ने अपनी खुशी प्रकट की है। कवि माथुर ने पहचाना है कि मात्र आजादी मिलने से समस्याएं दूर नहीं होती विभिन्न धर्मावलंबियों को कवि संदेश देते हैं कि उनके दिलों से पशुता को त्याग कर मानवता को स्थान दें। परस्पर घृणा एवं द्वेष के स्थान पर माननीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करें। "एशिया जागरण" कविता में मानवतावादी विचारक के रूप में गिरिजाकुमार माथुर जी साम्राज्यवादी ताकतों की निंदा की है। उन दिनों पश्चिमी उपनिवेशवाद के विरुद्ध मुखरित प्रजातांत्रिक स्वरों का कवि ने समर्थन किया है।

''मेरी मानवता पर रखा
गिरी–सा सत्ता का सिहासन...
तेरी जंजीरों में बंधकर
कंकाल हुई मेरी काया।''(7)

धूप के धान के अधिकांश कविताएं सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना प्रधान है। विश्व बंधुत्व और विश्व

कल्याण की भावनाओं को उन्होंने अभिव्यक्ति दी है। विश्व संस्कृति के समर्थन में वे लिखते हैं :–

''चीन से पाताल तक भूगोल सारा।
एक संस्कृति डोर में है बांध डाला।।''(8)

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में व्यक्ति और समाज के संबंधों का चित्रण किया गया है। परिवेश गत विडंबनाओं को यथार्थ रूप से अंकित करना, नैतिक व सामाजिक मूल्यबोध की दृष्टि से, अनुभूति की प्रमाणिकता की दृष्टि से इन कविताओं में व्यक्ति की सामाजिकता का महत्व प्रतिपादित हुआ है। मंजीर संकलन की कविताओं में भी समसामयिक घटनाओं का यथार्थ चित्रण किया है।

''यदि आयेंगे अत्याचारी
सुंदर–सुंदर नगर ग्राम को
खंडहर और वीरान बनाने
क्या होगा इन आंखों में रहने वालों का।''(9)

गिरिजा कुमार माथुर भी संप्रदायिकता के शिकार बने। उन्होंने आम लोगों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की और धर्म निरपेक्षता का समर्थन किया। इस आंदोलन के विरुद्ध जनचेतना जागृत हुई, जिसे गिरिजा कुमार माथुर में अपनी कविताओं में व्यक्त किया :–

''बनकर शमशीर उठी जनता
बजता परबत का नक्कारा
नदियां बिजली बनकर उतर पड़ी
हो गया लाल ध्रूव का तारा
धरती के यह जन
फूल उठे बनकर मशाल
हिम के सफेद दीपक की लौ
अब हुई लाल।''(10)

उक्त पंक्तियों में आक्रमणकारी पाकिस्तान की कुटिल नीतियों का जोरदार खंडन किया गया है। पाकिस्तान की नीति के विरुद्ध कश्मीर में कई आंदोलन हुए। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत कविताओं के माध्यम से गिरिजा कुमार माथुर में आंदोलन का समर्थन भी किया। गांधीवादी विचारों से प्रेरित हिंदी कवियों का उद्देश्य लोगों को स्वाधीनता के लिए प्रेरित करना था। इन कवियों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। जनसाधारण से लेकर बुद्धिजीवी वर्ग तक सभी भारत को पूर्ण रूप से स्वतंत्र कराने के लिए प्रतिबद्ध रहे।

धूप के धान संकलन की "बरफ का चिराग" शिर्षक कविता भारत के नागरिकों के मन में स्वाधीनता के प्राप्ति के लिए एक संघर्ष की भावना को प्रोत्साहित करते थे। कवि गिरिजा कुमार माथुर भी महात्मा गांधी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है। सांप्रदायिकता के विरुद्ध गिरिजा कुमार माथुर ने अपने विद्रोह को प्रकट किया। महात्मा गांधी के विचारों से कवि गिरिजा कुमार माथुर बेहद प्रभावित थे। सत्य और अहिंसा के महत्व को उन्होंने स्पष्ट किया है। उन्होंने अपनी कविता धूप के धान में श्रद्धांजलि अर्पित की है :–

''रुग्ण धरा पर जमी हुई थी

सदियां बन प्राचीर
मानवता पर कसी युगो से
पापों की जंजीर
ईसा बुद्ध खड़े नत शिरथी खिची शमशीर,
तुमने धरती के माथे से
पोछी रक्त लकीर।''(11)

इस दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ाने का श्रेय गांधी जी को मिलता है। सहयोग और भाईचारे की भावना को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। गांधी जी ने अहिंसा के जो बीज बोए अवश्य सदियों तक उगते जाएंगे। इन पंक्तियों में अहिंसा के परम उपासक के रूप में महात्मा गांधी के स्तुति की गई है :–

''तू बोये जो भी भाव बीज वे उगते जाएँ सदियों तक
दुःख के दानव ग्रह बुझे सकल
सामाजिक ज्वाला रास्ते में
इंसान बने खुद ही ईश्वर
मानवता उजला पास बने।(12)

निष्कर्ष :–

गिरिजा कुमार माथुर ने अपनी काव्य यात्रा के दौरान सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिपेक्ष में जीवन के विभिन्न पक्षों का वर्णन किया है। वे जीवन के प्रति आस्थावान कवि थे। निजी अनुभूतियों के आधार पर कवि समाज में प्रेम, सद्भावना, त्याग, सौहार्दपूर्ण परिवेश की स्थापना करने का इच्छुक, विभिन्न समस्याओं के प्रति सजग कवि गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में समाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू को सशक्त वाणी प्राप्त हुई। गिरिजा कुमार माथुर की कविता छायावादोत्तर काल के कवियों में महत्वपूर्ण स्थान है। कवि गिरिजा कुमार माथुर नूतन काव्य अनुभूति एवं नूतन विषय की दृष्टि से नई कविता के उत्कृष्ट कवि हैं। हम होंगे कामयाब जैसी राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत कविता के लेखक गिरिजा कुमार माथुर का काव्य सदैव कालजयी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. इंटरनेट : हम होंगे कामयाब।
2. राजनाथ शर्मा : साहित्य निबंध : विनोद पुस्तक मंदिर : हॉस्पिटल रोड़, आगरा, पृष्ठ–81
3. धूप के धान– गिरिजा कुमार माथुर : 1995– भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी : पृष्ठ संख्या–47, 86, 86, 39/40, 10, 02, 68, 49, 44/45, 115
4. मंजीर : 1941 : इंडियन प्रेस पब्लिकेशनस, इलाहाबाद : पृष्ठ संख्या 68
5. मेरे मौलिक विचार।

फोन नं. 9008165910
मेल – kshithijayushi@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 110-118

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्र प्रेम के विविध स्वर

कमलेश चौधरी

शोधार्थी (पीएचडी. हिंदी), भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

राज्य व राष्ट्र दो अलग–अलग अवधारणाएं हैं। कोई भी राज्य जब चेतना के स्तर पर संवेदनाओं को अपनाता हैं, तभी वह राष्ट्र कहलाने के योग्य होता है। जब एक राज्य के नागरिकों में परस्पर मिलकर रहने का भाव हो, उनकी भाषा, साहित्य, संस्कृति, रहन–सहन, वेश–भूषा भिन्नता रखते हुए भी राष्ट्रीय एकता की संवृद्धि में सहायक हो, तो वह राष्ट्र की पदवी से विभूषित किया जा सकता हैं। एक राज्य के अन्दर पाये जाने वाली इन विभिन्न भिन्नताओं को एकात्मकता की ओर अग्रसर करने के लिए जो मनोभाव जिम्मेदार होते हैं, उन्हें हम 'राष्ट्र प्रेम' की संज्ञा दे सकते हैं। अर्थात् किसी भी राष्ट्र के नागरिकों की वह भावना जो उन्हें अपने राष्ट्र के प्रति लगाव, त्याग तथा एक सूत्र में बंधे रहने के लिए प्रेरित करे, 'राष्ट्र प्रेम' कहलाती है।

किसी राष्ट्र के नागरिकों में राष्ट्र प्रेम जाग्रत करने के लिए मुख्यतः वहाँ की राजनीति, धर्म, संस्कृति और सभ्यता को जिम्मेदार माना जाता है। परन्तु इन सबका मार्गदर्शन करने का सामर्थ्य मात्र साहित्य में है। अतः किसी राष्ट्र का साहित्य राष्ट्र प्रेम का संचार करने में मार्ग दर्शक की भूमिका निभा सकता है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हिन्दी साहित्य की विभिन्न काव्यधाराएँ हैं। हिन्दी साहित्य की विभिन्न काव्यधाराएँ समय–समय पर युगानुरूप परिस्थितियों के अनुसार राष्ट्र प्रेम की संवाहक बनी हैं। इस क्रम में सबसे पहला और प्रमुख नाम भारतेन्दु युग का आता है। भारतेन्दु युग की परिस्थितियाँ 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रतिक्रियाओं से प्रभावित थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रतिक्रिया स्वरुप अंग्रेजों की बदली नीतियों ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों को विकट बना दिया था। युग के स्पन्दन को पहचानते हुए भारतेन्दु युगीन कविता ने हिन्दी साहित्य को नई चेतना व दिशा प्रदान की।

डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है– ''आधुनिक राष्ट्रीयता का प्रथम उत्थान हमें सन् 1857 के विद्रोह में मिलता है। अंग्रेज शासक के विरूद्ध हिन्दुस्तान की संगठित राष्ट्रभावना का वह प्रथम आह्वान था और तभी से हमारी राष्ट्रीयता का जयनाद आरम्भ हो गया। अब पहली बार प्रदेश अथवा धर्म–सम्प्रदाय के संकुचित वृत से निकलकर राष्ट्रीयता ने समग्र देश को अंर्तभूत कर लिया। हिन्दी काव्य में यह युग भारतेन्दु युग के नाम से प्रसिद्ध है। भारतेन्दु के समय तक सन् सत्तावन का गदर तो विफल हो चुका था परन्तु वह अपने पीछे एक राष्ट्रीय–चेतना छोड़ गया, जिसका प्रभाव उस युग के विचारवान व्यक्तियों पर रहा था।''[1] इसी प्रकार हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की दूसरे क्रम की द्विवेदी युगीन काव्यधारा ने भी स्वाधीनता संग्राम को नई राह दिखाई। इस युग के काव्य में स्वाधीनता संग्राम की राष्ट्रीय चेतना अपने चरम रूप से मुखरित हुई। द्विवेदी युगीन काव्य ने परन्तंत्रता से मुक्ति

व स्वतंत्रता के लिए त्याग और बलिदान की ओर उन्मुख होने के लिए प्रेरित किया। आधुनिक काल की इन दोनों ही प्रारम्भिक काव्यधाराओ ने राष्ट्र प्रेम की भावना को शब्द–बद्ध करके जन–जन तक पहुँचाया। इन काव्यधाराओं ने एक नए युग का नेतृत्व किया। यह वह समय था जब अंग्रेज सरकार के विरूद्ध कुछ भी कहना अपराध था तब इन काव्यधारा के कवियों ने अंग्रेज सरकार के यथार्थ को प्रस्तुत करके राष्ट्रीय चेतना के निर्माण का साहस दिखाया। भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्र प्रेम को मुखरित करने वाले अनेक स्वर दिखाई देते हैं। हम निम्नांकित बिन्दुओं के अन्तर्गत उनका अध्ययन कर सकते हैं :–

1. देशभक्ति :–

भारतेन्दु युग से पूर्व रीतिकाल का साहित्य श्रृंगार एवं विलास में डूबा हुआ केवल अपने आश्रयदाताओं के मन बहलाने का साधन मात्र रह गया था। परन्तु अंग्रेजों के आगमन व उनकी अत्याचारी नीतियों से जनजीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। जिससे हर क्षेत्र में नव जागरण के अंकुर फूटने लगे। ऐसे समय में कविता ने राज भक्ति के साथ–साथ देश भक्ति का स्वर भी प्रमुखता से प्रस्फुटित किया। कवियों ने अपने देश के प्रति असीम प्रेम को शब्दों में पिरोकर कविता को राष्ट्र और जन से जोड़ा। सभी प्रमुख कवियों ने देश भक्ति पूर्ण कविताएँ लिखी।

डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है– ''भारतेन्दु युगीन कवियों ने भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों की स्मृति तो अनेक बार दिलायी, पर उनकी राष्ट्रीय भावना केवल यहीं तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजों की विचारधारा और उनकी देश भक्ति पूर्ण कविताओं से भी उन्होने यथेष्ट प्रेरणा ली, जिसका फल यह हुआ कि क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे। 'हमारो उत्तम भारत देस (राधाचरण गोस्वामी) और 'धन्य भूमि भारत सब रतन निकी उपजा वनि (प्रेमघन) आदि काव्य–पंक्तियां इसी तथ्य को प्रकट करती हैं। देश के उत्कर्ष–अपकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश ड़ालकर इस युग के कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना के बीज–वपन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। देश भक्ति की जो भावना बाद में मैथिलीशरण गुप्त–कृत 'भारत–भारती' में लक्षित हुई, उसकी प्रेरणा–भूमि भारतेन्दु, प्रेमघन, प्रताप–नारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास आदि की कविताएं ही है। भारतेन्दु की 'विजयिनी विजय वैजयंती', प्रेमघन की 'आनंद अरूणोदय', प्रताप नारायण मिश्र की 'महापर्व' और 'नया संवत्' तथा राधा कृष्ण दास की 'भारत बार हमासा' और 'विनय' शीर्षक कविताएं देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त हैं।''[2]

इसी प्रकार द्विवेदी युग में जयशंकर प्रसाद ने देश प्रेम की भावना को जागृत करने के लिए भारतीय जनमानस में भारतभूमि की व्यापक छवि को दिखलाने का प्रयास किया :–

"अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरस ताम्र रस गर्भ विभा पर, नाच रही तरू शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।" [3]

2. मातृभूमि–प्रेम :–

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों का अपने मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम उनकी कविताओं में लक्षित होता है। अपनी मातृभूमि का गुणगान करते हुए कवि प्रेमघन लिखते हैं :–

"जय–जय भारत भूमि भवानी।
जाकी सुयश पता का जग के दसहूं दिसि फहरानी।" (4)

इन कवियों ने मातृभूमि–प्रेम को सर्वश्रेष्ठ बताया है। कवि प्रेमघन ने कहा कि जो मनुष्य मातृभूमि से प्रेम नहीं करता वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है :–

"वह मनुष्य कहिबे के योग न कबहूं नीच नर।
जन्मभूमि निज नेह नाहि जाके उर अन्तर।" (5)

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने अपनी मातृभूमि की प्रत्येक वस्तु से स्नेह प्रदर्शित किया है। इन्होंने अपनी मातृभूमि के भौगोलिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए इसके प्रति अपने अनुराग को शब्दबद्ध किया है। अपने देश की प्राकृतिक सुषमा पर मुग्ध होते हुए राधाचरण गोस्वामी लिखते हैं :–

"हमारो उत्तम भारत देस।
जाके तीन ओर सागर हैं उत हिमगिरि अतिवेष।
श्री गंगा यमुनादि नदी हैं विध्यांदिक परवेश।
राधा चरण नित्य प्रति बाढ़ो जबलों रवि–राकेश।।" (6)

इसी प्रकार भारतेन्दु ने भी भारतभूमि की महानता का गुणगान करते हुए लिखा है :–

"भारत के भुजबल जग रक्षित।
भारत विद्या लहि जग सिच्छित।।
भारत तेज जगत विस्तारा।
भारत भय कंपित संसारा।।
भारत किरि न जगत उजियारा।
भारत जीव जिअल संसारा।।
भारत वेदकथा इतिहासा।
भारत वेद प्रथा परकासा।।" (7)

इसी प्रकार द्विवेदी युग में भारत देश की पावन धरा की वंदना करते हुए श्री मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं :–

"जय जय भारत भूमि भवानी।
अमरो ने भी तेरी महिमा बारंबार बखानी।
तेरा चन्द्र–वंदन वट विकसित शान्ति सुधा बरसाता है।
मलयानिल विश्वास निराला नव जीवन सरसाता है।
हृदय हरा कर देता है यह अंचल तेरा धानी।
जय जय भारत–भूमि भवानी।" (8)

3. स्वभाषा के प्रति प्रेम :–

राष्ट्र प्रेम के विभिन्न अंगों में स्वभाषा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति जो अपनी मातृभूमि से प्रेम करता है, अपनी मातृभाषा के लिए विशेष स्नेह रखता है। भारतेन्दु युग के कवियों ने ब्रजभाषा का प्रयोग करते

हुए भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार की ओर ध्यान दिया। भारतेन्दु, प्रताप नारायण, प्रेमघन आदि कवियों ने हिन्दी की समृद्धि के लिए विशेष प्रयास किया। भारतेन्दु ने 'हिन्दी भाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के माध्यम से अपने स्वभाषा–प्रेम को प्रकट किया। वे स्वभाषा की उन्नति को ही राष्ट्र की उन्नति मानते थे–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।" (9)

भारतेन्दु का विचार था कि अपनी भाषा के प्रयोग के साथ–साथ विभिन्न प्रयासों से उसे समृद्ध करने का प्रयास भी करना चाहिए। उनके अनुसार विविध भाषाओं के उपयोगी ज्ञान का अपनी भाषा में अनुवाद करके स्वभाषा के साहित्य का विकास करना चाहिए। उनकी इच्छा थी कि हमारी भाषा का विश्वव्यापी प्रचार हो अतः उन्होंने अपनी भाषा के परिमार्जन व साहित्य प्रकाशन पर बल देते हुए कहा :–

"प्रचलित करहु जहान में निज भाषा करि जत्न।
राज काज दरबार में फैला वहु यह रत्न।।
भाषा शोधहु आपनी हो इसबै एकत्र।
पढ़हु पढ़ा वहु लिखहु मिलि छपवाहु कछु पत्र।" (10)

अन्य कवियों ने भी अपने स्वभाषा प्रेम को विभिन्न प्रकार से प्रकट किया था। राधाकृष्णदास ने हिन्दी भाषा को कचहरी में प्रवेश मिलने पर मेकडोलन को बधाई देते हुए कविता लिखी थी। इसी प्रकार पं. प्रताप नारायण मिश्र ने हिन्दी–हिन्दु–हिन्दुस्तान का नारा देकर जनसाधारण में राष्ट्र प्रेम का संचार किया। वे कहते हैं :–

"चहहु जो सांचहु निज कल्यान तो सब मिलि भारत संतान,
जपौ निरन्तर एक जबान, हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान।।"(11)

द्विवेदी युग के प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भी अंग्रेजों द्वारा थोपी गई भाषा का मोह छोड़ने और राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाने हेतु प्रेरित करते हुए लिखा है : –

''हिन्दू होकर भी हिन्दी में यदि कुछ भी न भक्ति के लेश,
दूर देश के भाषाओं से यदि इतना है प्रेम विशेष।
इंगलिस्तान, अरब, फारिस को तो अब तुम कर दो प्रस्थान,
यहातुम्हाराकामनहीं, खुद छोड़ो मेरा हिन्दुस्तान।।''(12)

4. स्वदेशी के प्रति आग्रह :–

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने विदेशी वस्तुओं का विरोध करते हुए स्व देश निर्मित वस्तुओं के प्रति आग्रह की भावना को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। ''भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की कामना से इस युग के कवियों ने स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने पर बल दिया।'' जीवन बिदेस की वस्तु लैता बिन कछु नहि करि सकत" के प्रतिपादक भारतेन्दु ने 'प्रबोधिनी' शीर्षक कविता में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रत्यक्ष रूप में प्रेरणा दी है। प्रेमघन की 'आर्याभिनंदन', प्रताप नारायण मिश्र की 'होली है' तथा अंबिका व्यास की 'भारत धर्म' शीर्षक कविताओं में भी विदेशी वस्त्रों और अन्य वस्तुओं के आयात को भारत की आर्थिक दुर्गति का मूल कारण माना गया है।" (13)

भारतेन्दु जी ने विदेशी वस्तुओं का उपभोग करने वालों की कड़ी आलोचना करते हुए कहा :–

"मारकीन मलमल बिना चल तक छुनहिं काम।
परदेसी जुलहान के मानहु भए गुलाम।।
परदेसी की बुद्धि अरू वस्तु न की करि आस,
पर बस ह्वैक बलौं कहौ रहि हो तुम ह्वै दास।।" (14)

भारतेन्दु जी ने बताया कि विदेशी वस्तुओं के प्रयोग से भारत का धन बाहर चला जा रहा है। विदेशी व्यापारी हमारे देश से कच्चा माल सस्ता ले जाकर वहां वस्तुओं का निर्माण करके महंगे दाम में हमारे देश में बेचते हैं :–

"कल के कल बल छल न सों छले इते के लोग।
नित नित धन सों घटत हैं बढ़ बाढ़त है दुख सोग।।
वस्त्र काँच कागज कलम चित्र खिलौने आदि।
आवत सब परदेस सों नितहिं जहाज नलादि।।" (15)

5. स्वसंस्कृति–प्रेम :–

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति राष्ट्रवासियों के गौरव का विषय होती है। भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने भी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति गर्व प्रकट किया है। उन्होंने देश की गौरवशाली सांस्कृतिक धरोहर का परिचय अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करके देशवासियों में स्वसंस्कृति–प्रेम को बढ़ाया। तत्कालीन परिस्थितियों में अंग्रेजी संस्कृति से सम्पर्क बढ़ने के कारण युवा वर्ग अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से हटता जा रहा था। तत्कालीन युवा अंग्रेजी संस्कृति को श्रेष्ठ मान कर भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों को शर्मनाक मानने लगा था। ऐसे अंग्रेजी–शिक्षा प्राप्त नवयुवको द्वारा भारतीय रीति– नीति को त्यागकर पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करने पर प्रताप नारायण मिश्र ने व्यंग्य करतें हुए कहा :–

"जग जानै इंगलिश हमैं, वाणी वस्त्र हिंजोय।
मिटै बदनकर श्याम रंग, जन्म सुफल तब होय।।" (16)

भारतेन्दु जी ने भी ऐसे पढ़े–लिखे पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करने वाले युवकों पर व्यंग्य करते हुए लिखा :–

"धोय के लाज सरम पी गए सबल रकन लोग।
काहे के बाप मतारी रहे नाना कैसा।।
आँखी के आगे लगे पीये सभै मिल के शराब।
हाय अब जात कहाँ पंथ के जाना कैसा।
पगड़ी जामा गवा अब कोट औ पतलून रही।
जब चुरूट है तो इलाइची का है खाना कैसा।।" (17)

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने अंगेजी चकाचौंध में अपनी संस्कृति व सभ्यता को भूलने वालों को व्यंग्य के माध्यम से जागरूक किया। उन्होंने राष्ट्र प्रेम के संचार के लिए स्वसंस्कृति से अनुराग को आवश्यक माना। परन्तु देशवासी स्वसंस्कृति को भूलकर विदेशी संस्कृति को बढ़ावा देकर राष्ट्र को सांस्कृतिक हीनता की ओर धकेल रहे थे। प्रेमघन ने इस परिस्थिति को दर्शाते हुए लिखा :–

"अंगरेजी पढ़ि राजनीति यूरप आजादी।
सीखी, हिन्द में बसि, निरख्यो अपनी बरबादी।।
करि भोजन मैं कमी किते अंगरेजी बानो।
बनवत, पैनहिं बनत कै सहू ढंग विरानो।।" (18)

इसी प्रकार भारतीय होकर भारतीय संस्कृति से घृणा करने वालों को फटकारते हुए उन्होंने कहा :–

"पढ़ि विद्या परदेश की बुद्धि विदेसी पाय।
चाल चलन परदेस की भाई इन्हें अति भाय।।
ठटे विदेशी ठाठ सब, बनाये देस विदेस।
सपनेहुं जिनमें न कछु भारतीय तालेस।।
हिन्दुस्तानी नाम सुनि अबये सकुचिल जात।
भारतीय वस्तु ही सोंये हाय घिनात।।" (19)

प्रेमघन ने राष्ट्र प्रेम जाग्रत करने के लिए भारतीयों को स्व संस्कृति प्रेम का पाठ पढ़ाया। वे अपनी संस्कृति अपनाने पर बल देते हुए कहते हैं :–

"अपनी जाति वस्तु अपने आचार देश भाषा से।
रक्खो प्रीति रीति निज धर्म वेष पर अति ममता से।।" (20)

6. अतीत के वैभव का गौरवगान :–

भारत का अतीत गौरवशाली रहा हैं। इस गौरवशाली अतीत से प्रेरणा पाकर वर्तमान को उज्ज्वल बनाया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने भारत के वैभवशाली अतीत की तस्वीर लोंगो के सामने प्रस्तुत की। भारतेन्दु जी ने भारत के अतीत पर गर्व प्रकट करते हुए कहा :–

"सबसे पहले जेहिं ईश्वर धन बल दी हो।
सबसे पहले जेहिं सभ्य विधाता की हो।
सबसे पहले जोरू परंग रस भीनो।
सबसे पहले विद्या फल जिन गहि लीनो।।" (21)

ये कवि जब अतीत की गौरवशाली स्मृति के बाद वर्तमान की विचारणीय अवस्था को देखते हैं तो रह–रहकर उनके मन में अतीत के वैभवशाली भारत की स्मृतियाँ मंडराने लगती हैं। कवि पुनः उसी भारत के दृश्य देखने की इच्छा प्रकट करते हुए कहता हैं :–

"जहं मारी को डर नहीं, अरू अकाल को त्रास।
जहं करे सुख सम्पदा, बारह मास निवास।।
जहं प्रबल को बल नहीं, अरू निबलन की हाय।
एक बार सो दृश्य पुनः आखिन देहु दिखाय।।" (22)

कवि ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहता है कि जिस भारत में कभी रोग और अकाल का नामोनिशान नहीं था, जहां हमेशा सुख–सम्पदा विद्यमान थी, आज उसी भारत को पुनः अपनी आंखों से देखना चाहता हूँ। कवि गौरवशाली अतीत को पुनः जीवंत करना चाहता है। क्योंकि जब वह वर्तमान की देश–दशा देखता है तो

रह–रहकर उसे भारतीय अतीत की गौरवपूर्ण स्मृतियों के साथ–साथ पूर्वजों की स्मृति भी आती है। कवि राधाकृष्णदास अतीत के महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र प्रेम का संचार करके देश की उन्नति व मुक्ति का प्रयत्न करते हुए कहते हैं :–

"कहां परीक्षित कहं जनमे जय कहं विक्रम कहं भोज,
नंद वंश कहं चन्द्रगुप्त कहं, हाय कहां वह ओज।
हा कबहूँ वह दिन फिर ह्वै हैं, वह समृद्धि व शोभा,
कै अब तर सि–तर सिम सूसि कै दिन जैहें सब छोभा।।" (23)

इसी प्रकार भारतेन्दु जी ने भी भारत के महापुरूषों को याद करते हुए लिखा हैं :–

"कहं गए विक्रम भोज राम बलि कर्ण युधिष्ठिर।
चंद्रगुप्त चाणक्य कहां ना से करि कै थिर।।
कहं क्षत्रिय सब मरे जरे सब गये कितै गिर।
कहां राज को तौन साज जेहि जानत है चिर।।
कहं दुर्ग–सेन–धन–बल गयो धूरहि धूर दिखात जग।
जागो अब तो खल–बल–दल न रक्षहु अपनो आर्य–मग।।" (24)

द्विवेदी जी ने भारत देश के गौरवमय अतीत का स्मरण करते हुए लिखा है :–

"जहा हुए व्यास मुनि प्रधान,
रामादि राजा अति कीर्ति मान।
जो थी जग पूजित धन्य धाम,
वही हमारी यह आर्य भूमि है।" (25)

इस प्रकार इन कवियों ने देशवासियों में राष्ट्र प्रेम का संचार करने के लिए भारत के अतीत का गौरवगान किया। अतीत के गौरवशाली चित्रों को प्रस्तुत करके इन्होंने राष्ट्र में नवजागरण लाने का प्रयत्न किया।

7. स्वतन्त्रता के संघर्ष के लिए आह्वान :-

तत्कालीन परिस्थितियों व दुर्दशा का सबसे प्रमुख कारण पराधीनता था। भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने विदेशी शासन से होने वाले कष्टों व स्वाधीनता के सुखों का चित्रण करके देशवासियों में स्वतन्त्रता की अलख जगाई। प्रताप नारायण मिश्र ने पराधीनता से मिलने वाली निराशा को लक्ष्य करके लिखा :–

''अपनो काम आपने ही हाथ भल होई,
पर देशिन पर धर्मिन ते आशा नहिं कोई।।''(26)

इसी प्रकार प्रेमघन को भी पराधीनता का कष्ट दुःखदायी लगता था। वे ईश्वर से देशवासियों के लिए स्वतन्त्रता की कामना करते हुए कहते हैं :–

''एकता धीरता, प्रेमघन देशभक्ति स्वाधीनता,
हरि वैर फूट अन्याय संग हरै दोष दुरत दीनता।।''(27)

देश की स्वतन्त्रता के लिए किया गया 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कुछ कारणों से असफल अवश्य हुआ, परन्तु इसने जनमानस में स्वतन्त्रता के अंकुर भी बो दिए थे। इसकी असफलता से उत्पन्न विक्षोभ को स्वर

देते हुए प्रताप नारायण मिश्र ने लिखा–

''सन्सत्ता वन माहिं कछु सेना बिगरी।
तब राजा दिषि ही रही सुदृढ़ ह्वै पर जा सिगरी।।
दुष्ट समुझि अपने माइन कहं साथ न दीन्हों।
भोजन बिन विद्रोहि न कर दल निरबल कीन्हो।।
ठौर ठौर निज घर लुटवाये अरू फुकवाए।
प्रान खोय बहु ब्रिटिश वर्ग के प्रान बचाए।।''(28)

द्विवेदी युग के कवि श्यामनारा यण पांडेय ने महाराणा प्रताप को स्वतंत्रता का पर्याय बताते हुए देशवासियों में तत्कालीन युगीन मांग स्वतन्त्रता के प्रति लगन उत्पन्न करने का प्रयास किया :–

"उसके एक इशारे पर वीरोंने ले तलवारें,
पर्वत पंथ रंग दिये रक्त सेकर वीरों परवारें,
निकल रही जिसकी समाधि से स्वतन्त्रता की आगी।
यही कही पर छिपा हुआ है वह स्वतन्त्र बैरागी।"(29)

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भारत के नौजवानों को स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए पुकारते हुए लिखा है :–

"हे स्वतंत्रते ! जन्म तुम्हारा कहाँ?
बता, यह प्रश्न हमारा।
शूर देश–हित तजते जहाँ प्राण,
जन्म मेरा है वहाँ।" (30)

भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कवियों ने राष्ट्र जागरण का प्रबल स्वर अपने काव्य में प्रस्तुत किया। इनके द्वारा प्रस्तुत राष्ट्र प्रेम के विविध स्वर अपने प्रथम चरण में होने के बावजूद न केवल देश के राजनीतिक पक्ष बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पक्षों तक फैली हुई थी। इन कवियों ने विदेशी शासन की निंदा, साम्राज्यवाद का विरोध, आर्थिक शोषण की निंदा के साथ–साथ देशवासियों में स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्व–अतीत तथा मातृभूमि के प्रति प्रेम का भाव जगाकर उन्हें राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत कर दिया। इस प्रकार निष्कर्षत :राष्ट्र प्रेम का सर्वमुखी प्रसार भारतेन्दु व द्विवेदी युगीन कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धि घोषित की जा सकती है।

संदर्भ सूची :–

1. आस्था के चरण : डॉ. नगेन्द्र, पृ. 236
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, पृ. 440
3. चन्द्र गुप्त : जयशंकर प्रसाद, पृ. 891
4. प्रेमघन सर्वस्वः प्रेमघन, प्रथम भाग, पृ. 629
5. वही, पृ. 7
6. आधुनिक काव्य धारा, पृ. 67

7. भारतेन्दु ग्रन्थावली (पहला भाग) : (सं.) ब्रजरत्न दास, पृ. 491
8. मंगल घट : मैथिली शरण गुप्त, पृ. 33
9. भारतेन्दु समग्रः (सं.) हेमन्त शर्मा, पृ. 228
10. वही, पृ. 229
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, पृ. 473
12. काव्यमाला : महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृ. 441
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र,, पृ 441
14. भारतेन्दु ग्रन्थावली (दूसरा भाग) : (सं.) ब्रजरत्न दास, पृ. 738
15. वही, पृ. 735
16. हिन्दी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, पृ. 446
17. भारतेन्दु ग्रन्थावली (तीसरा भाग) : (सं.) ब्रजरत्न दास, पृ. 863
18. प्रेमघन सर्वस्व : प्रेमघन, प्रथम भाग, पृ. 57
19. वही, पृ. 385
20. वही, पृ. 376
21. भारतेन्दुग्रन्थावली (पहलाभाग)रू (सं.) ब्रजरत्नदास, पृ. 469
22. बालमुकुन्दनिबन्धावली (प्रथमभाग)रू (सं.) श्रीबनारसीदासचतुर्वेदी, श्रीझाबरमल, पृ. 588
23. राधा कृष्ण ग्रन्थावली : (सं.) श्याम सुन्दर दास, पृ. 8
24. भारतेन्दु ग्रन्थावली (दूसरा भाग) : (सं.) ब्रजरत्न दास, पृ. 683
25. काव्य माला : महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृ. 406
26. लोकोक्ति शतक : प्रताप नारायण मिश्र, पृ. 3
27. प्रेमघन सर्वस्व : प्रेमघन, पृ. 378
28. हिन्दी साहित्य की भूमिका : डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ. 184
29. हल्दी घाटी : श्री श्याम नारायण पांडेय, पृ. 5
30. काव्यमाला : महावीर प्रसाद द्विवेदी, पृ. 420

घर का पता :–
मोती नगर, सेन्दड़ा रोड़,
ब्यावर, अजमेर (राज.)
मो. न.– 09636935825
ईमेल– kamaleshchaudhary8887@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 119-120

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी साहित्य में राष्ट्र प्रेम

डॉ. राजेश गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), अकलंक कॉलेज, कोटा (राज.)

''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।[3]

रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा रचित कविता उस राष्ट्रीय भावना की प्रतीक है जब अपनी जन्मभूमि को पराए बंधनों से मुक्त कराने के लिए आबाल–वृद्ध सिर का सौदा करने के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रत्येक जाति और देश का अपना साहित्य होता है। साहित्य में समय की धड़कनें और जीवन की चिंगारियां छिपी रहती है। साहित्य जागता है तो देश जागता है। राष्ट्र के लिए जब कभी संकट आया और दुविधा में पड़े राष्ट्र के पाँव डगमगाए तो हिंदी कवियों ने अपने कर्तव्य को निभाने में कभी ढिलाई नहीं करी। यह एक सुखद सत्य है कि हिंदी कविता ने अपने परिवेश में प्रारंभ से ही राष्ट्रीय भावनाओं को उत्तेजित करने का धर्म निभाया है।

आदिकाल के रासो ग्रन्थों में पृथ्वी राजरासो में भारत की राष्ट्रीय अखंडता और स्वाभिमान के लिए दिए गए बलिदानों की उदारता, शरणागत वत्सलता, क्षमा, त्याग, मर्यादा, आदर्श, वीरता आदि का गौरवपूर्ण चित्र मिलता है। चंदबरदाई केवल कवि नहीं था, वह देश धर्म की रक्षा के लिए तलवार हाथ में लेकर चलने वाला एक ऐसा कवि था जिसने संपूर्ण राष्ट्र की आशाओं के प्रतीक अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

मध्यकाल में संतों और भक्तों ने अपनी खंडन–मंडन वाणी से विघटनकारी और अराजक तत्वों की अच्छी खबर ली और मानव मूल्यों पर आधारित एक समग्र राष्ट्रीय चेतना युक्त समाज के निर्माण को महत्व दिया। रामचरित मानस के उत्तर कांड में महाकवि तुलसी अपनी देशभक्ति को इस प्रकार प्रकट करते हैं :–

दैहिक दैविक भौतिकतापा। राम राज काहू नहीं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति। चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति।[1]

उत्तर मध्यकाल जो कि घनघोर विलासिता का युग था, उसमें वीरत्व और राष्ट्रीय चेतना के आलंबन महाराष्ट्र में शिवाजी, बुंदेलखंड में छत्रसाल और पंजाब में गुरु गोविंद सिंह प्रकाश में आए। इन महापुरुषों को आधार बनाकर संपूर्ण राष्ट्र में चेतना का संचार करने के लिए महाकवि भूषण, सूदन और स्वयं गुरु गोविंद सिंह ने अपनी कविता में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति की।

मध्यकाल में डिंगल काव्य ने भी राष्ट्रीय गौरव से युक्त छंदों की रचना की। महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीर सतसई की रचना की, जिसमें माता अपने पुत्र को मातृभूमि की रक्षार्थ प्राण उत्सर्ग करने की शिक्षा देती है :–

इलान देणी आपणी हालरिया हुल राय।

पूत सिखावे पालणे मरण बढ़ाई माय।[12]

आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हमें भारतेंदु युग में देखने को मिलता है। भारत की दुर्दशा देखकर कवि हृदय रो उठता है :–

आवहू सब मिलि रोव हूँ भारत भाई।

हा–हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।।[3]

भारतेंदु ने यदि आंतरिक राष्ट्र भक्ति को प्रस्तुत किया हैं तो वहीं द्विवेदी युग में जननी जन्मभूमि का गौरवगान किया गया :–

माखनलाल चतुर्वेदी पुष्प की अभिलाषा कविता में आत्मोत्सर्ग की भावना प्रस्तुत करते हैं :–

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तू देना फेक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाते वीर अनेक।[4]

छायावादी कवियों ने जहां एक और प्रकृति–प्रणय के गीत गाए, वही यह काव्य देशभक्ति की भावना से ओत प्रोत रहा। जयशंकर प्रसाद ने चंद्रगुप्त नाटक में कहा :–

अरुण यह मधुमय देश हमारा,

जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।'' [5]

सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी कविता राष्ट्रीय गौरव भावना से परिपूर्ण है।

1962 में चीन से करारी पराजय के बाद जब पूरा देश निराशा के अंधकार में डूबा हुआ था उस समय कवि प्रदीप ने :–

ए मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी,

जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी।

गीत लिखकर राष्ट्रकवि की उपाधि प्राप्त की।[6]

सारांशतः हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति भिन्न–भिन्न रूपों में हुई है कवियों ने अपने अपने भाव पुष्पों को विभिन्न रूपों में देश के चरणों में चढ़ाया है। इन कवियों ने निर्भीकता, आत्म बलिदान, त्याग, राष्ट्र प्रेम आदि के द्वारा अपनी देशभक्ति प्रस्तुत की है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. रामचरितमानस – तुलसीदास –उत्तरकांड –दोहा नंबर 20(1)
2. वीर सतसई– सूर्यमल्ल मिश्रण।
3. भारत दुर्दशा– भारतेंदु।
4. पुष्प की अभिलाषा –माखनलाल चतुर्वेदी।
5. चंद्रगुप्त– जयशंकर प्रसाद।
6. अहा जिंदगी –पृष्ठ– 76 – फरवरी 2015
7. हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियां– डॉ. शिवकुमार शर्मा।

Address: 1415, Basant Vihar, Kota, Rajasthan (324009)

मोबाइल नंबर – 9462968444, Email Id - alkag.3004@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 121-122

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी उपन्यासकार कुशवाह कांत का योगदान

डॉ. तस्लीमा

प्राध्यापिका, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, विश्वविध्यालय कॉलेज, मंगलूरु– 575001

हिन्दी साहित्य जगत में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रेमचंद और रामचन्द्र शुक्ल के बाद अगर किसी रचनाकार ने सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित की तो वो वह कुशवाहा कांत थे। उनके क्रांतिकारी और जासूसी उपन्यास हिन्दी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान है। अर्थात उनके उपन्यास आज भी मील के पत्थर बनकर कार्य कर रहा है। महान साहित्यकार कुशवाहा कांत अपने युग के लाखों–करोडों पाठकों के ह्रदय पर राज करते हुए जिन्दगी जिया है। लेकिन इन साहित्यकारों का उपन्यासों का सही ढंग से मूल्यांकन न करने के कारण अब भी वे गुमनाम का अंधेरे में खो गए है।

कुशवाहा कांत के जन्म के बारे में वरिष्ट पत्रकार विनय मौर्य कहते है– "एक तरफ गुलामी की जंजीरों से जकडा हुआ जनमानस था तो दूसरे ओर हाड कपकपाने वाली शीत लहर का प्रकोप। इसी के बीच 9 दिसंबर 1918 को मिर्जापुर शहर के मुहल्ले महुआरिया में जन्म हुआ"। उनके पिता का नाम श्री केदरनाथ कुशवाहा एवं माता का नाम श्रीमती जगपति देवी था। कुशवाहा कांत के दो भाई थे। कुशवाहा कांत का विवाह 1938 ई. में मिर्जापुर और वाराणासी जिले के सीमांत पर स्थित खम्हारिया नामक गाँव में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती तारा देवी था। कुशवाहा कांत के तीन पुत्र हैं। उनके बड़े पुत्र का नाम त्रिलोक कुशवाहा, मंझले का आलोक कुशवाहा एवं छोटे पुत्र का नाम चंद्रलोक कुशवाहा है। उनके छोटे भाई भी अत्यंत तेजस्वी उपन्यासकार है। कुशवाहा का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक रहा। उनकी लंबाई साढे पाँच फुट थी। उनका रंग एकदम गोरा था। पान–सिगरेट की लत उन्हें पहले से लगी हुई थी। वे देर रात तक उपन्यास लिखा करते थे। सन् 1952 में हुई एक जानलेवा आक्रमण के कारण उनका निधन हुआ।

कुशवाहा कांत की पढाई–लिखाई मिर्जापुर में हुई। वे 1935 ई.में बाबूलाल जायसवाल इंटर कॉलेज, मिर्जापुर से मैट्रिक की परिक्षा उत्तीर्ण हुए। बाद में उनका स्नातक की पढाई काशी हिन्दू विश्वविध्यालय में किया। वे बचपन से ही एक प्रतिभा संपन्न छात्र थे। उनकी प्रारंभिक रुचि नाटक के क्षेत्र में थी। वे नाटकों में अभिनय भी किया करते थे। 1942 ई. के 'भारत छोडो आंदोलन' में वे काफी सक्रिय थे। वे मिर्जापुर में अंग्रेजों के खिलाफ हुए लडाई में भी भाग लिए थे। अंग्रेजी सरकार ने भारत छोडो आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हे एक वर्ष के लिए कारवास की सजा सुनाई। कुशवाहा कांत ने रॉयल एयर फोर्स में भी काम किये थे। परंतु अंग्रेजी सरकार

को वे कांग्रेसी और अंग्रेज विरोधी आंदोलन में शामिल हुए खबर मालूम होने के कारण उन्हे सेवा से हटा दिया गया। फिर भी उनकी देशभक्ति कम नहीं हुई। वे राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत साहित्य रचना किया करते थे। वे अपने रचनाओं के माध्यम से लोगों में देश प्रेम जगाते थे। वे 'चिनगारी', 'नागिन', 'बिजली' नामक तीन पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

कुशवाहा कांत ने कहानी, नाटक, व्यंग्य शैली में कई उपन्यास, और कवितओं की पुस्तक लिखी, जो इनके प्रमुख साहित्य योगदान माना जाता है। चर्चित उपन्यासकार कुशवाह कांत अपने दशक के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक थे। जिनके किताब खरीदने के लिए चिंगारी प्रकाशन के सामने बड़ी–सी भीड़ लग जाता था। उन्हें नियंत्रित करने के लिए पुलिस आया करते थे।

कुशवाहा कांत ने 'लालरेखा', 'पपिहारा', 'परदेशी', 'पराया', 'पारस', 'जंजीर', 'उडते–उडते', 'नागिन', 'जवानी के दिन', 'हमारी गलियां', 'खून का प्यास', 'दानव देश' आदि जैसे 35 चर्चित उपन्यासों की रचना की है। 'लालरेखा' उपन्यास को पढने के लिए बडी संख्या में अहिन्दी भाषियों ने हिन्दी सीखी थी। 'लालरेखा' की लोकप्रियता आज भी कायम है। इस विचार को समर्थन करते हुए भोलनाथ कहते है– "कुशवाहा कांत का उपन्यास 'लालरेखा' हिन्दी के लोकप्रिय उपन्यासों में मील का पत्थर बने है जिसने बड़े पैमान पर हिन्दी के पाठक बनाए। 1950 में लिखे इस उपन्यास उस समय की जितने धाराएँ थी, सभी एक साथ इसमें समाहित किया है। रोमांस, रहस्य, राष्ट्रवाद और सामाजिक मूल्यों से ओत–प्रोत कथानक एक मानक का तरह मील का पत्थर बने है जिसने बड़े पैमान पर हिन्दी के पाठक बनाए। 1950 में लिखे इस उपन्यास उस समय की जितने धाराएँ थी सभी एक साथ इसमें समाहित किया है। रोमांस, रहस्य, राष्ट्रवाद और सामाजिक मूल्यों से ओत–प्रोत कथानक एक मानक का तरह"।

हिन्दी साहित्यकारों के बीच उपेक्षित और अछूत बने रहे कुशवाहा कांत अपने युग के युवा पीढी के लिए वे एक आदर्श लेखक थे। कांत की लोकप्रियता को गुलशन नंदा के समकक्ष देखा जा सकता है। उनकी कालजयी रचनाओं का जादू आज भी फिजा में छाया हुआ है।

संदर्भ :–

1. हिन्दी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
2. लालरेखा – कुशवाहा कांत।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 123-127

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उषाकिरण खान के उपन्यासों में चित्रित समाज में परिवर्तन

अलिशा बेगम एन

शोधार्थी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्याग राज नगर, चेन्नई, भारत।

प्रस्तावना :–

समाज मनुष्य के पारस्परिक संबंधों का जाल है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति का शारीरिक मानसिक तथा आर्थिक सभी प्रकार का विकास समाज में होती हैं। अकेला मनुष्य संपूर्ण अपनी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। इसके लिए उसे अन्य व्यक्तियों पर आश्रित रहना पड़ता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए वह समाज का निर्माण करता है। मनुष्य में समाज निर्माण की प्रक्रिया स्वाभाविक है। समाज में रहकर मनुष्य अंतः क्रिया करता है, जिसके फलस्वरूप समाज में संबंधों का जाल बन जाता है। इस प्रकार समाज का निर्माण होता है। समाज में रहकर व्यक्ति कुछ नियमों से बंध जाता है। यही नियम सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाते हैं। हर समाज के कुछ अपने नियम कानून होते हैं, जो उस समाज के व्यक्तियों द्वारा मान्य होते हैं। यह नियम कानून एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानांतरित होते हैं, क्योंकि मनुष्य की आवश्यकताओं में दिन प्रतिदिन बदलाव होता रहता है। परिणाम स्वरूप समाज में भी बदलाव होता रहता है। कभी यह बदलाव मंद और कभी तीव्र गति से संपन्न होता है।

मानव और समाज :–

मानव में सीखने की क्षमता होती है। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुछ कार्य करता है। इन कार्यों को वह अपने व्यवहार का अंग बना लेता है। मानव समाज में यही व्यवहार नैतिकता और अनैतिकता की भावनाओं में बंधे रहते हैं। इन्हीं नैतिक अनैतिक व्यवहार पर मानव समाज के साथ अपने संबंध का निर्धारण करता है।

मैकाइवर के अनुसार 'समाज रीतियों, कार्य प्रणालियों, अधिकार व पारस्परिक सहायता अनेक समूहों तथा उनके उप विभागों, मानव व्यवहार के नियंत्रणों और स्वतंत्रता की व्यवस्था है, इस सदैव परिवर्तनशील जटिल प्रक्रिया को हम समाज कहते है"[1]। समाज के अंतरू में जो प्रक्रियाएं होती हैं। उनके मुख्य घटक हैं – घटनाओं का क्रम, घटनाओं की पुनरावृति, घटनाओं के मध्य संबंध, घटनाओं की निरंतरता, विशिष्ट परिणाम। इन घटकों के चलते समाज में परिवर्तन होते हैं।

समाज में परिवर्तन :–

मानव समाज परिवर्तनशील है, उसके आचार–विचार, रीति–रिवाज, रहन–सहन, जीवन पद्धति में समय–समय पर बदलाव आते रहते हैं। कई बार भौगोलिक कारणों, प्राकृतिक आपदाओं, संघर्षों तकनीकी विकास इत्यादि के कारण समाज में नित नए बदलाव आते रहे हैं। यह बदलाव ही सामाजिक परिवर्तन कहलाते हैं। 'मूलभूत अर्थ से समाज रचना में बदलाव होना ही सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है'। यह परिवर्तन अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का हो सकता है। अच्छा परिवर्तन समाज को उन्नत बनाता है और बुरा परिवर्तन समाज के पतन का कारण बनता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में नित नए परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। एक तरफ तो भारत के सभी व्यक्तियों का पेट भरने जैसी समस्या थी तो दूसरी ओर भारतीय समाज का चहुँमुखी (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक) विकास करना था। इसके चलते भारतीय समाज में विविध भाँति परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

उषा किरण खान :–

उषा किरण खान का जन्म 7 जुलाई 1945 लहेरिया सराय दरभंगा में हुआ। उन्होंने मैथिली व हिंदी भाषा में समान रूप से रचनाएं की हैं। महादेवी वर्मा के बाद भारत–भारती पुरस्कार पाने वाली यह पहली महिला लेखिका है। इन्होंने 50 हिंदी और 25 मैथिली कहानियां लिखी हैं। इन्होंने कई उपन्यास भी लिखे हैं। भामती उपन्यास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। अपने साहित्य में उषाकिरण खान ने समाज की यथार्थता को प्रस्तुत किया है। चाहे वह सामाजिक मुद्दा हो या राजनीतिक कोई भी पक्ष उनकी उपन्यासों में अछूता नहीं रहा है। उनका कहना है मैं लेखिका हूं केवल लिखूंगी।

उषाकिरण खान के उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन :–

उषाकिरण खान ने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में बदलावों को भली–भांति चित्रित किया है। उन्होंने स्त्री समाज, स्त्रियों की सोच, स्त्रियों पर बढ़ती जिम्मेदारी, पुरुषों का बदलता नजरिया, साक्षरता अभियान, बाल विकास, बदलता राजनीतिक परिवेश, राजनीति में बढ़ता भ्रष्टाचार, जातिवाद, युवक–युवतियों की नई विचारधारा में परिवर्तनों को बखूबी अपने उपन्यासों में चित्रित किया है। उन्होंने अपने उपन्यास में स्वतंत्रता के पश्चात समाज में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तनों का पात्रों के माध्यम से सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। उषाकिरण खान की एक मुख्य विशेषता है, कि वह नकारात्मकता से धीरे–धीरे सकारात्मकता की ओर अपने उपन्यासों को ले जाती हैं। उनकी यह सोच समाज में एक बड़े परिवर्तन का आधार बनती है। उषाकिरण खान के उपन्यासों में चित्रित समाज इस प्रकार है।

पानी पर लकीर :–

भारत में पुरानी परंपराओं और रूढ़ियों के चलते औरत को घर के बाहर नहीं निकलने दिया जाता था। उनको घर के कार्य तक सीमित रखा जाता था। पहले तो उन्हें पढ़ाया–लिखाया नहीं जाता अगर पढ़ाया जाता है, तो सिर्फ इसलिए कि उनकी शादी अच्छे घर में हो जाए। ज्यादातर लड़कियों को तत्कालीन समाज में भी इसलिए ही पढ़ाया जाता है, कि उनकी शादी अच्छे घर में हो जाए। माता–पिता उनकी आजीविका की चिंता नहीं करते। उनको आर्थिक रूप से सबल नहीं बनाते। लड़कियां जब शादी कर ससुराल जाती है, तो वहाँ पर उनको अपनी छोटी–बड़ी हर जरूरत के लिए पूर्ण रूप से अपने पति पर निर्भर रहना पड़ता है। कई बार पति

उन्हें पैसे दे देते हैं। कई बार नहीं देते। ऐसी स्थिति में उनको मनमार कर रह जाना पड़ता है। कहीं न कहीं उनके जीवन में उदासीनता जन्म ले लेती है। परिवार की धुरी औरतों में जीने की इच्छा समाप्त हो जाती है। ऐसी औरत अपने बच्चों का कैसे पूर्ण रूप से विकास कर पाएगी। इस स्थिति में कहीं न कहीं राष्ट्रीय उन्नति भी प्रभावित होती है। अतः स्त्रियों की यह स्थिति सही नहीं है। वर्तमान समय में स्त्रियों ने इस बात को समझा है। उन्होंने आत्मनिर्भर होने का निर्णय लिया है। चाहे वह पढ़ी–लिखी स्त्री हो या अनपढ़ स्त्री। वह अपना विकास चाहती है। यह बात उषाकिरण खान ने अपनी उपन्यास पानी पर लकीर में चित्रित किया है।

'जलजा सिलाई मशीन लेकर ससुराल गई वहां वह घर के काम से फुर्सत पा सिलाई कर पैसे कमाने लगी'[3]।

तत्कालीन भारतीय समाज में स्त्रियां आत्मनिर्भर हो रही है। वह अब किसी के रोके नहीं रुकना चाहती हैं। वह भी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती हैं। वह खुद ही नहीं अपने जैसी अन्य स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने की भावना जागृत करना चाहती हैं। जब यह स्त्री सुधार की भावना ग्रामीण समाजों में होती है तो अग्रज स्त्रियों को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, परंतु वे पीछे नहीं हटती है। ग्रामीण औरतों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई बार उनके परिवार वालों (पति, सास–ससुर) को समझाना पड़ता है। इस प्रक्रिया में उन्हें कई बार अपना अपमान तक सहन करना पड़ता है। इस पर भी यह स्त्रियां रुकना नहीं चाहती। अपनी स्थिति में परिवर्तन चाहती हैं। उषाकिरण खान ने अपनी उपन्यास पानी पर लकीर में इस स्थिति का उचित चित्रण किया है।

'लाखों भैया, छोटकी भौजी, मोनी मैया की दुल्हन स्कूल पास है उन्हें क्यों नहीं साक्षरता मिशन में लगाते? – सोनी के कहने से चौंक गया लाखों'[4]।

आशा बाराखडी विधाता बाँचे :–

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक बहुत बड़ा सवाल यह पैदा हुआ कि राष्ट्र को कैसे उन्नत बनाया जाए। राष्ट्र की उन्नति वहां की साक्षर जनता पर निर्भर करती है। हमारे राजनेताओं और समाज सेवकों ने यह निश्चय किया कि भारतीय जनता को साक्षर बनाया जाए। संपूर्ण भारत को साक्षर बनाने में सबसे अधिक कठिनाई स्त्रियों को साक्षर बनाने में आई, क्योंकि स्त्रियां घर से बाहर नहीं निकलती थी। भारतीय परंपरा उन्हें घर से बाहर नहीं निकलने देती थी। यहां पर जरूरी हो गया कि समाज की सोच में बदलाव किया जाए। जैसे–तैसे लड़कियों को स्कूल जाने के लिए मना लिया गया, परंतु ग्रामीण प्रवेश की स्त्रियों को पढ़ाना–लिखाना मुश्किल हो गया। इसके लिए सरकार ने कुछ शिक्षा अभियानों को लागू किया और उनका प्रचार प्रसार किया। ऐसा ही एक अभियान है प्रौढ़ शिक्षा अभियान। इस अभियान में प्रौढ़ स्त्रियों और उन स्त्रियों को पढ़ाया जाता है, जो घर से बाहर नहीं निकलती है। इन्हें पढ़ाने वाले गांव–गांव घर–घर जाकर पढ़ाते थे। इस अभियान में मुख्यतः स्त्रियां ही होती थी। प्रौढ़ शिक्षा अभियान से समाज में बहुत भारी परिवर्तन हुआ। इसके चलते आज वर्तमान समय में हर व्यक्ति साक्षर है। लोगों के विचारों में सकारात्मक परिवर्तन आया है। इसी प्रौढ़ शिक्षा की चर्चा उषा किरण खान ने अपने उपन्यास आशा बारह खड़ी विधाता बाँचे में की है।

'हां दो औरतें सहरा गांव की बुढ़ियों को पढ़ाने घूम रही थी'[5]।

पुराने समय में औरत साक्षर नहीं थी। पुरुष उन्हें जैसा रखता था, वैसे ही वह रहे लेती थी। न्याय अन्याय

सर झुका कर सह लेती थी। पुरुषों के अत्याचार सह लेती। समय के साथ समाज में परिवर्तन आया है। स्त्री की सोच में भी परिवर्तन आया है। वह अपनी अस्मिता अपने आत्म सम्मान को बचाने के लिए, खुद के दम पर लड़ना चाहती है। वह अब अबला नहीं सबला बनना चाहती है। इसी तथ्य का चित्रण उषा किरण खान ने अपनी उपन्यास में किया है :–

'नानी खांसी स्मार्ट है, जांबाज़ भी। क्या ताल ठोक कर लड़ी दामाद और उसके भाई से। नाना को एक ही डांट में ठंडा कर दिया था'[6]।

सीमांत कथा :–

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार का बहुत बोलबाला है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जहां पर भ्रष्टाचार नहीं होता है। चाहे वह राजनीतिक, धार्मिक या शिक्षा का क्षेत्र हो। चारों और भ्रष्टाचार व्याप्त है। पहले स्कूल और कॉलेजों को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। आजकल स्कूल और कॉलेज मात्र धन अर्जन के साधन मात्र है। महंगे प्राइवेट स्कूलों में अभिभावकों को बुरी तरह लूटा जाता है, जो अभिभावक गरीब है। वह अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में भेजते हैं। इस उम्मीद के साथ कि वहां उनके नैनिहालों को अच्छी शिक्षा मिलेगी। सरकारी स्कूल में न के बराबर पढ़ाई होती है। ऐसा नहीं है कि वहां पर योग्य शिक्षक नहीं है। सरकारी स्कूल के शिक्षक बहुत योग्य होते हैं, मगर पढ़ाते नहीं है, क्योंकि उन्हें तो वेतन समय पर मिल जाता है। ज्यादातर सरकारी स्कूल में विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूल में शिक्षक समय पर नहीं आते। बच्चों को पढ़ाते नहीं है। खाने–पीने का सामान वगैराह तक बच्चों से मुफ्त में मंगवा लेते हैं, अगर ऐसे माहौल में कोई अच्छा शिक्षक स्कूल में आ जाता है। वह बच्चों को पढ़ाना चाहता है, तो पुराने आराम पसंद शिक्षक उसका टिकना मुश्किल कर देते हैं। जल्दी ही उसका तबादला दूसरी जगह करवा देते हैं। शिक्षा में हो रहे इसी भ्रष्टाचार को उषा किरण खान ने अपने उपन्यास सीमांत कथा में चित्रित किया है।

'सरिता बहनजी पर देवी मास्साब के कोप को देख रहे थे मंगल बाबू'[7]।

रामायण महाभारत का काल हो, अंग्रेजों की गुलामी का काल या स्वतंत्रता के पश्चात का काल हर समय में गरीब मजदूर वर्ग की दुर्गति हुई है। उसने हमेशा शोषण की झेला है। उसे उतना ही दिया जाता है, जिससे उसका पेट भर सके और उसका शरीर मात्र चल सके। कितने काल आए और गए मजदूर वर्ग मजबूर ही रहा। साहित्यकार हो, समाज सेवक या राजनेता उन्होंने मजदूर की दशा को सुधारने का बीड़ा तो उठाया। बड़े–बड़े वादे किए, परंतु हुआ कुछ नहीं। मजदूर मजबूरी ही रहा। लेकिन हर किसी की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। अब मजदूर भी जाग रहा है। तत्कालीन समाज में आए दिन मिलो में हो रही हड़ताल अन्य कार्यालयों में हड़ताल तथा मजदूरों द्वारा आए दिन की गई तोड़फोड़ इस बात का प्रतीक है, कि मजदूर और मजबूर नहीं बनेगा, अगर उसे उसका हक नहीं दिया गया तो वह उसे छीन लेगा। इसी तथ्य का चित्रण उषाकिरण खान ने अपनी उपन्यास सीमांत कथा में किया है।

''मैंने देखा है कि गरीब मजदूर का संगठन इतना प्रभावी हो जाता है, जिससे हत्यारों की नींद हराम हो जाती है''[8]।

अगनहिंडोला कथा शेरशाह की :–

वर्तमान काल हो या मुगल काल भारतीय समाज में जनता का किसी न किसी तरह शोषण हुआ ही है।

वर्तमान समय में जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा और मुगल काल में मुगलों के आधिपत्य के कारण। मुगलों ने भारत में खूब लूटपाट मचाई। इस पर भी जब उनका पेट नहीं भरा तो उन्होंने विविध–विविध प्रकार के कर जनता पर थोप दिए। ऐसा ही एक कर था जजिया। यह एक ऐसा कर था जो उन हिंदुओं पर लगाया जाता था जो इस्लामिक इलाकों में रह रहे थे। अगर गैर मुस्लिम लोग इस्लामिक इलाके में रहते हुए अपने धर्म का पालन करना चाहते हैं, तो उन्हें जजिया कर देना पड़ता था। उषाकिरण खान ने अगन हिंडोला उपन्यास में जजिया के बारे में बताया है। कई सूबे में जजिया के कारण भी गरीब लोग घर से नहीं निकल पाते। जिनके पास उतने धन हो वही, तो निकले तीरथ पर। – दूसरे ने कहा'[9]।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार कहा जा सकता है कि उषा किरण खान ने न सिर्फ वर्तमान समाज का बल्कि प्राचीन भारत के समाज का भी उत्तम चित्र अपने उपन्यासों में किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में गरीब मजदूर वर्ग का चित्रण और उनके मन में जागृत आक्रोश का भी वर्णन किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत को उन्नत बनाने के लिए चलाए गए अभियानों का वर्णन किया है। दिन–प्रतिदिन स्त्रियों की सोच में आ रहे बदलाव को दर्शाया है। बेरोजगारी की समस्या, वैवाहिक समस्या, राजनीतिक समस्या का भी उचित वर्णन किया है। उन्होंने न सिर्फ समाज का वर्णन किया है बल्कि समाज में हो रहे बदलाव का भी वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका एक उन्नत और उत्तम समाज का निर्माण करना चाहती है।

संदर्भ सूची :-

1. डॉ० चंद्रशेखर पांडे – समाजशास्त्र की अवधारणा – अंजनी कुमार मिश्र, मिश्रा ट्रेडिंग कारपोरेशन वाराणसी 2010 – पृष्ठ संख्या 26
2. डॉ० सुरेश गायकवाड – जैनेंद्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएं – साहित्य रत्नाकर कानपुर 1987 – पृष्ठ संख्या 16
3. उषाकिरण खान – पानी पर लकीर – अनन्य प्रकाशन, दिल्ली 2022 – पृष्ठ संख्या 16
4. उषाकिरण खान – पानी पर लकीर – अनन्य प्रकाशन 2022– पृष्ठ संख्या 58
5. उषाकिरण खान – आशा बारहखड़ी विधाता बाँचे – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2023 – पृष्ठ संख्या 83
6. उषाकिरण खान – आशा बारहखड़ी विधाता बांचे – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2023 – पृष्ठ संख्या 57
7. उषाकिरण खान – सीमांत कथा – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2020 – पृष्ठ संख्या 15
8. उषाकिरण खान – सीमांत कथा– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2020 – पृष्ठ संख्या 169
9. उषाकिरण खान – अगनहिंडोला कथा शेरशाह की – वाणी प्रकाशन 2015 – पृष्ठ संख्या 83

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 128-130

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संस्कृत में काव्य शरीर और आत्मा – एक विवेचन

डॉ. प्रियंका खण्डेलवाल

सहायक आचार्य, संस्कृत, केशव महा. अटरू जिला–बारां।

आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ में भाब्द नामक ज्योति का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा है कि ये तीनों लोक गाढ अन्धकार में डूब जाते यदि शब्द नामक ज्योति का इस संसार में प्रकाश न होता।

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते।।[1]

इसी सन्दर्भ में आचार्य दण्डी ने इष्टार्थ को व्यक्त करने वाली पदावली को काव्य का शरीर कहा–

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली।।[2]

दण्डी ने उस पदावली का पूर्णतः निर्दोष होना अनिवार्य माना है क्योंकि जैसे श्वेत कुष्ठ के एक दाग से ही सुन्दर शरीर भी कुरूप हो जाता है उसी प्रकार एक दोष के स्पर्श से भी काव्य अग्राह्य हो जाता है।

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथनञ्चन।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम्।।[3]

आचार्य जयदेव निर्दोष लक्षणों से युक्त, रीतियों व गुणों से भूषित, अलंकारों, वृत्तियों तथा शब्द शक्तियों से युक्त वाक् (शब्द) को काव्य कहते हैं–

निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूशणा।
सांलकाररसानेकवृत्तिर्वाक्काव्यनामभाक्।।[4]

पण्डितराज भी रमणीयार्थ को प्रतिपादित करने वाले शब्द को काव्य कहते है–

रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।[5]

अलंकार शास्त्र के प्रथम आचार्य भामह ने शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् कहकर शब्द अर्थ के साहित्य सहितयोः भावः साहित्यं को ही काव्य कहा।[6]

रीति सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य वामन के अनुसार गुण और अलंकारों से संस्कृत (परिष्कृत) शब्द–अर्थ ही काव्य है– काव्यशब्दोश्यं गुणालंकारसंस्कृतयोः शब्दार्थयोः वर्तते।[7]

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के पोषक राजानक कुन्तक ने वक्र कवि व्यापारशाली, बन्ध में व्यवस्थित, काव्य मर्मज्ञों के लिए आह्लादकारी शब्द–अर्थ को काव्य कहा–

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यम् तद्विदाह्लादकारिणि।।[8]

मम्मटाचार्य भी दोषों से रहित, गुणों से युक्त तथा कहीं स्फुट अलंकारों से युक्त शब्दार्थ को ही काव्य कहते है।

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।[9]

राजशेखर का मानना है कि गुणवान् तथा अलंकारयुक्त वाक्य ही काव्य है।

गुणवदलंकृतञ्च वाक्यमेव काव्यम्।[10]

आनन्दवर्धनाचार्य ने अपने ग्रन्थ में सहृदयों के आह्लादक शब्दार्थ को काव्य कहा जाता है।

सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थमयत्वमेव काव्यलक्षणम्।[11]

इन काव्य शास्त्रियों के अतिरिक्त कवि कुलगुरू कालिदास ने भी अपने प्रथम महाकाव्य में शब्दार्थ रूपी काव्य की सिद्धि के लिए जगत् के माता पिता पार्वती–परमेश्वर को नमस्कार करते हुए शब्दार्थ को साहित्य बताया है–

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।[12]

काव्यात्मा :– काव्यशास्त्र में सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि काव्य का आत्मभूत तत्त्व क्या है, जिसके अभाव में काव्य को काव्य नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार शरीर में आत्मा प्रमुख तत्त्व होता है, क्योंकि आत्मा के बिना शरीर की कोई गतिविधि नहीं होती, शरीर का अस्तित्व नहीं रहता तथा शरीर के सम्पूर्ण आकर्षण के समान काव्य में भी एक ऐसा तत्त्व है, जो आत्म–संज्ञा को प्राप्त करता है। वहीं सौन्दर्य, आकर्षण और आह्लादकत्व का कारण होता है। काव्य शास्त्र के प्रारम्भिक युग से ही आचार्य उस आत्मतत्त्व की खोज करते रहे, परन्तु जिस प्रकार नदी के प्रवाह के समान शास्त्र का प्रवाह भी प्रारम्भ में छोटा होता है, बढ़ते–बढ़ते वह विशाल बन जाता है, ऐसे शास्त्र लोकादर के भाजन होते है।[13]

ठीक इसी तरह काव्यात्मा की खोज करते करते आचार्य विभिन्न परिणामों पर पहुँचे। किसी ने रस को, किसी ने अलंकार को, किसी ने रीति को, किसी ने ध्वनि को, किसी ने वक्रोक्ति को, किसी ने औचित्य को काव्य की आत्मा माना। लम्बी चर्चा–परिचर्चा के बाद जिस आचार्य ने, जिस तत्त्व में सौन्दर्य का आकर्षण अनुभव किया, उसी को काव्य की आत्मा माना और इसी आधार पर सम्प्रदाय बनते गए।

कतिपय आचार्यों ने काव्य में सबसे प्रमुख तत्त्व रस को माना। काव्य का प्रमुख उद्देश्य रस का संचार करना है, जिसका आस्वादन करके सहृदयजन आह्लाद का अनुभव करते हैं। इस दशा में काव्य की आत्मा रस है। कुछ आचार्यों का मानना है कि काव्य का प्रमुखतम आकर्षक एवं सहृदयाह्लादक तत्त्व अंलकार है। काव्य का शरीर शब्द और अर्थ है उनको सुशोभित करने वाले अंलकार ही काव्य की आत्मा है। जबकि कुछ ने प्रतिपादित किया कि काव्य का सौन्दर्य पदों की संघटना के कारण होता है। पदों की संघटना को रीति नाम दिया है। यह रीति ही काव्य की आत्मा है।

अन्य ने वैचित्र्य से युक्त उक्ति को वक्रोक्ति कहा और यह वक्रोक्ति ही काव्य की आत्मा है। अन्य आचार्यों ने औचित्य को काव्य की आत्मा कहा। जबकि अन्य आचार्यो ने माना कि काव्य में सौन्दर्य व्यंग्य अर्थ के कारण होता है। काव्य में व्यंग्य अर्थ के मुख्य होने पर वह ध्वनि काव्य कहलाता है, वहाँ ध्वनि को ही काव्य की आत्मा माना गया है।

सन्दर्भ :–

1. काव्यादर्श, 1/4
2. काव्यादर्श, 1/10
3. काव्यादर्श, 1/7
4. चन्द्रालोक, 1/7
5. रसगंगाधर, प्रथमानन
6. काव्यालंकार, 1/16
7. काव्यालंकारसूत्र, 1/1/1
8. वक्रोक्तिजीवित, 1/7
9. काव्यप्रका ा, 1/4
10. काव्यमीमांसा, शष्ठ अध्याय
11. ध्वन्यालोक, प्रथम उद्योत
12. रघुवंश, 1/1
13. काव्यमीमांसा, द्वितीय अध्याय,पृ. 11

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 131-132

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Patriotism in English Literature

Dr. Vinita Pal

Assistant Prof. at GorakshnathGovt.SanskritCollege Nahan.

Abstract :-

Literature is the foundation of life.It enhances person's writing skills. Literature allows a person to step back in time and learn about life on Earth from the ones who walked before us. We can gather a better understanding of culture and have a greater appreciation of them. This study discusses the feelingof patriotism in English literature and uncover different poetic moods by using various words, expressions, allusions, proverbs, landscapes. Present paper is an effort to show how learning English literature opens up a world of inspiration and creativity, it will also discuss how this developing skills are essential for today's global environment. The base of the study will be secondary data.

Key Words :-

Literature, English, learning, culture, creativity.

Literature aims to flourish truth and beauty which resonate the elegance of delight and blow the breezes of spiritual well being in human thought.We learn through the ways history is recorded, in the forms of manuscripts and through speech itself. Reading and being given the keys to the literature world prepare individuals from an early age to discover the true importance of literature: being able to comprehend and understand situations from many perspectives.Patriotism is the feeling of love, devotion, and sense of attachment to one's country. This attachment can be a combination of many different feelings, language relating to one's own homeland, including ethnic, cultural, political or historical aspects.

It places an emphasis on many topics from human tragedies to tales of the ever-popular search for love. While it is physically written in words, these words come alive in the imagination of the mind, and its ability to comprehend the complexity or simplicity of the text. Literature enables people to see through the lenses of others, and sometimes even in animate objects; therefore, it becomes a looking glass into the world as others view it. It is a journey that is inscribed in pages and powered by the imagination of the reader.

I love to study English literature because I believe there is power in stories. Literature is both intensely personal as well as a communal experience.I love it for its variety its complexity ,simplicity, universality and its amazingly enduring appeal in all the different genres-poetry, drama, prose.

The originality, the creativity, and the individuality reflected in works of literature of writers from every corner of the world are the factors that interest me to study English. Everyone has something that stirs their passion. Something that sparks an interest so deep seated that to not pursue it would be unthinkable.

English Literature studies give an opportunity to Love has always been prevalent in literature. For some, feelings of exhilaration or saddening heartache can only be expressed through paper and pendiscover how literature makes sense of the world through stories, poems, novels and plays

For stance, a novel about a treacherous war, written from the perspective of a soldier, allows the reader to envision their memories, their pain, and their emotions without actually being that person. Consequently, literature can act as a time machine, enabling individuals to go into a specific time period of the story, into the mind and soul of the protagonist.With the ability to see the world with a pair of fresh eyes, it triggers the reader to reflect upon their own lives. Reading material that is relatable to the reader may teach them morals and encourage them to practice good judgment. so the reader does not find themselves in the same circumstances as perhaps those in the fiction world. Henceforth, literature is proven to not only be reflective of life, but it can also be used as a guide for the reader to follow and practice good judgment.

Email Id : dr.vinitapal12@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 133-138

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हरिशंकर परसाई के निबंधों का स्वरूप

विजय लक्ष्मी

(शोध छात्रा) हिंदी विभाग, जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर।

आचार्य शुक्ल का कथन है कि "यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है" आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की यह दृष्टि अत्यंत यथार्थ है। भाषा की शक्ति का विकास निबंधों में ही संभव है। निबंधों से ही भाषा की शिथिलता एवं अयोग्यता दूर होती है। निबंधों में विषयों की अनेकरुपता के कारण शब्दों में पारिभाषिक श्रेष्ठता एवं अर्थगत सूक्ष्मता के साथ शब्दकोष की वृद्धि भी होती है। जिस भाषा में निबंध की जितनी विभिन्नता एवं विविधता होगी, उसकी क्षमता उतनी ही श्रेष्ठ होगी। गद्य की विभिन्न शैलियों का समुचित विकास निबंधों में संभव है। लेखक की व्यक्तिगत शैली का चर्मोत्कर्ष निबंध में सबसे अधिक होता है। इस विषय पर कृष्णदेव झारी कहते हैं कि "चिंतन–मनन से युक्त समाज के तत्व, जीवन की ठोस समस्याओं का हल सबसे अधिक निबंध में ही संभव है। निबंध साहित्य ही किसी जाति के मस्तिष्क का कोष होता है। निबंध में विचार–तत्व सर्वाधिक रहता है। संसार की किसी भाषा के साहित्य को ले लीजिए, उसकी उच्चता, प्रौढ़ता और श्रेष्ठता का आधार उसका प्रौढ़ निबंध साहित्य ही बनता है।'' इस साहित्य विधा का सूत्रपात भारतेंदु हरिश्चंद्र से यानी भारतेंदु युग से माना जाता है।

आधुनिक युग में जैसे ही औद्योगिक क्रांति हुई साहित्य लेखकों ने भी विभिन्न क्षेत्रों में लेखन कार्य किये। ऐसी कई कठिनाइयाँ सामने आयीं, जिन्हें कविता में पूरी शक्ति के साथ कह पाना संभव नहीं था। ऐसे में 'निबंध' साहित्य की सर्वाधिक उपयोगी विधा बन गयी। हिंदी के वरिष्ठ आलोचक रमेश कुंतल मेघ कहते हैं कि ''निबंध एक कवि की ऐसी रचना है जो गद्य का प्रयोग करती है। लेख एक तार्किक की रचना है जो साहित्य गद्य अथवा विषय का उपयोग करती हैं। निबंध अंतर्मुखी और लेख बहिर्मुखी, निबंध है। लीला–विस्तारक और लेख विचार–शोधक, निबंध वैयक्तिक भाव–तरंगों के ज्वार–भाटों में उठने वाले साहचर्यों का कौतूहल पूर्ण विपुल लोक और लेख, चिंतन की कसौटी पर कसे हुए कुछ विचारों का सुसंगठित और बौद्धिक मूल्य है।''

निबंध के बारे में कहा गया है कि इसके आकार–प्रकार में कोई निश्चितता का बंधन नहीं होता है। कोई इसे उन्मुक्त मन की मौज कहता है फिर भी इतना तो कह सकते हैं कि निबंध लघु आकार की सुव्यवस्थित रचना होती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल निबन्ध के बारे में लिखते हैं कि ''आधुनिक लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषताएँ हों। बात तो ठीक है, यदि ठीक तरह से समझी जाये। व्यक्तिगत विशेषता का यह मतलब नहीं है कि उसके दर्शन के लिए विचारों की श्रृंखला रखी ही ना जाए, या जानबूझकर जगह–जगह से तोड़ दी जाए।'' कथन की भाषा में जिस दृष्टि को मुख्यतः रखा गया है उसका

आधार 'चिंतामणि' निबंध है, जो विचार–प्रधान एवं समरसतावादी भाव को समाहित किये हुए है।

हरिशंकर परसाई के निबंध मुख्यतः आत्मपरक रहे हैं। उनकी पहली निबंध कृति 'भूत के पाँव पीछे' है जो 1954 ईसवी में प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह में कुल 21 निबंध हैं। इसकी भूमिका में परसाई जी लिखते हैं कि इन निबंधों का स्वरुप मुख्यतः आत्मपरक है। परसाई जी सामान्यतः किसी शास्त्रीय परिपाटी या बने हुए परंपरागत रास्ते पर न चलकर स्वयं की परिपाटी बनाकर निबंधों को लिखते हैं लेकिन आलोचक उन्हें किसी न किसी साँचे में जरुर रख देते हैं। इस विषय में परसाई जी ने इसी संकलन में तीक्ष्ण टिप्पणी की है। निबंधो में शास्त्रीय नियमों का जो रुप प्रचलन में है परसाई जी उसका पालन नहीं करते और न ही उनके लिये ऐसा कर पाना संभव था क्योंकि वे किसी विशेष विधा एवं उसमें भी कोई विशेष रुप को केंद्र में नहीं रखते हैं। यही वजह है कि वे पुराने ढर्रों पर चलना पसंद नहीं करते। इस संदर्भ में परसाई जी की टिप्पणी उल्लेखनीय है– ''अंग्रेजी में पर्सनल 'एस्से' होता है। हिंदी में ऐसे निबंधों को आत्मपरक निबंध कहकर काम निकाला जा रहा है, पर मेरे यह निबंध मेरी आत्म की परिक्रमा नहीं करते, मेरी आत्मा में न मंदिर है, ना प्रभु–प्रतिमा! कुछ ने इन्हें 'ललित निबंध' कहा, तब दूसरों ने रोका कि यह बुर्जुआ नाम है, कुछ ने इसे हास्य निबंध कहकर छुट्टी पायी।'' परसाई जी इन व्यर्थ के विवादों से भली–भाँति परिचित थे, अतः वे अपने निबंधों के बारे में लिखते हैं कि ''यह निबंध बिलकुल नए नहीं हैं। हिंदी में निबंध की अत्यंत समृद्ध परंपरा है, कहानी से भी पुरानी।'' निश्चित रुप से यह निबंध संग्रह (भूत के पाँव पीछे) भी उसी परंपरा का अगला रुप है।

परसाई जी के निबंध उनके रचनावाली के खंड–3 और 4 में संग्रहित हैं। इनका प्रकाशन वर्ष 1985 ईसवी है। अतः रचनावली के अतिरिक्त भी उनके दो निबंध संग्रह 'एक ऐसा भी सोचा जाता है' (1993 ईसवी) हम एक उम्र से वाकिफ़ हैं (1994 ईसवी) प्रकाशित हुए हैं। आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी 'हरिशंकर परसाई' के साहित्य के संदर्भ में लिखते हैं कि ''हमारा विचार है कि भारत के राजनीतिक और सामाजिक स्थिति के विविध रूपों को समझने के लिए समाजशास्त्रीय किताबों को पढ़ने से इतनी जानकारी नहीं प्राप्त होती जितनी परसाई की रचनाओं को पढ़ने से प्राप्त होती है।'' वास्तव में हरिशंकर परसाई का 'निबंध' साहित्य का प्रमाणिक दस्तावेज है, जिसे पढ़कर हम देश–दुनिया में हो घटित हो रहे घटनाओं से परिचित होते हैं। परसाई के निबंधो में आजादी के बाद के भारत का मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय लोगों के संघर्ष एवं विद्रूपताओं को दिखाने का सहज प्रयास है। परसाई ने अपने निबंधों में सामाजिक मूल्य के संवर्धन की बात को प्रमुखता दी है। उनके निबंधों को पढ़कर हम सजग ही नहीं होते अपितु वह हमें अंदर से झंकृत करके सोचने पर मजबूर कर देते हैं। परसाई जी के निबंधों का स्वरुप अलग–अलग है, जिसे हम अग्रवत देख सकते हैं।

(1) सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक निबंध :–

हरिशंकर परसाई ने अपने समय के समाज को न केवल नजदीक से देखा अपितु उसका गहन अवलोकन भी किया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं विसंगतियों को अपने व्यंग्य का विषय बनाया। पाश्चात्य देशों का दिखावापन समाज में व्याप्त था। समाज में आर्थिक रुप से सम्पन्न वर्गों के बीच जीने वाले मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग के असंतोष, घुटन, टूटन एवं कुंठा को परसाई ने अपने निबंधो में बखूबी दिखाया है। उन्होंने समाज में विकृत रुप में फैला दम्भ, पाखंड, दोगलापन, कथनी–करनी में अंतर, रूढ़ि परंपराओं, रीतिरिवाजों व स्वार्थपरता को अपने व्यंग्यात्मक निबंधों में दिखाकर समकालीन समाज का जीवंत एवं वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत

किया है।

हरिशंकर परसाई प्राचीन सभ्यता एवं संस्कारों का अंधविरोध नहीं करते हैं। मूल्य के गुणों का निर्धारण वे अपनी आंतरिक एवं बाह्य दृष्टि से करते हैं लेकिन उनका सौंदर्य बोध एवं परंपरा आचरण बोध से अलग नहीं है। उनका नायक ऐसे गुरु भक्ति को अस्वीकार करता है कि द्रोणाचार्य का एकलव्य का अंगूठा कटवा ले। ऐसे पतिव्रत्य को अस्वीकार करता है जिसमें पति के शव के साथ पत्नी को जीवित हुए दफन होना पड़ जाए। निंदा रस परसाई का एक व्यंग्यात्मक निबंध है। निंदा रस सामाजिक चरित्र है जिसका एक अभिन्न अंग पर निंदा भी है। आडंबर और दिखावापन का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति दोहरे चरित्र का होता है। उसके कथनी और करनी में अंतर होता है। सामने प्रशंसा करता है तो पीठ पीछे निंदा करता है। निंदा रस निबंध में परसाई ने लिखा है– ''निंदा का उद्‌गम कमजोरी एवं हीनता से होता है। व्यक्ति अपने हीनता से दबता है। वह दूसरे की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वह सब निकृष्ट हैं और उनसे अच्छा है। ज्यों–ज्यों कर्महीन होता जाता है त्यों–त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है।''

व्यक्ति दूसरों की निंदा करके उसका चरित्र भ्रष्ट करने में जितना रस लेता है उसका यथार्थ रूप से चित्रण इस निबंध में किया गया है। निंदकों के समान एकाग्रता भक्तों में भी नहीं मिलती है। 'ग्रीटिंग कार्ड एवं राशन कार्ड' निबंध भी मध्यवर्गीय पीड़ा पर आधारित है जिसे दुआ से ज्यादा दवा की आवश्यकता है। 'प्रेम की बिरादरी' निबंध में जातिवाद पर तीखा व्यंग किया गया है। इस निबंध में जातिवाद को एक सामाजिक कलंक बताया गया है। परसाई के निबंध 'बैरंग शुभकामना और जनतंत्र' में दिखाया गया है कि गरीबी में जी रहे लोगों के शुभकामना भी निराश अर्थात् बेरंग होती है। आज का व्यक्ति स्वार्थी हो गया है, वह ईश्वर को भी नहीं डरता। पहले व्यक्ति ईश्वर से डरकर गलत कार्य नहीं करता था परंतु आज वह न ईश्वर से डरता है और न ही कानून से डरता है। आज समाज को बुरा ही चलाने का प्रयास करता है। वह समाज में प्रतिष्ठित हो चुका है। परसाई के ही निबंध का एक उदाहरण द्रष्टव्य है– ''इस देश में सट्‌टा बिजनेस लाइन में सम्मिलित हो गया है। मंथन करके लक्ष्मी को निकालने के लिए दानवों को देवों का सहयोग अब नहीं चाहिए। पहले समुद्र मंथन के समय तो उन्हें टेक्निक नहीं पता थी इसलिए देवताओं का सहारा लिया अब कोई सहयोग नहीं चाहिए अब वह टेक्निक सीख गए हैं।''

परसाई का 'स्नान' निबंध एक ऐसे सामाजिक विसंगति बोध को उजागर करता है जो भारतीय समाज के रोजमर्रा जिंदगी को दिखाता है। 'वो जरा वाइफ है न' निबंध में उस ईमानदार व्यक्तियों पर व्यंग्य है जो दूसरों की औरतों को स्वतंत्र देखना चाहते हैं परंतु जब स्वयं की पत्नी की बात आती है तो 'वो जरा वाइफ है न' कहकर किनारा कर लेते हैं।

(2) राजनैतिक विसंगतियों पर व्यंग्य निबंध :–

हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों का सपना रहा था कि देश स्वतंत्र होकर एक समाजवादी लोकतांत्रिक देश बने। भारत आजाद हुआ। भारत का संविधान बना जो 26 जनवरी 1950 को पूरी तरह लागू भी हो गया। आजादी के नायकों ने जो नए भारत का सपना देखा था वह आजादी के बाद ठिठुरता ही गया। उनका यह सपना, सपना ही रह गया। प्रत्येक चुनाव में यह घोषणा की जाती है कि समाजवाद आएगा, पर वह अभी तक नहीं आया। वह कहाँ भटक गया है कुछ अता–पता नहीं। यह सभी को बखूबी पता है कि जो लोग समाजवाद

लाने का दावा करते हैं वही (नेतागण) उसे रुके हुए हैं। इसी पर परसाई व्यंग करते हुए लिखते हैं– ''जरा धीरज रखिए हम कोशिश में लगे हैं कि सूर्य बाहर आ जाए, पर इतने बड़े सूर्य को बाहर निकालना आसान नहीं है वक्त लगेगा। हमें सत्ता के कम से कम सौ वर्ष तो दीजिए।'' यहाँ लेखक ने समाजवाद रूपी सूर्य को उद्दीप्त करने के झूठे घोषणाओं पर तीक्ष्ण व्यंग्य किया है। आजकल राजनीति में अवसरवाद है। राजनीति में कोई किसी का सगा नहीं है। वह अवसर की तलाश में रहते हैं। जहाँ उन्हें थोड़ा सा लाभ दिखा उधर मुड़ गए। उनकी अपनी कोई विचारधारा नहीं है इसका बखूबी चित्रण परसाई ने धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे निबंध में किया है, ''जो सरकार बनाने के लिए विरोधी विचारधारा से साँठ–गाँठ कर लेते हैं। कौन कौरव और कौन पांडव। मेरे समझ में नहीं आ रहा था, देख रहा था कि जो अपने को पांडव कहते हैं वही द्रोपदी को चौराहे पर नंगा कर रहे थे और अब देख रहा हूँ कि कुछ कौरवों से भीतर मिले हैं और कुछ पांडवों से।'' इस निबंध में लेखक ने राजनीतिक धांधली का वास्तविक चित्रण किया है।

परसाई के व्यंग्य का उद्देश्य सात्विक है। वे राजनीतिक व्यंग्य निबंधों में पौराणिक कथाओं और व्यंग्यों का उल्लेख पर्याप्त मात्रा में करते हैं। पौराणिक पात्रों में रूपांतरित कर देने से मनोवांछित प्रभाव अनायास पड़ जाता है लेकिन इसके लिए व्यक्ति की गतिविधियाँ उसके अनुरूप होनी चाहिए। परसाई की विचारधारा मार्क्सवादी रही है। वे मार्क्सवाद के पक्षधर हैं। वह जितना व्यंग्य समाजवादी पार्टी और जनता पार्टी पर किए हैं उतना कांग्रेस और वामपंथियों पर नहीं करते। 'लाल बुझक्कड़' एक राजनीतिक निबंध है जिसमें जनता पार्टी की अकर्मण्यता को दिखाने का प्रयास किया है। 'महान नेता : महान चिंता' निबंध में जैसे को तैसा कहने पर जोर दिया है जिस प्रकार चोर की दाढ़ी में तिनका कहने पर चोर दाढ़ी देखने लगता है।

परसाई ने अपनी बंधुओं में राजनीति के सूक्ष्म बिन्दुओं की भी पड़ताल की है, उनके राजनीतिक निबंधों में 'प्रधानमंत्री ही जीवन है', 'राजनीति स्लो पाइजन है', 'दौड़ प्रधानमंत्री की', 'शर्म! शर्म! संस्कृति', 'राजनीतिक कुत्ते', 'राजनीतिक नौटंकी', 'नया महाभारत', 'राजनीतिक पुंगी' आदि प्रमुख है। इन निबंधों में परसाई ने राजनीति में हो रहे भ्रष्टाचार और अवसरवाद को दिखाया है। उन्होंने देश के बड़े नेताओं को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है जैसे– मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, नाना जी देशमुख, अटल बिहारी वाजपेई आदि। इनके निबंध इंदिरा गांधी के शासन काल एवं आपातकाल के प्रमुख गवाह के रूप में है। वैसे इन निबंधों में विषय को लेकर पुनरावृति जरूर हुई है। अतः निष्कर्ष रूप में कहें तो आज के अवसरवाद और भ्रष्ट राजनीति के व्यापक संदर्भ में परसाई जी के व्यंग्यात्मक निबंधों का स्वरूप जीवंत सारस्वत और कारगर सिद्ध होता है। आज के तीस–चालीस वर्ष पहले लिखे गए व्यंग्य निबंध आज भी प्रासंगिक हैं।

(3) सांस्कृतिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक निबंध :–

संस्कृति जीवन का वह मूल तत्व है जिससे मनुष्य अन्य प्राणियों से अलग है। व्यापक अर्थ में देखें तो संस्कृति व्यक्ति के सुसंगठित जीवन व्यवस्था का नाम है, जिसमें धर्म, संस्कार, शिक्षा, साहित्य, संस्कार, आचार–विचार आदि अनायास ही समाहित हो जाता है। गतिशीलता और परिवर्तनशीलता संस्कृति की पहचान होती है। समाज में बदलाव की प्रक्रिया लगातार होती रहती है। समाज और संस्कृति का रिश्ता अटूट है। समाज के बिना संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज के साथ–साथ संस्कृति में भी बदलाव होता रहता है। वर्तमान के विज्ञान एवं तकनीकी युग में मनुष्य के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में तेजी से बदलाव हो

रहा है। पुरानी और रूढ़ हो चुके विचारों का विरोध हो रहा है और नई चेतना का प्रचार–प्रसार। हमारी शिक्षा और संस्कार को विदेशों की भौतिकवादी संस्कृति ने बहुत प्रभावित किया है। यूट्यूब, सिनेमा, दूरदर्शन आदि माध्यमों ने हमारे जीवन को प्रभावित किया है। धर्मनिरपेक्ष होते हुए भी हमें विभाजनकारी शक्तियाँ पीछे धकेलने हेतु सक्रिय रहती हैं। देश, जाति, धर्म, प्रदेश, राजनीतिक स्वार्थ और भाषा आदि के नाम पर देश का वातावरण खराब होता रहा है। इन सभी अमानवीयता पर परसाई ने व्यापक प्रहार किया है।

हरिशंकर परसाई के निबंध 'सुजलां सूफलां' में दिखाया गया है कि किस तरह भारतवासी अपने पूर्व में किये गये पराक्रम को सुन और पढ़कर गर्व में चूर हुए रहते हैं। किस तरह हम दिखावेपन और झूठ पर गर्व करते हैं। वह लिखते हैं कि– ''देवता भारत में ही क्यों जन्म लेते हैं? हिमालय और गंगा–यमुना की पुण्य–धारा पर ही हमारा बहुत अभियान टिका है। कितने गर्व से हम कहते हैं– 'हमारा देश सबसे महान है। उत्तर में विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत मस्तक ताने खड़ा है।' जब कोई गर्व से ऐसा कहता है तो पूछने को मन करता है कि तुम्हारे बाप ने हिमालय को बनाया है? क्या हमारे बाप दादों ने चट्टान पर जमा कर नगाधिराज का निर्माण किया है।''

'आँगन में बैंगन' निबंध में वह घर में बनी हुई वस्तुओं पर चर्चा करते हैं। वस्तुओं से वह आगे बढ़कर व्यक्तियों पर आ जाते हैं। एक व्यक्ति के संदर्भ में वह कहते हैं कि ''उनके भगवान की कृपा से चार बेटे हैं सो घर में ही जुआ खेल लेते हैं। घर की संपत्तियों पर हमारे लोगों को बहुत घमंड होता है तभी तो अगर कोई अपनी स्त्री को पीट रहा हो और पड़ोसी उसे रोके, तो वह कैसे विश्वास से कह देता है– वह हमारी औरत है हम चाहे उसे पीटें, चाहे मार डालें, तुम्हें बीच में बोलने का क्या हक है?'' हमारी संस्कृति का यह एक कडुवा सच है। वह 'पगडंडियों का जमाना' से व्यंग्य निबंधों में एक नया मोड़ देते हैं। इस निबंध का प्रकाशन 1966 ईसवी में हुआ जो व्यंग्य विधा में मील का पत्थर साबित हुआ। भारतीय संस्कृति के ठेकेदारों के बारे में वे लिखते हैं कि ''एक स्त्री नौकरी के सिलसिले में एक बड़े आदमी के पास सच्चरित्रता का प्रमाण पत्र लेने गई थी। बड़े आदमी ने उसे अपने पहले अपने शयनकक्ष में ले जाना चाहा और बाद में सच्चरित्रता का प्रमाण पत्र देना चाहा। पहले देवता आदमी बनकर ठगते थे अब आदमी देवता बनकर ठगते हैं।''

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि सांस्कृतिक निबंधों में परसाई की कड़वी आलोचनात्मक दृष्टि देखने को मिलती है। और समाज के प्रति दायित्व का निर्वाह अपने समय के अन्य रचनाकारों की अपेक्षा अधिक किया है। इन विशेषताओं के कारण ही परसाई ने पाठकों सीधा संबंध बनाए रखने में जो सफलता हासिल किया है वह अन्य निबंधकार नही प्राप्त है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–505
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : निबंध यात्रा, डॉ० कृष्ण देव झारी, इतिहास शोध संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1984, पृष्ठ–16
3. क्योंकि समय एक शब्द है, रमेश कुंतल मेघ, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1975, पृष्ठ–329
4. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–408

5. परसाई रचनावली, खण्ड–6, पृष्ठ–234
6. वही
7. हरिशंकर परसाई, मोनोग्राफ, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृष्ठ–80
8. परसाई रचनावली, खण्ड–3, पृष्ठ–31
9. वही, पृष्ठ–59
10. वही, पृष्ठ–76
11. वही, पृष्ठ–396
12. वही, पृष्ठ–187
13. वही, पृष्ठ–189
14. वही, पृष्ठ–192

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 139-142

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Revival of National Consciousness in Yukio Mishima's " Patriotism"

Dr. Gabriela Sabatini. F
Assistant Professor, HKBK Degree College, Bangalore

Abstract :-

This Paper aims to do analysis on the realistic propaganda of the fact and the fiction and it stress upon the revival of the national consciousness in the characters of the story are presumed to represent Mishima's thoughts in the emperor, the Japanese nation and japanese women as well.

Keywords :- Seppuku (Ritual suicide), Japanese women, realism.

Introduction :-

Yuko Mishima celebrity in the Post -World War II Japan, Held strong controversial beliefs about the position of Japanese Government. He started his writing with the notion of romanticism, later on he figures out the significance of political stance, Valour of men, Patriotic feelings caters to the nationalism.

The Short story " Patriotism" is related to the real life story of the author and the political turmoil of Japanese Imperialism. The author deliberately stress upon the trial of seppuku very strongly in the narrative part. The Protagonist of the story is the author himself who committed suicide in the insurgent of uprising.

The Story implies the incident especially The February 26th 1936 was an attempted Coup D'etat in the empire of Japan. In the Wee hours of 26th February, a group of young radical Army officers led some 1400 troup under their command on a attack on the prime minister's residence and other buildings of Tokyo. They killed Home Minister, Finance Minister and the Inspector General. The Surrender of the empire of Japan in the World War II on 15th August bringing the wars hostilities to a close.

Realism :-

Historical Fact : In order to understand how fact is correlated with fiction, it is important to draw outlines of historical and social facts related with the story. In "Patriotism", the Japanese Emperor,

the 26 February Incident and the status of Japanese women are of great importance.

The 26 February Incident "Patriotism" depends on a historical fact; the military revolt took place between February 26 to 29, 1936. A group of soldiers aimed to dismiss some politicans, beginning with the Prime Minister Okada Keisuke, who were believed to be poisoning the Japanese soul. However, these soldiers did not get support from the Emperor and the Commander in Chief. After the unsuccessful revolt, some of them committed suicide and the rest were prosecuted.

Mishima's story " patriotism " the characters are his strength, he describes Takeyama and Reiko as archetypes of the purity and honour lauded in the early 20th Century. Takeyama in the form of the commander and kind officer, and Reiko as the young, innocent and caring wife. Their life includes all the joy that can be expected in this idealized vision of domesticity.

The background of political upheaval in the Japan, the rebels undertake Coup D'EAT (An attempted uprising and takeover of power in 1936 imperialist Japan, the lieutenant is hurriedly called away a fight. The perspective of the story, however who prepares at home for the possibility of her husband's death. In the early Days of the Marriage, Reiko pledged to commit suicide upon the death of her husband. When Lieutenant returns, he was caught by surprise in finding that his fellow officers are the leaders of the Coup. As an Imperial officer, he should reveal his friends as traitors of the nation and finds himself caught between loyalty to his friends and loyalty to the Country.

In the Conflict, he decides that the only honour action is to commit a ritual suicide known as Seppuku, performed by disembowelment. "A woman who had become the wife of a soldier should know and resolutely accept that her husband's death might come at any moment. It could be tomorrow. It could be the day after. But, no matter when it came - he asked -was she steadfast in her resolve to accept it? Reiko rose to her feet, pulled open a drawer of the cabinet, and took out what was the most prized of her new possessions, the dagger her mother had given her. Returning to her place, she laid the dagger without a word on silent understanding was achieved at once, and the lieutenant never again sought to test his wife's resolve"

" Well, then--- The Lieutenant's eyes opened wide, Despite his exhaustion they were strong and clear, and now for the first time they looked straight into the eyes of his wife. " To-night I shall cut my stomach"(Mishima 21)

" A warm substance flooded into her mouth, and everything before her eyes reddened , in a vision of spouting blood. She gathered her strength and plunged the point of the blade deep into her throat" (Mishima 35)

While committing seppuku shows the lieutenant's loyalty to the Emperor and proves his patriotism, his wife's following him shows that shinju, a double suicide, a famous theme in Kabuki

theater. The lieutenant dies out of loyalty to his comrades, whom he believes he will meet again in death, his wife dies out of loyalty to her husband, and both out of loyalty to the Emperor for whom they pray before death at the house altar. Death and love are one, twin faces of immortality. Romantic heroes, Ali Volkan Erdemir is not only loyal to him but also to the nation. Shinji considers their situation as a privilege:

This must be the very pinnacle of good fortune, he thought. To have every moment of his death observed by those beautiful eyes it was like being borne to death on a gentle, fragrant breeze. There was some special favor here the Imperial Household, the Nation, the Army Flag. All these, no less than the wife who sat before him, were presences observing him closely with clear and never faltering eyes." (Mishima, 1971:120)

In the end, Takeyama, his wife and friends all die for their causes. Conclusion A writer is a member of the society in which he lives. As Mishima Yukio is a member of Japanese society, it is obvious that his ideas will be found in his writings. In fact, "Patriotism" is a good example. In the story, the loyalty to the Emperor is emphasized. Similarly, Mishima's opinion about Japan's political situation during the 1960s can be seen in the 26 February Incident. In the same fashion, the lieutenant's death by committing seppuku and his wife's following him without hesitation can be considered as Mishima's idealization of the social norms in Japan. These can also be considered as a part of Japanese thought.

In short, "Patriotism" provides the reader with clues to Mishima Yukio's ideology. As he is a member of Japanese society, a Japanese person's opinions can be read through the characters. That is to say, first fact becomes fiction and then fiction gives the reader facts, this time by means of art of literature. the two eventually die in the name of the same idea, although their motivations seem somehow different. (Frentiu, 2010:71) Fact and Fiction – Japanese Social Normsin Mishima Yukio's "Patriotism."

REFERENCES :-

1. BEASLEY, W.G. (1999). The Japanese Experience, A Short History of Japan. London: The Orion. FRENTIU, Rodica (2010).
2. Yukio Mishima: Tymos Between Aesthetics and Ideological Fanatacisim. Journal for the Study of Religions and Ideologies, 9, 25.
3. FUKAYA, Masashi (1998). Ryosaikenboshugi no Kyoiku. Tokyo: Reimei. GOMI, Fumiko; TAKANO, Toshihiko; TORIUMU, Yasushi et. al. (Eds.) (1998).
4. Shosetsu Nihonshi Kenkyu. Tokyo: Yamagawa. HENSHALL, Kenneth G. (2012). A History of

Japan: From Stone Age to Superpower, 3rd. Edition, New York: Palgrave Macmillan. ISODA, Kouichi (1983).

5. Mishima Yukio. Shinchosa Arubamu: 20. Tokyo:Shinchosha. MATSUMO, Toru; SATO, Hideaki; INUOE, Takashi (2000).
6. MIshima Yukio Jiten, Tokyo:Bensei. MATSUMO, Toru (2010). Bessatsu Taiyo, Nihon no Kokoro 175, Mishima Yukio. Tokyo:Heibonsha. MISHIMA, Yukio (1971).
7., "Patriotism" in Death in Midsummer and Other Stories, translated by Geoffrey W. Sargent. Penguin. MORTON, W. Scott and OLENIK J. Kenneth (2005).
8. Japan and Its Culture and Society, Fourth Edition, New York: McGraw-Hill.

Email id: gabrielas.dg@hkbk.edu.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 143-149

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत की आज़ादी में हिंदी साहित्य का योगदान

स्मिता शंकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, एच०के०बी०के डिग्री कॉलेज नागवारा, बंगलोर–560045

सारांश :–

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक ऐतिहासिक आंदोलन जो कई दशकों तक चलता रहा, जिसमें 1857 के भारतीय विद्रोह से लेकर 1947 में भारत की आज़ादी तक के समय शामिल थे। हिंदी के महान साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, क्योंकि इसे राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और सामाजिक सुधार के विचारों को संचार करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया गया था। महान साहित्यकारों ने आम जनता को अपने उपन्यास कविताएं और नाटकों आदि के द्वारा जनता को जागृत किया। हिंदी साहित्य ने आजादी के बाद भी संविधान निर्माण में अपना योगदान दिया । इस शोध पत्र में हिंदी साहित्य के योगदान की जांच की गई है, भारत की आज़ादी आंदोलन में उसकी मदद कैसे की गई और इसने देश की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान को कैसे आकार दिया।

मूल शब्द :– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान, कहानियां, कविताएं, नाटकों सिनेमा, और आत्मकथा।

प्रस्तावना :–

हिंदी साहित्य का इतिहास मध्ययुग से शुरू हुआ और धीरे–धीरे विकसित हुआ। हालांकि, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी साहित्य ने देश की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान को आकार देने में बड़ा योगदान दिया। देश का प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन विफल रहा क्योंकि, भारत में भाषा की विविधता होने के कारण क्रांतिकारी सही ढंग से लोगों के साथ संप्रेषण नहीं कर पा रहे थे। ऐसे समय में हिंदी ने लोगों को एक दूसरे के साथ जोड़ने का काम किया। इस समय में, राष्ट्रवादी और समाजवादी विचारधारा ने इस साहित्य को अपनी वाणी बनाने के लिए उपयोग किया और इसके माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा और समर्थन मिला। हिंदी साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन को संचार करने में मदद की और लोगों को देश भक्ति के जज्बे से भर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय भावना को ऊर्जावान बनाया और लोगों में देश के प्रति गहरी भावना को जागृत किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी से जुड़ कर हिंदी साहित्यकारों ने हिंदी के विकास के लिए कलम चलाई और इसे अपना राष्ट्रीय धर्म भी समझा। हिंदी साहित्य, जो पूर्व में अपनी विकास की राह पर था, स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश की संस्कृति और भाषाओं की पहचान को बढ़ावा देने में मददगार साबित हुआ। उस दौरान,

हिंदी साहित्यकारों ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए उत्साह उत्पन्न करने वाले गानों, कविताओं, नाटकों और कहानियों जैसी विभिन्न लेखन विधियों में उत्कृष्टता प्रदर्शित की। हिंदी साहित्य ने न सिर्फ उन्नति की राह दिखाई बल्कि इसने लोगों की मानसिकता और संस्कृति को भी बदल दिया।

गांधी जी को इस बात का दुख अत्यधिक था कि भारत जैसे बड़े और महान राष्ट्र की कोई भाषा नहीं है जबकि आजाद हिंद फौज की भाषा हिंदी थी। ब्रह्म समाज के नेता रखचंद्र गुजराती भाषा– भाषी स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी,मराठी काका कालेकर ने जनमानस को जोड़ने का कार्य हिंदी में किया। गांधी जी ने कहा था –'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' और इसी गूंगेपन को दूर करने के लिए हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में प्रवृत्ति स्थापित किया। पूरे भारतवर्ष में जनमानस को जोड़ने के लिए तरह–तरह के आंदोलन चलाए गए जिसमें दक्षिण भारत की समस्या भाषा को लेकर थी, तब बापू ने अपने बड़े बेटे देवदास को 1918 एक शिक्षक बल के साथ दक्षिण भारत भेजा। गांधीजी ने कहा कि–'हमें यह कबूल कर लेना होगा कि हिंदी भाषा में पांच लक्षण मिलते हैं और यह पांच लक्षण हिंदी की होड़ करने वाली दूसरी कोई भाषा नहीं है।' गांधीजी ने पराधीन भारत में राष्ट्रभाषा के लिए 'हिंदुस्तानी' शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ था जन–जन को जोड़ने वाली भाषा।

इस शब्द को सार्थक करने में हिंदी साहित्य के महान कवि और लेखकों में मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह श्दिनकरश, नागार्जुन, महादेवी वर्मा, भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद हरिवंश राय बच्चन और विनोबा भावे जैसे कई शामिल हैं। इनके लेखन कार्यों ने समाज में जागरूकता पैदा की और भारतीय संस्कृति और भाषाओं को प्रभावित किया।

प्रेमचंद की पुस्तक 'सेवा सदन' में लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए एक बहुत सुंदर और भावपूर्ण कविता है। यह कविता एक भारतीय के भावनाओं और उनकी देशभक्ति के प्रति उनकी प्रेरणा को दर्शाती है। पंक्तियां है :–

'सोये आर्य जाति के गौरव, जननि! फेर जगाओ।
दुखड़ा पराधीनता रूपी बेड़ी काट बहाओ।
दयामयि भारत को अपनाओ।'

इसके साथ ही हिंदी साहित्यकारों ने देश के विकास और समृद्धि के लिए नई विचारधारा को प्रोत्साहित कर देश की समस्याओं को उजागर करने में अपने साहित्य का उपयोग द्वारा लोगों को राष्ट्रीय एकता और सामूहिक विकास के लिए जागृत करने लगे। अपने अनुभवों, विचारों और भावों को अपनी रचनाओं के माध्यम से देशवासियों में आजादी दिलाने का जोश और जुनून भरने के साथ ब्रिटिश शासन की अन्यायों को उजागर करते थे। इन लेखों ने न केवल मनोरंजन किया बल्कि लोगों को शिक्षित और प्रेरित करने में भी मदद की। कुछ प्रमुख लेखकों और कवियों में शामिल हैं :–

1. कविताओं का योगदान

रविंद्रनाथ टैगोर :–

भारतीय राष्ट्रगान के रचयिता और साहित्यिक के सभी विधाओं में अपना सर्वश्रेष्ठ देने वाले एशिया के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर का आजादी की लड़ाई में अहम योगदान रहा है। उन्होंने

अपनी कविताओं और रचनाओं के जरिए देश के युवाओं में देश प्रेम की भावना जागृत किया। उनकी कविता 'जन गण मन' भारत का राष्ट्रगीत बन गई। जिसे सुनकर, गाकर देशवासियों का देश प्रेम जज्बा कई गुना बढ़ जाता था।

बंकिम चंद्र चटर्जी :–

राष्ट्रगीत के रचयिता और बंगाल के लोकप्रिय उपन्यासकार बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। 1874 में इनका लिखा देश प्रेम से ओत–प्रोत गीत वंदे मातरम् भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों का प्रेरणा स्रोत और मुख्य उद्घोष बन गया था। गीत ने देश के लोगों की रगों में उबाल ला दिया था। देश प्रेम से ओत–प्रोत 'वंदे मातरम्' गीत :–

'वंदे मातरम्!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम्! वंदे मातरम्!

श्यामलाल गुप्त पार्षद :–

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, पत्रकार और समाजसेवी ने अपनी लेखनी के जरिए आजादी की लड़ाई में अहम भूमिका निभाई थी। उनके द्वारा लिखा गया गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' ने आजादी के मतवालों में जोश भरने का काम किया था।

मोहम्मद इकबाल :–

ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ मुस्लिम समाज को जगाया और क्रांति के लिए प्रेरणा दी। इनका गीत 'सारे जहां से अच्छा हिदुस्तां हमारा' ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे युवाओं में आवेश भर दिया था।

मैथिलीशरण गुप्त :–

गुप्त ने अपनी रचनाओं के जरिए आजादी के मतवालों में उमंग भरने का काम किया था। उन्होंने राष्ट्रीयता का प्रचार–प्रसार कर भारत के रणबांकुरों को स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हुए बहुत सरल शब्दों में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र :–

जहां देश में अनेक मोर्चों पर लोग आजादी के लिए संघर्षरत थे। वही हरिश्चंद्र ने साहित्य के माध्यम से बड़े साहित्यकारों को इस दिशा में एकजुट किया था। इनके द्वारा रचित भारत दर्शन देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत थी। अपने नाटकों द्वारा अंग्रेजों और उनके द्वारा भारतीय पर किए जा रहे जुलम का जमकर विरोध किया। उन्होंने 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक व्यंग्य के जरिए राजाओं की निरंकुशता और ब्रिटिश सरकार के जुल्मों का सटीक वर्णन किया था।

सुभद्रा कुमारी चौहान :–

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता ने अंग्रेजों को ललकारने का काम किया :–

'बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।'

राम प्रसाद बिस्मिल की यह पंक्तियां लोगों के लहू में उबाल लाने के लिए काफी था।

'सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाजु–ए–कातिल में है।'

इसी प्रकार 'घायल हिंदुस्तान' कविता में कविवर हरिवंश राय बच्चन जी ने देश प्रेम को दिखलाते हुए लिखा है,

'आंधी के पहले देखा है,
कभी प्रकृति का निश्चल चेहरा?
इस निश्चलता के अंदर से
ही भीषण तूफान उठेगा।
मुझको है विश्वास किसी दिन
घायल हिंदुस्तान उठेगा।'

2. नाटकों का योगदान :–

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिंदी नाटकों का युग माना जाता है। इनमें 'अंधेर नगरी', 'भारत दुर्दशा' का उल्लेख आवश्यक है। देश के नाटककारो ने रंगमंच नुक्कड़ नाटकों द्वारा जनता में देशभक्ति की भावना और जागरूकता को जागृत किया। इस समय, अंग्रेज़ी सरकार के खिलाफ प्रोटेस्ट और आंदोलन करने का काफी खतरा था, इसलिए लोगों को सीधे तौर पर सरकार के खिलाफ बोलना मुश्किल था। तब नाटक और नाटकार प्रभावशाली साधन बन गए, जिससे लोग अपनी राय और दर्द का व्यक्त करते थे। संग्राम से जुड़े विभिन्न विषयों जैसे–नाटकों में क्रांति के सिद्धांतों अहिंसा, सत्याग्रह, आंदोलन, गिरावट, इत्यादि पर काम किया गया। लोगों को जागरूक बनाना, उनका नेतृत्व किया गया। अपने नाटकों में लोगों को विविध विषयों पर सोचने और चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया। वे लोग स्वतंत्रता संग्राम के समस्याओं पर विचार करने, लोगों के मनोभाव और जनसाधारण के बीच संवाद को बढ़ाने, विभिन्न वर्गों को जोड़ने और लोगों से स्वतंत्रता की दिशा में काम करने का काम किया। ये नाटक समाज के हर वर्ग, को एक साथ लाने और उन्हें इकट्ठा करते,जो आज़ादी के सपने को साकार करने के लिए लड़ रहे थे।इसके अलावा भी बहुत से नाटककारों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपनी कला के माध्यम से उनकी कहानियों और उपन्यासों ने उस समय की सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को उजागर किया। 'युगे युगे क्रांति' नाटक में पात्र विमल कहता है कि– 'मैं तुम्हारे साहस की प्रशंसा करता हूं शारदा तुम जैसे नारियों पर इस देश की स्वतंत्रता निर्भर करती है। गांधी जी ने यही कहा है कि धर्म नारियों के हाथ में है।' हम देखते हैं कि नारियों का भी स्वतंत्र आंदोलन में योगदान रहा है।

3. उपन्यासों का योगदान :–

प्रेमचंद :– उनकी कहानियों और उपन्यासों ने उस समय की सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को उजागर कर लोगों से स्वतंत्रता की दिशा में काम करने का आग्रह किया।

बंकिम चंद्र चटर्जी :– उनका उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) कई स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। पुस्तक का प्रसिद्ध गीत 'वंदे मातरम्' भारत का राष्ट्रीय गीत बन गया।

मुंशी प्रेमचंद्र ने अपनी कृतियों के माध्यम से देश के लोगों को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ उनकी 'रंगभूमि'

और 'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से जागृत किया। देश की जनता में ऐसा जन–जागरण का अलख जगाया कि वह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हुंकार भरने लगी। अपनी पुस्तक 'रंगभूमि' में उन्होंने लिखा– 'स्वतंत्रता तो देशभक्तों का अधिकार है। अब हम सबको एकजुट होकर इसे अपने अंदर समझना होगा।'

कर्मभूमि में उन्होंने ऐसे ही बातें लिखी– 'अगर हम अपनी स्वतंत्रता के लिए नहीं लड़ते, तो हम उसे कभी नहीं पाएंगे।'

4. समाचार पत्र का योगदान

भारत की आज़ादी में कुछ समाचार पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी कुछ प्रमुख समाचार पत्र हैं :–

अमृत बाजार पत्रिका :– 1868 में समय का प्रमुख समाचार पत्र था। इसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की खबरें और नेताओं के विचारों को प्रकाशित किया था।

स्टेट्समैन :– 1875 में भारत की आज़ादी में इस पत्र का भी काफी योगदान था।

हिंदुस्तान टाइम्स :– 1924 में इसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की खबरें और उसमें शामिल नेताओं की तस्वीरें शामिल की थी।

इंडियन एक्सप्रेस :– 1932 इसने भारत की आज़ादी से जुड़े अहम हादसे की खबरें प्रकाशित की थी।

लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' और लाला लाजपत राय ने पंजाब से 'वंदे मातरम्' पत्रों ने युवाओं को आजादी की लड़ाई में अधिक–से–अधिक सहयोग देने का आह्वान किया। इन पत्रों ने आजादी पाने का एक जज्बा देशवासियों में पैदा कर दिया।

8 फरवरी 1857 को दिल्ली से अजीमुल्ला खान ने हिंदी और उर्दू में एक छोटा सा समाचार पत्र निकाला पायामे आजादी कुछ समाचार पत्र की पहली पंक्तियां थी :–

'हम हैं इसके मालिक हिंदुस्ता हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।'

5. सिनेमा का योगदान :–

समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया ने फिल्मों के बारे में एक टिप्पणी की थी– 'भारत को एक करने वाली दो ही शक्तियां हैं, पहला गांधी दूसरी फिल्में'।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, सिनेमा भारत में एक बड़ी बदलाव लाया। फिल्में भारतीय समाज को स्वतंत्रता के विचारों से परिचित कराने का एक सामाजिक और राजनीतिक माध्यम बन गईं। फिल्में भारतीय समाज को विभिन्न मुद्दों से अवगत कराती और उनकी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करती रहीं। 'फिल्मों में स्वतंत्रता संग्राम के सभी पहलुओं को, लीडरों के जीवन और उनके संघर्ष, इसके साथ ही भारतीय संस्कृति, ऐतिहासिक घटनाओं, पर फिल्में बनाई जाती थीं। जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज को एक जागरूकता का अनुभव कराया।

रंग दे बसंती (1942) – भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय बनी थी और इसमें आंदोलन के विरोध में ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध किया गया था। एक महिला नेता है जो अंग्रेजों के नियंत्रण से मुक्ति के लिए लड़ती है। इस फिल्म में नेहरू जी, गांधी जी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन पर भी ध्यान दिया गया था।

भगत सिंह (1954) – इस फिल्म में भगत सिंह का बलिदान और उनके संघर्ष को दर्शाया गया है।

स्वदेश (1950) – निर्देशन राजकुमार गुप्ता जी ने फिल्म में एक संदेश दिया है कि हमें अपने देश के विकास और उन्नयन में अपनी भूमिका निभानी चाहिए और हमें अपने देश की समस्याओं का सामना करना चाहिए।

किस्मत (1943) – बालकान्त शर्मा निर्देशित इस फिल्म में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कुछ आंदोलनों को दिखाया गया।

6. आत्मकथाओं का योगदान :–

महात्मा गांधी : यद्यपि वे एक राजनीतिक नेता के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, गांधी एक विपुल लेखक भी थे, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया। उनकी आत्मकथा 'द स्टोरी ऑफ़ माय एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रूथ' (1927) और अन्य कार्यों ने कई भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

इसी कड़ी में देखते है कि नमक आंदोलन या भारत छोड़ो आंदोलन में जवाहरलाल नेहरू की भूमिका अग्रिम थी। 1936 मेरी कहानी / मेरी आत्मकथा लिखी। उनका एक ही नारा था 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मेरे पास होगा।'

निष्कर्ष :–

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पराधीन भारत को स्वतंत्रता दिलाने में और उस समय हिंदी को अपनी पहचान दिलाने में गांधी जी सहित बहुत सारे स्वतंत्रता सेनानियों के अलावा हमारे हिंदी के साहित्यकारों, देश की स्त्रियां और आम जनता का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। अलग–अलग प्रांतों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं वालों ने भी हिंदी को ही प्राथमिकता दिया। हिंदी में ही वह गुण समाहित था जो सारे भारत के लोगों को एक सूत्र में जोड़ सकता था और तभी स्वतंत्रता हासिल कर सकते थे। इस बात को पहचाना और समझा गया और हिंदी जन–जन की भाषा बन गई।

इस प्रकार हम कह सकते है की हिंदी के अन्य साहित्यिक कृतियों ने देश के विकास में अपना एक बहुमूल्य योगदान दिया है। आजादी के लिए लड़ने और प्रेरित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य किया।

हिंदी साहित्य का अध्ययन करने से हमें हमारे देश के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास को समझने में भी मदद मिलती है। इसके अलावा, हिंदी साहित्य ने भारत की संस्कृति की रक्षा और प्रचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भारतीय मूल्यों, विश्वासों और परंपराओं को दुनिया को प्रसारित करने में मदद करता है। हिंदी साहित्य के माध्यम से, हम देश की विविधता का एक झलक प्राप्त करते हैं। यह भारत के विभिन्न हिस्सों में मनाए जाने वाले विभिन्न रीति–रिवाजों, परंपराओं और त्योहारों की महत्त्वपूर्ण पकड़ है। यह भी भारतीय लोगों की संघर्ष, आकांक्षाएं और विजयों को उजागर करता है, जो देश के भूत, वर्तमान और भविष्य को समझने के लिए आवश्यक है।

हिंदी साहित्य का योगदान भारत की आजादी में अथक है ।और इसे समझना एवं उसकी रचनाओं का अध्ययन करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

संदर्भ :-

1. डॉ मीना गौतम स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी, पृष्ठ –45
2. सेवा सदन (मुंशी प्रेमचंद) – पेज नं० – 225
3. बिहार बोर्ड कक्षा आठवीं –कविता झांसी की रानी।
4. https://www.hindi-kavita.com/HindiPatrioticPoems.php
5. 'राजहंस में स्वतंत्र संग्राम' लेखक –बी० एल० पंगाड़िया पेज नं०–62
6. 'राजभाषा हिंदुस्तानी भाग –1 नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद 9, पहली आवृत्ति 1947
7. अमर उजाला अक्टूबर 2019
8. 'युगे युगे क्रांति'– विष्णु प्रभाकर, संस्करण 2016, पेज नंबर–42
9. अंतराजाल के सौजन्य से
10. डॉ मीना गौतम स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी, पृष्ठ –3

फोन नं०–8867343688

ईमेल– shankersmita05@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2023 Page No. : 150-153

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आजादी का महोत्सव : मुंशी प्रेमचंद के संदर्भ में

SNEHAL SHOWKET

DEPARTMENT OF HINDI, INSTITUTION & HKBK Degree College, B`lore

''कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।''

स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे हैं। स्वतंत्रता के महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने–अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों में जोश भरा। 19वीं शताब्दी के शुरू होते ही जब राष्ट्रवादी विचार उभरने लगे और विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य अपने आधुनिक युग में प्रवेश करने लगा तब अधिक से अधिक साहित्यकार साहित्य को देशभक्ति पूर्ण उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाने लगे। अधिकांश साहित्यकारों का यह विश्वास था कि, क्योंकि वह एक गुलाम देश के नागरिक है, तो यह उनका कर्तव्य है, कि वह इस प्रकार के साहित्य का सृजन करें जोकि, वे उनके समाज के सर्वतोन्मुखी पुनरुत्थान में अपना योगदान देते हुए राष्ट्रीय विभक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

मैं का विस्तार की चेतना का विस्तार है कुछ जीव धारियों में स्वयं के और अपने आसपास के वातावरण के तत्व का बोध होने उन्हें समझने तथा उनकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति होती है यही बात साहित्यकारों के संदर्भ में कही जा सकती है क्योंकि उनका साहित्य उनके युग का दर्शन कराता है। प्रेमचंद का जन्म, लालन–पालन आदि सब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौर में हुआ जब भारत भूमि दास्तां की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। यहां तक कि उनकी मृत्यु भी उसी काल में हुए। अंग्रेजी राज्य के अत्याचारों एवं अन्याय को उन्होंने स्वयं अनुभव किया था। ऐसे में उनका लेखन कार्य किसी भी तरह से इस युगीन यथार्थ से अलग नहीं रह सकता था। उनके ह्रदय में औपनिवेशिक शासन के प्रति गहरी कचोट थी। जिसको उन्होंने अपने लेखन द्वारा अभिव्यक्ति दी और लोगों को भी जागरूक बनाने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से किया।

हैनरी लुथोप का सर्वाधिक मान्य मत है वह अपनी पुस्तक The Art of the Novel में लिखते हैं– The epic Novel tells an ample story about a large transaction, with a throng of characters in a spacious world. It is the panorama of a whole society (1)

प्रेमचंद का युग उनकी रचनाओं में सर्वत्र झलकता है। वह चाहे उपन्यास हो, या कहानियां, कोई भी

साहित्य सत्य से अछूता नहीं है। स्वाधीनता आंदोलन से तटस्थता प्रेमचंद जैसे कर्मठ एवं निष्ठावान साहित्यकार द्वारा संभव न थी। अमृत राय कहते हैं कि– 'सक्रिय राजनीति में उसने जीवन भर कभी कोई हिस्सा नहीं लिया, कोई पद नहीं संभाला, लेकिन राजनीति का मतलब जहां पद और प्रभुत्व के लिए जोड़–तोड़ नहीं बल्कि आजादी की और इंसान की बेहतरी की लड़ाई है, चाहे अपने देश में चाहे दुनिया के किसी कोने में, उसमें शुरू से उनकी दिलचस्पी रही और गहरी दिलचस्पी रही और मरते दम तक रही। अपने जीवन में वह एक दिन के लिए भी उस तरह का 'विशुद्ध कलाकार' नहीं रहा जो इन सब बातों की ओर से वीतराग होकर, उदासीन रहकर, अपनी कला की साधना करता है। कोई उसकी यह आन, उसका यह ढंग पसंद करें या ना करें, मगर वह है। साहित्य उसके लिए देशसेवा है। लोक सेवा है। दोनों में कोई अंतर नहीं है और ना दोनों के बीच कोई खाई या पर्दा है।[2]

प्रेमचंद के आरंभिक उपन्यासों एवं 1918 में प्रकाशित सेवासदन तक में किसी न किसी रूप में औपनिवेशिक शासन के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है। सेवासदन में जीतू कृषक वाले घटनाक्रम द्वारा जिसमें धर्म के ठेकेदार को नजराना ना दिए जाने के कारण गरीब चित्तू को पीट–पीटकर मार दिया जाता है। लेखक ने अपने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना आक्रोश व्यक्त किया है। अपने आगे के उपन्यासों प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि और गोदान में तो ब्रिटिश शासन का उन्होंने खुले शब्दों में विरोध किया है।

प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर गांधी जी के विचारों का प्रभाव देखने के लिए मिलता है। प्रेमचंद ने 15 फरवरी 1921 को गांधीवाद के प्रभाव में अपनी 20 साल की पुरानी नौकरी को तिलांजलि दे दी और खुलकर लेखन के क्षेत्र में उतरे। अमृतराय ने अपनी किताब" कलम का सिपाही" में लिखा है–" प्रेमचंद के लिए यह कोरे नीति वाक्य नहीं है, उनकी सच्चाई उनके भीतर गहरे बैठते–बैठते उनकी अपनी जीवन दृष्टि, अपनी आस्था बन गई है। तभी वह उनके साहित्य में निरंतर रक्त की भांति प्रवाहित है। शंखनाद, पंच परमेश्वर और महातीर्थ जैसी कहानियां, जो इसी दौर में लिखी गयी और जिनके पीछे यही जीवन दृष्टि काम कर रही है, मन की गहरी निष्ठा से ही निकल सकती है।[3]

रंगभूमि उपन्यास वस्तुतः गांधी की विचारधारा के प्रति समर्पित है। रंगभूमि के लेखन काल में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाकर शक्ति संपन्न ब्रिटिश राज्य को ललकारा था। विदेशी शोषण से आमजन की दुर्दशा और शोषण के कई आयाम से भारत की संपत्ति को समुद्र पार, गांव की संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव हो रहा था। रंगभूमि का लेखन एक प्रकार से ब्रिटिश शासन के औद्योगिकरण की नीति के विरुद्ध है। वस्तुतः रंगभूमि के सूरदास विराट कृति जिसके कथानक के कई आयाम हैं। रंगभूमि का महानायक एक अंधा भिखारी सूरदास है। वह भारतीय संस्कृति का प्रतीक पुरुष बनकर इस उपन्यास में उभरता है। उसे औद्योगिकरण के फलस्वरुप व्यक्तियों के स्वास्थ्य, शोषण तथा चारित्रिक पतन की चिंता तो है। पशुओं के भूखों मरने की भी चिंता है। प्रेमचंद ने इस सच्चाई को समझकर अपने आगे के उपन्यास रंगभूमि में इसका पूर्ण खुलासा किया। अंधा भिखारी सूरदास शासक व्यवस्था के विरुद्ध लड़ता है। अंत में मरते–मरते कहता है– "तुम जीते मैं हारा यह बाजी तुम्हारी हाथ रही मुझसे खेलते नहीं बनता तू मंजे हुए खिलाड़ी हो, दम नहीं उखड़ता, खिलाड़ियों को मिलाकर खेलते हो, और तुम्हारा उत्साह भी खूब है। हमारा दम उठता है।..... तुम खेलने में निपुण हो, हम अनाड़ी है। बस इतना फर्क है। तालियाँ क्यों बजाते हो, यह जीतने वालों का धर्म नहीं?..."[4]

'सोजे वतन' कहानी संग्रह देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत कहानी संग्रह था। जिसके चलते इन्हें बहुत मुश्किलों का भी सामना करना पड़ा। अंततः इस कहानी संग्रह को अंग्रेज सरकार द्वारा जप्त कर लिया गया। अन्य कहानियों में जैसे रानी सारन्ध्रा, आल्हा, राजघाट, बांका जमीदार, विक्रमादित्य का तेगा आदि कहानियों में भारत के पहले के राजपुरुषों के आत्म बलिदान, वीरता, त्याग, सत्य, निष्ठा आदि का बखान किया गया है। प्रकार अंतर से यह कहानियां भी देश प्रेम का ही गुणगान करते हुए भारत की जनता को उनके जैसे बनने की प्रेरणा देती है। उनकी कहानी "शेर मखमूर" मे मुंशी जी कहते हैं– "बाहर का राजा हमला करके किसी देश को जीत लेता है पराजित देश का राजा जब मरने लगता है तो अपना ताज और अपनी तलवार अपने बेटे को शोक जाता है और वसीयत करता है– यह मुल्क तुम्हारा है, यह ताज तुम्हारा है, यह रिआया तुम्हारी है। तुम इन्हें अपने कब्जे में लाने की मरते दम तक कोशिश करते रहना और अगर तुम्हारी तमाम कोशिशें नाकाम हो जाये और तुम्हें भी यही बेसरोससामानी की मौत नसीब हो तो यही वसीयत तुम अपने बेटे से कर देना और यह ताज जो उसकी अमानत होगी, उस उसके सुपुर्द कर देना। 'जो कि एक रूप से भारतीय जनता के लिए उपदेश था।'[5]

उनका उपन्यास प्रेमाश्रम 1922 की रचना है। जिसमें इन्होंने औपनिवेशिक शासन की घटनाओं का वर्णन शासन के कलपुर्जे जमीदार वर्ग के माध्यम से किए हैं। गांव में जमीदारों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के चलते चारों ओर फैली तबाही एवं बर्बादी का यथार्थ चित्रण किया है। जोकि कालांतर से ब्रिटिश शासन के चलते ही हैं। कृषि एवं कृषक समाज की समस्याओं के समाधान के रूप में उन्होंने जमीदार माया शंकर द्वारा अपने सभी अधिकारों का त्याग कराकर जमीदारी प्रथा के उन्मूलन को प्रस्तुत किया है। यदि सूक्ष्मता से समझा जाए तो जमीदारी प्रथा के उन्मूलन की यह मांग प्रकारान्तर से औपनिवेशिक शासन के उन्मूलन की मांग थी। चूँकि यह सभी चाहे वह जमीदार हो, पुलिस वाले हो, या हाकिम वर्ग के लोग हो ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के हाथ की कठपुतलियां थी। जिस समय प्रेमाश्रम मसौदे को रूप रंग देने में लगे थे। उन्हीं दिनों उन्होंने तत्कालीन पत्र 'स्वदेश" में कृषकों के पक्ष में एक सबल लेख लिखा। उसका कुछ अंश यहां उद्धत होता है" हमारे कृषक अब भी नीच समझे जाते हैं उनसे अब भी बेगार ली जाती है उन पर नाना प्रकार के अत्याचार किए जाते हैं स्वार्थन्ध जमींदारगण उन्हें सताने और कुचलने में भी संकोच नहीं करते मूर्खता का वही पुराना साम्राज्य है हमारी जनता जो प्रधानताः देहातों में रहती है। उसे जगाना, उसे अपनाना, उसकी अपेक्षा ना करके उसके प्रति प्रेम और संवेदना के भाव प्रकट करना प्रत्येक स्वदेश अभिमानी का प्रधान कर्तव्य है"।[5]

मार्च 1930 में "हंस" नामक मासिक पत्र का प्रकाशन एवं संपादन प्रारंभ किया। हंस के प्रकाशन के समय प्रेमचंद ने लिखा था– "हंस का जन्म उस शुभ अवसर पर हो रहा है जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है। स्वाधीनता नाम ही एक वृत्ति है और इस वृत्ति का जागना ही स्वाधीनता हो जाना है हम भी मिट्टी का दीपक जलाकर खड़े होते हैं। हमारी चेष्टा होगी स्वाधीनता का संघर्ष शीघ्र सफल हो मानसरोवर की शांति छोड़कर आजादी की जंग में योगदान देने आया है। हंस की लगन कच्ची न होगी हमें संघ शक्ति पर विश्वास है साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय देगा, जो परंपरा से उसे प्रदान कर दिए गए हैं।"[6]

गबन का प्रकाशन वर्ष 1931 में है इससे ज्ञात होता है कि इसमें स्वाधीनता आंदोलन अपनी गति से कहीं स्त्रोत पर आगे बढ़ रहा था जहां इसका संघर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति से था । तो दूसरी और स्वाधीनता प्राप्ति के बाद

की व्यवस्था कैसे होगी इस पर था। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन में महिला वर्ग की भी सक्रिय भागीदारी को महत्वपूर्ण माना है। इसी के चलते हुए गबन उपन्यास में जालपा को घर की चारदीवारी के बाहर निकालते हैं। प्रेमचंद का मानना था कि, देशहित वह महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है।

उपसंहार :–

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यदि यह कहा जाए कि प्रेमचंद का संपूर्ण उपन्यास साहित्य औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध में खड़ा है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

उपन्यासों में कोई भी वर्गा स्वतंत्रता संग्राम से अछूता न था। देश प्रेम, स्वतंत्रता, आत्मसम्मान, आत्मगौरव और सामाजिक आदर्श का निर्माण करना यह उनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य था।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. MHD - 14 हिंदी उपन्यास–2, Neeraj Publication 2008, Pg. 42
2. कलम का सिपाही, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद 1962 Pg. 116
3. कलम का सिपाही प्रकाशन, इलाहाबाद 1962, Pg. 157
4. MHD - 14 हिंदी उपन्यास–2 Neeraj Publication 2008, Pg. 25
5. हिंदी उपन्यास प्रेमचंद का विशेष अध्ययन, फरवरी 2008 लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, Pg. 23
6. हिंदी उपन्यास प्रेमचंद का विशेष अध्ययन, फरवरी 2008, लक्ष्मी प्रिंट इंडिया, Pg. 21

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गीना देवी शोध संस्थान

द्वारा श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रकाशित

साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 4.533

ISSN : 2321-8037

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

विशेष :-

आलेख भेजने की अन्तिम तिथि :- प्रत्येक माह की 13 तारीख

सहयोग राशि भेजने की अंतिम तिथि :- प्रत्येक माह की 20 तारीख

निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त पेपर पर विचार नहीं किया जाएगा।

आपको अगले अंक के लिए पुनः सारी प्रक्रिया करनी होगी।

शोध आलेख भेजने के लिए मेल आईडी : grngobwn@gmail.com

नियम एवं शर्तें :

1. शोध आलेख की सीमा 1500-2000 शब्दों की है। पेपर के टाइटल के नीचे अपना नाम, पता, मोबाईल, मेल आईडी अवश्य लिखें इसके अभाव में आपका पेपर स्वीकार नहीं किया जाएगा।
2. साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान से सम्बन्धित किसी भी विषय पर शोध आलेख भेज सकते हैं। शोध आलेख कृतिदेव 10, मंगल फॉन्ट में एमएस वर्ड फाइल में टाईप करवाकर ही भेजें। पीडीएफ या हाथ से लिखा पेपर स्वीकार नहीं किया जाएगा।
3. शोध आलेख केवल अपनी ईमेल से ही भेजें क्योंकि हम तमाम प्रकार की जानकारी जिस मेल से हमे पेपर प्राप्त होता है उसी पर देते हैं व्यक्तिगत फोन करके नहीं।
4. एक से अधिक बार भेजे गए शोध आलेख/अशुद्ध आलेख स्वीकृत नहीं होंगे। सम्पादक मंडल का निर्णय सर्वमान्य एवं अन्तिम होगा।
5. अशुद्धियों, प्लेगरिज़्म एवं मौलिकता के लिए आप स्वयं जिम्मेदार होंगे। आलेख प्रूफ रीडिंग के बाद भेजें, प्रकाशन के बाद किसी भी प्रकार का सुधार संभव नहीं होगा।
6. पत्रिका की हार्ड/प्रिंट कॉपी+ऑनलाईन के लिए प्रकाशन/सहयोग राशि 1300/- देनी होगी। पीडीएफ+ऑनलाईन के लिए सहयोग राशि 600/- है।

सेमिनार/संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध आलेखों को विशेषांक रूप में प्रकाशित करवाने के इच्छुक व्यक्ति/संस्थान सम्पर्क करें-8708822674

प्रधान संपादक एवं सचिव :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

संपादक एवं निर्देशक :
डॉ. रेखा सोनी

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115